॥ श्री वीतरागाय नमः ॥



जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर पूज्य-श्री-घासीलालव्रतिविरचितया-
अर्थबोधिन्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृतं

नवमाङ्गम्

अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग – सूत्रम्.

मङ्गलाचरणम्.

(मालिनीछन्दः)

गुणनिकरनिधानं, कल्पवृक्षोपमानं,
नमितसुरसमाजं, सिद्धिसौधाधिराजम् ।
कलिकलिलविनाशं, भव्यबोधप्रकाशं,
शिवसुखदमुनीन्द्रं, नौमि वीरं जिनेन्द्रम् ॥१॥

सुरगण करते हैं वन्दना जिन जिनोंकी
सकल भुवन प्यारे वन्द्य वे हैं हमारे ॥
हृदयतिमिरमालानाशकारी सदा जो
उन जिन चरणोंमें बन्दनाएं विराजे ॥१॥

हिन्दी-भाषानुवाद.

(१) जो अनेक दिव्य गुण समूहकी खान हैं, जो कल्प वृक्षके समान सकल मनोरथको पूर्ण करनेवाले हैं, जो देवताओंके वन्दनीय हैं, जो मोक्षरूपी ऊंचे महल पर सुशोभित हैं, जो अनेक भवोंके समस्त पापो एवं दुःखोंका विनाश करनेवाले हैं, जो भव्य-जनोंको अपने ज्ञानरूपी दिव्यप्रकाशसे सन्मार्ग प्रदर्शित करनेवाले हैं, और जो श्रेष्ठ कल्याणकारी सुख को देनेवाले हैं, ऐसे चरमतीर्थ-कर जिनेन्द्र भगवान् महावीर स्वामीको नमस्कार करता हूँ ॥१॥

ગુજરાતી ભાષાનુવાદ.

(૧) જે અનેક ગુણ સમૂહની ખાણ છે, જે કલ્પવૃક્ષ સમાન સકળ મનોરથને પૂર્ણ કરવાવાળા છે, જે દેવતાઓને વન્દનીય છે તેમજ જે મોક્ષરૂપી મહેલ પર સુશોભિત છે, વળી અનેકભવના સમસ્ત પાપો એવં દુ ખોનો વિનાશ કરવાવાળા છે, જે ભવ્ય જીવોને પોતાના જ્ઞાનરૂપી દિવ્ય પ્રકાશથી સન્માર્ગ પ્રદર્શિત કરવાવાળા છે, અને જે શ્રેષ્ઠ કલ્યાણકારી સુખ દેવાવાળા મુનિયોના નાથ છે એવા ચરમ તીર્થંકર જિનેન્દ્ર ભગવાન મહાવીરસ્વામીને નમસ્કાર કરું છુ. (૧)

यतनार्थं मुखवस्त्रीं, बध्नाति सदोरकां मुखे नित्यम् ।
यो मुक्तरागदोषो, वन्दे तं गुरुवरं शुद्धम् ॥२॥
अनुत्तरोपपातीय,-सूत्रटीकाऽर्थबोधिनी ।
भव्यानां सुखबोधाय, घासीलालेन तन्यते ॥३॥

धरते सदोरकवस्त्रिका मुख पर अहिंसा के लिये ।
करुणासुधामय चित्त जो धरते सदा सबके लिये ।
रागदोषविहीन गुरुवर-शुद्ध-पदपाथोजमें
मकरन्दपायिमिलिन्द तुल्य प्रणाम राजे ओजमें ॥२॥
अनुत्तरोपपातिकसूत्रकी टीका शुभार्थविबोधिनी
अल्पज्ञ जनताके लिये सुगमार्थ भावविकाशिनी ॥
करते मुनिव्रत सक्त "घासीलाल" यह कृति यत्नसे
उपकृत कृतज्ञ सुबुद्धिजन होंगे सदा इस रत्नसे ॥३॥

इहानुत्तरोपपातिकसूत्रे भगवता यस्य यस्य विषयस्य वर्णनमकारि तस्य तस्य नाम संक्षेपतस्तावन्निर्दिशामः ।

एतद्विषये नन्दिसूत्रे यथा-राजगृहादीनि नगराणि, तत्र तत्रावस्थितानि

(२) जो जीवोंकी रक्षा अर्थात् यतनाकेलिये मुखपर सदैव डोरे सहित मुखवस्त्रिका बांधते हैं, तथा जो रागद्वेषसे रहित हैं, ऐसे निर्मल आचारको पालनेवाले सुगुरुको मैं नमस्कार करता हूँ ॥२॥

(३) मैं "घासीलाल" मुनि भव्यजीवोंके सुखपूर्वक ज्ञान प्राप्ति के लिये श्री अनुत्तरोपपातिकसूत्रकी अर्थबोधिनी टीका बनाता हूँ ॥३॥

उपरोक्त श्लोकोंमें मङ्गलाचरण तथा विषय, सम्बन्ध, प्रयोजन और अधिकार ये मुख्य पांच बातें बताई हैं, जो कि प्रत्येक ग्रन्थमें आवश्यक हैं ।

(२) જે જીવોની રક્ષા અર્થાત્ યતનામાટે દોરા સહિત સદા મુખવસ્ત્રિકા મુખ પર બાંધે છે, તથા જે રાગ દ્વેષથી રહિત છે એવા નિર્મળ આચાર પાળવા વાળા સુગુરુને હું નમસ્કાર કરૂ છુ. (૨)

(૩) "હું ઘાસીલાલ" મુનિ ભવ્ય જીવોને સુખપૂર્વક જ્ઞાન-પ્રાપ્તિને માટે શ્રી 'અનુત્તરોપપાતિક સૂત્ર'ની 'અર્થબોધિની' ટીકા બનાવું છુ (૩)

ઉપરોકત શ્લોકોમાં મંગલાચરણ તથા વિષય, સમ્બન્ધ, પ્રયોજન અને અધિકારી, એ મુખ્ય પાચ વાતો બતાવી છે. જો કે પ્રત્યેક ગ્રંથમાં તે આવશ્યક છે.

उद्यानानि, यक्षभवनानि, वनखण्डानि, समवसरणानि, राजानः, मातापितरौ, धर्माचार्याः, धर्मकथाः, इहलोकपरलोकीया ऋद्धिविशेषाः, भोगपरित्यागाः, प्रव्रज्याः, श्रुतपरिग्रहाः, तपउपधानानि, प्रतिज्ञाः, उपसर्गाः, संलेखनाः, भक्तप्रत्याख्यानानि, पादपोपगमनानि, अनुत्तरोपपातः, सुकुलजन्म, बोधिलाभः, अन्तक्रिया चेत्यादि। इह नवमाङ्गे एकः श्रुतस्कन्धः, त्रयो वर्गाः. (अध्ययनसमूहो वर्गः) तत्र प्रथमे वर्गे दशाध्ययनानि। द्वितीये त्रयोदशाध्ययनानि। तृतीये

इस अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्रमें भगवान्ने जिस जिस विषयका वर्णन किया है उस उसका संक्षेपसे नाम निर्देश करते हैं—

यह विषय, नन्दिसूत्रमें इस प्रकार है—

राजगृह आदि नगर, वहाँ वहाँ अवस्थित उद्यान (बगीचे), यक्षायतन, वनखण्ड, समवसरण, राजाओंके और माता पिताओंके नाम, धर्माचार्य, धर्मकथा, ऐहलौकिक तथा पारलौकिक वैभव, भोगपरित्याग, दीक्षा, श्रुतपरिग्रह (श्रुतग्रहण), तप, प्रतिज्ञा, अभिग्रह, उपसर्ग, संलेखना (संथारेका प्रयोग), आहारका त्याग, विना शरीर को कम्पित किये वृक्षादिके समान एक स्थान पर स्थित रहने रूप पादपोपगमन संथारा, अनुत्तर विमानमें उत्पन्न होना, सुकुल में फिर जन्म लेना, सम्यक्त्व प्राप्त होना और मोक्ष प्राप्त करना आदि।

इस नवमाङ्ग – अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गमें एक श्रुतस्कन्ध है। तीन वर्ग हैं। अध्ययनोंके समूहको वर्ग कहते हैं। प्रथम वर्ग में

આ 'અનુત્તરોપપાતિક દશાઙ્ગ સૂત્ર'મા, ભગવાને જે જે વિષયનુ વર્ણન કર્યું છે, તે તેનો સક્ષેપથી નામ નિર્દેશ કરે છે—

આ વિષય નન્દિસૂત્રમા આ પ્રમાણે કહ્યું છે.—

રાજગૃહ આદિ નગર, ત્યાં રહેલા ઉદ્યાન (બગીચા), યક્ષાયતન, વનખડ, સમવસરણ, રાજાઓના અને માતાપિતાઓના નામ, ધર્માચાર્ય, ધર્મકથા, આ લોકસબંધી તથા પરલોકસબધી વૈભવ ભોગપરિત્યાગ, દીક્ષા, શ્રુતપરિગ્રહ (શ્રુતગ્રહણ), તપ, ઉપધાન, પ્રતિજ્ઞા–અભિગ્રહ, ઉપસર્ગ સલેખના (સથારાનો પ્રયોગ) આહારનો ત્યાગ, શરીરને હલાવ્યા વિના વૃક્ષાદિની માફક એક સ્થાન પર સ્થિર રહેવારૂપ પાદપોપગમન સંથારો અનુત્તર વિમાનમા ઉત્પન્ન થવુ, ફરી સુકુળમા જન્મ લેવો, સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ થવી, અને મોક્ષ મેળવવો આદી

આ નવમાગ અનુત્તરોપપાતિક દશાંગમા એક શ્રુતસ્કધ છે. ત્રણ વર્ગ છે. અધ્યયનોના સમૂહને વર્ગ કહે છે, પ્રથમ વર્ગમા દશ, બીજા વર્ગમા તેર, અને

दशाध्ययनानि। उद्देशनकालास्त्रयः, समुद्देशनकाला अपि त्रयः। सहस्राष्टाधिक-षट्चत्वारिंशल्लक्ष-४६०८००० प्रमाणानि पदानि।

समवायाङ्गसूत्रे-ऽप्यनुत्तरोपपातिकदशाङ्गविषयाणामेवमेव क्रमो लभ्यते।

तत्र समवसरणमुपक्रम्य किंचिद् वर्ण्यते-सम्यग्=एकीभावेनावसरणम्=एकत्र गमनं-संमिलनं देवमनुष्यादीनां समवसरणम्। यद्वा-समवसरन्ति=अवतरन्ति धर्मश्रवणार्थं देवादयो यत्र, तत् समवसरणम्।

यत्र क्षेत्रे ग्रामे नगरे वा समवसरणं भवति, तत्र भगवदागमनात् प्राग्

दश, द्वितीय वर्ग में तेरह, और तृतीयमें दश अध्ययन हैं। उद्देशन काल तीन हैं जिस स्कन्धमें जितने वर्ग होते हैं उसके उतनेही उद्देशन-काल होते हैं। समुद्देशन-काल भी तीन हैं। समस्त छियालीस लाख आठ हजार-४६०८००० पद प्रमाण है।

समवायाङ्ग सूत्रमें भी अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग के विषयोंका यही क्रम मिलता है।

समवसरण शब्दकी व्युत्पत्ति निम्न प्रकार है-'सम्यक्=एकीभावेनावसरणम्=एकत्र गमनं-संमिलनं देवमनुष्यादीनां-समवसरणम्'। अर्थात् जहाँ सम्मिलित रूपसे एक ही उद्देश्यसे देवता, मनुष्य आदि एकत्रित होते हों उसे 'समवसरण' कहते हैं। अथवा "समवसरन्ति=अवतरन्ति धर्मश्रवणार्थं देवादयो यत्र तत्समवसरणम्"-अर्थात् जहाँ धर्म-कथाको सुननेके लिये देवता आदि आते हों उसे समवसरण कहते हैं।

जिस स्थान (क्षेत्र), ग्राम और नगरमें समवसरण होता है

त्रीजामां दश अध्ययन छे, उद्देशन-काळ त्रण छे. जे स्कधमा जेटला वर्ग होय छे तेना तेटलाज उद्देशन-काळ होय छे, समुद्देशन-काळ पण त्रण छे बधा मळीने छेताळीस लाख आठ हजार, ४६०८००० पद प्रमाण छे

समवायाग सूत्रमा पण अनुत्तरोपपातिक दशागना विषयोनो आज क्रम मळे छे. 'समवसरण' शब्दनी व्युत्पत्ति नीचे प्रमाणे छे:-

'सम्यक्=एकीभावेनावसरणम्=एकत्र गमनं-संमिलनं देवमनुष्यादीनां समवसरणम्-' अर्थात् ज्या सम्मिलित रूपथी एकज उद्देशथी देवता-मनुष्य आदि एकत्रित थाय छे तेने समवसरण कहे छे.

अथवा 'समवसरन्ति=अवतरन्ति धर्मश्रवणार्थं देवादयो यत्र तत्समवसरणम्' अर्थात् ज्यां धर्मकथा साभळवा माटे देवता आदि आवे छे, तेने समवसरण कहे छे.

आभियोग्या देवाः समागत्याचित्तान्येववायु-जल-पुष्पाणि विकुर्वते, वैक्रियवायुजलपुष्पादीनां सचित्तत्वाभावात्। केचित् तत्रत्यरेणुव्यपनोदनाय वायुं विकुर्वते। केचिद् भाविरेणुपशान्त्यर्थमुदकं विकुर्वते। केचित् पुष्पवृष्टिं च परिषदुपवेशनार्थं तथा विकुर्वते, यथा पुष्पपुञ्जः परिषदो जानुदघ्नो भवति।

यदि सचित्तजलपुष्पादिवृष्टिर्देवकृता समवसरणे भवेत् तर्हि सचित्तजलार्द्रायां भूमौ सचित्तपुष्पसमाच्छादिते स्थाने च साधूनां साध्वीनां प्रतिमाधारिणां श्रावकाणां तथा श्राविकाणां च समागमनासंभवः। परिषदि च मुख्याः

वहाँ भगवान् के आगमन के पूर्व ही आभियोगिक देवता (सेवक देवता) आकर के अचित्त वायु, जल, तथा पुष्प आदि वैक्रिय रूपसे उत्पन्न करते हैं। वैक्रिय-शक्तिके द्वारा उत्पन्न किये हुए वायु, जल तथा पुष्प सचित्त नहीं होते हैं। कोई देव वहाँ की धूल (कचरा आदि) दूर करने के लिये वायुकी विकुर्वणा करता है। कोई देवता धूलिको उपशान्त करने के लिये जलवृष्टि करता है। कोई परिषद्के बैठने के लिये पुष्पवृष्टि करता है जिससे-परिषद्में बैठे हुए श्रोताओं के नीचे घुटनों तक फूलोंका ढेर हो जाता है।

यदि देवताओं के द्वारा निर्मित समवसरणमें सचित्त जल-पुष्पादि की वृष्टि हो तो सचित्त जलसे भीगी हुई पृथ्वी तथा सचित्त फूलोंसे आच्छादित स्थान पर साधु साध्वियोंका, तथा जिन्होंने व्रतों को धारण कर रक्खा है एसे प्रतिज्ञाधारी श्रावक-श्राविकाओं का

જે સ્થાન (ક્ષેત્ર), ગામ અને નગરમા સમવસરણ થાય છે, ત્યા ભગવાનના આગમન પહેલાજ આભિયોગિક દેવતા (સેવક દેવતા) આવીને અચિત્ત વાયુ, જળ તથા પુષ્પ આદિ વૈક્રિયરૂપથી ઉત્પન્ન કરે છે, વૈક્રિય-શકિતદ્વારા ઉત્પન્ન કરેલ પવન, પાણી તથા ફૂલ સચેત હોતા નથી

કોઈ દેવ ત્યાંની ધૂળ (કચરો આદિ) દૂર કરવા માટે વાયુની વિકુર્વણા કરે છે, કોઇ દેવતા ધૂળને ઉપશાન્ત કરવા (બેસાડી દેવા) જળવૃષ્ટિ કરે છે, કોઇ પરિષદને બેસવા માટે પુષ્પવૃષ્ટિ કરે છે જેથી પરિષદમા બેઠેલ શ્રોતાઓની નીચે ઢીંચણ સુધી ફુલોનો ઢગ થઈ જાય છે

કદાચ જો દેવતાઓદ્વારા નિર્મિત (નિર્માણ કરાયેલ-રચેલ) સમવસરણમા સચેત પાણી-પુષ્પાદિની વૃષ્ટિ થાય તો સચેત પાણીથી ભીની થએલી પૃથ્વી તથા સચેત ફુલોથી આચ્છાદિત સ્થાન પર સાધુ-સાધ્વિયો તથા જેઓએ વ્રતો અંગીકાર કરી રાખ્યાં છે એવા પ્રતિજ્ઞાધારી શ્રાવક-શ્રાવિકાઓનુ આગમન સર્વથા અસભવ છે.

साध्व्यादयः, तस्मात् देवकृता सचित्तजलपुष्पादीना वृष्टिर्न भवतीति निश्चीयते।

ननु-देवाः स्वस्वरूपं विविधरूपं विकुर्वन्ति, तच्च सचित्त, तर्हि समवसरणार्थं जलपुष्पादीनां वृष्टिः सचित्तानां कथं न स्यात्? उच्यते-देवानां स्वाकारसदृशे पराकारसदृशे वा वैक्रिये स्वरूपे स्वात्मप्रदेशाः सन्तु तावत्, तत्र तेपामात्मप्रदेशसत्ताया अनुपलभ्यमानत्वाद् वैक्रियशक्तिसमुद्भाविते जलपुष्पादावेकेन्द्रियादयो जीवाः सन्तीति न लभ्यते शास्त्रे, ।

यदि देवाः सरित्समुद्रादिभ्यो जलं, लतावृक्षेभ्यश्च पुष्पाणि समानीय वर्षन्तीत्यागमे प्रतिबोधितं भवेत्, तर्हि सचित्तजलपुष्पानुमानं संभवति ।

आगमन सर्वथा असम्भव है। परिषद्में मुख्य अङ्ग साधु ही हैं, अतः देवताओं के द्वारा समवसरण में सचित्त जल तथा सचित्त फूलों आदिकी वर्षा नहीं होती है, परन्तु अचित्त की होती है, एसा निश्चित है।

अब यहाँ यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि देवता जो अपने स्वरूप को हाथी, मृग, सर्प आदि नाना प्रकारके रूपों में अपनी वैक्रिय शक्तिके द्वारा परिणत करते है, वे विविधरूप तो सचित्त होते हैं, फिर समवसरण के लिये की हुई वृष्टि सचित्त क्यों नहीं? इसका प्रत्युत्तर यही है कि देवताओं के अपने आकार के सदृश अथवा दूसरे के आकार के सदृश वैक्रिय शरीरमें अपने आत्मप्रदेश होते हैं, अतः वे सचित्त हैं। किन्तु उन फूलोंमें तथा जलमें उनके आत्मप्रदेश नहीं होनेसे वे अचित्त हैं। वैक्रिय-शक्ति के द्वारा उत्पन्न वायु, जल तथा फूलोंमें एकेन्द्रिय आदि जीव होते हैं-ऐसा शास्त्रोमें कोई प्रमाण नहीं मिलता।

પરિષદમાં મુખ્ય અગ તો સાધુજ છે એટલે દેવતાઓદ્વારા સમવસરણમાં સચેત પાણી તથા સચેત ફુલ આદિની વર્ષા નથી હોતી, પરંતુ અચેતજ હોય છે એવું નિશ્ચિત થાય છે.

હવે અહીં એ પ્રશ્ન ઉત્પન્ન થાય છે કે, દેવતા જો પોતાના સ્વરૂપને હાથી, મૃગ, સર્પ આદિ નાના પ્રકારના રૂપોમા પોતાની વૈક્રિય શકિતદ્વારા પરિણત કરે છે, તે વિવિધ રૂપ તો સચેત હોય છે તો સમવસરણને માટે કરેલ વૃષ્ટિ સચેત કેમ નહીં? તેનો પ્રત્યુત્તર એજ છે કેઃ-દેવતાઓને પોતાના આકાર જેવા અથવા બીજાના આકાર જેવા વૈક્રિય શરીરમાં પોતાના આત્મ-પ્રદેશ હોય છે એટલે તે સચેત છે પણ તે ફુલોમા તથા પાણીમાં તેના આત્મપ્રદેશ ન હોવાથી તે અચેત છે વૈક્રિય-શકિતદ્વારા ઉત્પન્ન થએલ વાયુ, જળ તથા ફુલોમાં એકેન્દ્રિય આદિ જીવ હોય છે એ વિષયનુ શાસ્ત્રોમા કોઈ પ્રમાણુ મળતુ નથી

किंच-वीतरागस्य सावद्यसपर्या शास्त्रे प्रतिषिद्धा । षट्कायजीवारम्भेण या सपर्या भवति सा सावद्या । अत एव सावद्यसपर्या वीतरागस्य न कल्पते, तस्याः कर्मबन्धहेतुत्वात् । सावद्यसपर्या संसारपरिभ्रमणाय जायते ।

अत्रैव कार्यकारणभावपरम्परा – सावद्यसपर्यया षड्जीवनिकायारम्भः, षड्जीवनिकायारम्भेण हिंसा, हिंसया चिक्कणकर्मबन्धः, चिक्कणकर्मबन्धेन नरक-निगोदाद्यनन्तदुःखसंभृत-चतुर्गतिरूपानन्तसंसारपरिभ्रमणम् ।

अतो वीतरागस्य सावद्यसपर्या शास्त्रे प्रतिषिद्धा । तथा चोक्तम्-उपासकदशाङ्गसूत्रस्यागारधर्मसंजीवन्याम्—

जो सावज्जसपज्जं, कुणइ महाचाइवीयरागस्स ।
सो भम्मइ संसारे, दीहं कालं जहा जाओ ॥१॥

छाया-यः सावद्यसपर्यां करोति, महात्यागिवीतरागस्य ।
स भ्राम्यति संसारे, दीर्घं कालं यथा जातः ॥१॥

यदि देवता नदी समुद्र आदि से जल, लता-वृक्षादि से फूल लाकर वर्षा करते हैं-एसा आगममें लिखा हुआ हो तो सचित्त जल पुष्प आदि का अनुमान सम्भव हो सकता है, अन्यथा नहीं ।

और भी-जिनेश्वर वीतराग भगवानकी सावद्य पूजा शास्त्रों में निषिद्ध है । छः कायों के समारम्भ से जो पूजा होती है वह सावद्य कहलाती है । अतः भव्य जीवों को वीतरागकी सावद्यपूजा करना नहीं कल्पता है, क्योंकि वह कर्मबन्धका हेतु है । सावद्यपूजा संसार-परिभ्रमण का कारण है ।

यहाँ कार्यकारणभाव इस प्रकार है-

सावद्य पूजा छः जीवनिकाय के आरम्भ से होती है, छः जीव-

જો દેવતા નદી સમુદ્રો આદિથી પાણી, લતા, વૃક્ષ આદિથી ફુલ લાવીને વર્ષા કરે છે, એવું આગમમા કયાંઇ લખ્યુ હોય તો તે સચેત પાણી પુષ્પાદિનું અનુમાન સભવિત હોઈ શકે, અન્યથા નહીં

વળી પણ-જિનેશ્વર વીતરાગ ભગવાનની સાવદ્ય પૂજા શાસ્ત્રોમાં નિષિદ્ધ છે. છકાયોના સમારંભથી જે પૂજા થાય છે તે સાવદ્ય કહેવાય છે માટે ભવ્ય જીવોને વીતરાગની સાવદ્ય પૂજા કરવી કલ્પતી નથી. કેમકે તે કર્મ-બન્ધનો હેતુ છે અર્થાત્ સાવદ્ય-પૂજા સંસાર-પરિભ્રમણનું કારણ છે અહિં કાર્ય કારણ ભાવ આ પ્રમાણે છે—

સાવદ્ય પૂજા છકાયના આરંભથી થાય છે, અને છકાયના આરંભથી હિંસા

सावज्जसपज्जाए, समुब्भवइ जीवहिंसणारंभो ।
तम्हा वज्झइ कम्मं, तेण य संसारचक्कसंपाओ ॥२॥
छाया-सावद्यसपर्यया समुद्भवति जीवहिंसनारम्भः ।
तस्माद् बध्यते कर्म तेन च संसारचक्रसंपातः ॥२॥ इति ।

स्थानाङ्गसूत्रे च – (५ स्था. १ उ.)

पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइं गच्छन्ति, तं जहा-पाणाइवाएणं, मुसावाएणं, अदिन्नादाणेणं, मेहुणेणं, परिग्गहेणं ।

छाया-पञ्चभिः स्थानैः जीवा दुर्गतिं गच्छन्ति तद्यथा-प्राणातिपातेन, मृषावादेन, अदत्तदानेन, मैथुनेन, परिग्रहेण । इति ।

निकाय के आरम्भ से हिंसा होती है। हिंसा से चिकने कर्मों का बन्धन होता है । चिकने कर्मों के बन्धन से नरक निगोद आदि अनन्त दुःखों से युक्त चतुर्गतिरूप संसारमें परिभ्रमण करना पडता है। इस लिये जिनेश्वर वीतराग भगवान् की सावद्य पूजा शास्त्रों में निषिद्ध है। जैसे कि उपासकदशाङ्ग सूत्र की अगारधर्मसंजीवनी नामक टीका में कहा है-"जो महात्यागी जिनेश्वर वीतरागदेवकी सावद्य पूजा करता है वह इस चतुर्गति रूप संसारमें अनेक प्रकार के जन्म-मरण करता हुआ दीर्घकाल तक परिभ्रमण करता है" ।

सावद्य पूजा से छः कायका आरम्भ होता है। आरम्भ से कर्मबन्ध होता है, कर्मबन्धसे जीव को इस संसाररूपी चक्र में गिरना पडता है। भगवानने इसी बात को स्थानाङ्गसूत्र (५ स्था. १ उ.) में कहा है—

થાય છે, હિંસાથી ચિકણા કર્મો બંધાય છે, અને ચિકણા કર્મોના બન્ધથી નરક-નિગોદ આદિ અનન્ત દુઃખોથી યુક્ત ચતુર્ગતિરૂપ સંસારમાં પરિભ્રમણ કરવું પડે છે માટે જિનેશ્વર વીતરાગ ભગવાનની સાવદ્ય પૂજાનો શાસ્ત્રોમાં નિષેધ છે જેમકે ઉપાશકદશાંગની "અગારધર્મસંજીવની" નામની ટીકામા કહ્યુ છે:-"જે મહાત્યાગી જિનેશ્વર વીતરાગ દેવની સાવદ્ય-પૂજા કરે છે તે આ ચતુર્ગતિરૂપ સંસારમાં અનેક પ્રકારના જન્મ મરણ કરતાં કરતાં દીર્ઘકાળ સુધી પરિભ્રમણ કરે છે."

સાવદ્ય પૂજાથી છકાયનો આરંભ થાય છે આરંભથી કર્મ-બન્ધ થાય છે. કર્મ-બંધથી જીવને આ સંસાર રૂપી ચક્રમા પડવું પડે છે. ભગવાને આ વાત સ્થાનાઙ્ગસૂત્ર (સ્થા ૫ ઉદ્દે ૧) માં કહી છે.-

"પાંચ કારણે જીવ દુર્ગતિમાં જાય છે જેમકે-જીવહિંસાથી, જુઠથી, ચોરીથી, મૈથુનથી અને પરિગ્રહથી"

हिंसाकरणेन दुर्गतिर्भवतीति सावद्यसपर्या सर्वथा प्रतिषिद्धा भगवता, एवंच भगवच्चरणानुरागिणः शुभगत्यभिलाषिणः सुरनिकाया वीतरागस्य भगवतः समवसरणे सचित्तजलपुष्पादिवृष्टिसमारम्भं कुर्वन्तीति वार्ता न कथमपि युक्तिपथमारोहति।

अत्रेदमनुमानवाक्यम्—

आभियोग्या देवाः समवसरणे सचित्तपरिहारिणः, भगवन्मतानुयायित्वात् तुङ्गिकानगरीश्रावकवत्। उक्तंच—

अचित्तजलपुष्फाणं, वुट्ठिं विक्कुव्वए सुरा।
समोसरणमज्झे उ, सचित्तं जिणवारियं ॥१॥

पांच कारणोंसे जीव दुर्गति में जाते हैं, जैसे कि जीव हिंसा से, झुठसे, चोरीसे, मैथुनसे, तथा परिग्रहसे"।

हिंसा करनेसे दुर्गति होती है, अतः सावद्य पूजा सर्वथा निषिद्ध है। इस प्रकार भगवान् के चरणों में सदैव प्रेम रखनेवाले तथा शुभगति के इच्छुक देवता वीतराग भगवान् के समवसरणमें सचित्त जल-पुष्प आदिकी वर्षा करते हैं, यह बात किसीभी युक्तिसे सिद्ध नहीं हो सकती है।

अनुमान-प्रमाणसे भी यही बात सिद्ध होती है। जैसे तुंगिका नगरी के श्रावक, भगवान् के समवसरणमें पांच प्रकार के अभिगमपूर्वक अर्थात् सचित्त का परिहार करके जाते थे, उसी प्रकार भगवान् के अनुयायी आभियोगिक देवता भी समवसरणमें सचित्त जल पुष्प आदि की वृष्टि नहीं करते हैं, यह तीर्थंकरों की मर्यादा है। कहा भी है:—

હિંસા કરવાથી દુર્ગતિ થાય છે, માટે સાવદ્ય-પૂજા સર્વથા નિષિદ્ધ છે એ રીતે જે ભગવાનના ચરણોમા સદા પ્રેમ રાખવાવાળા તથા શુભ-ગતિના ઇચ્છુક દેવતા વીતરાગ ભગવાનના સમવસરણમાં સચેત પાણી પુષ્પ આદિની વર્ષા કરે છે, આ વાત કોઇ પણ યુકિતથી સિદ્ધ થઇ શકતી નથી

અનુમાનપ્રમાણથી પણ આ વાત સિદ્ધ થાય છે કે- જેમ તુંગિકા નગરીના શ્રાવક, ભગવાનના સમવસરણમાં પાંચ પ્રકારના અભિગમ-પૂર્વક અર્થાત્ સચેત દ્રવ્યો (વસ્તુઓ) નો ત્યાગ કરીને જતા હતા, તેજ રીતે ભગવાનના અનુયાયી આભિયોગિક દેવતા પણ સમવસરણમા સચેત પાણી પુષ્પ આદિની વૃષ્ટિ કરતા નથી. આ તીર્થંકરોની મર્યાદા છે. કહ્યુ પણ છે:-

छाया—अचित्तजलपुष्पाणां, वृष्टिं विकुर्वते सुरा ।
समवसरणमध्ये तु, सचित्तं जिनवारितम् ॥१॥

प्रभोः पार्श्वनाथस्य संतानः स्थविरो भगवान् तुङ्गिकानगर्यां उद्याने समाजगाम । तन्नगरीनिवासिनः श्रावकाः स्थविरं भगवन्तं वन्दितुं पञ्चविधेनाभिगमेन तत्राभिगच्छन्ति । उक्तंच भगवत्यां (शत. २, उ. ५, सू. १०८)

" जेणेव पुप्फवईए नामं चेइए होत्था तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति, तं जहा—

१— सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, २— अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए, ३— एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं, ४— चक्खुप्फासे अजलिप्पग्गहेणं, ५— मणसो एगत्तीकरणेणं, "

" समवसरणमें देवता अचित्त जल, पुष्प आदिकी वृष्टि करते हैं । क्यों कि सचित्त वस्तुके लिये जिनेन्द्र भगवान्ने निषेध किया है ।"

भगवान् पार्श्वनाथ के संतानिक स्थविर भगवान् तुंगिका नगरी के उद्यान में पधारे । उस नगरी के निवासी स्थविर भगवान् को वन्दन करने के लिये पांच प्रकार के अभिगमपूर्वक गये । भगवती सूत्र में कहा हैं । " जिस और पुष्पवती नामक उद्यान है, वहाँ आकर वे स्थविर भगवान् को पांच प्रकारके अभि गमपूर्वक वन्दन करते हैं, अर्थात् स्थविर भगवान् को वन्दनार्थ जाते हुए इन पाँच बातों का ध्यान रखते हैं, जैसे कि':— (१) सचित्त द्रव्यों को दूर रखते हैं, (२) अचित्त द्रव्यों को धारण करते हैं, (३) एक शाटिक—विना जोड—वाले—कपडे का जयणा के लिये उत्तरासङ्ग करते हैं, (४) दूरसे भगवान् के दृष्टिगोचर होतेही हाथ जोडते हैं, (५) मन को एकाग्र करते हैं ।"

" સમવસરણમાં દેવતા અચેત પાણી, પુષ્પ આદિની વૃષ્ટિ કરે છે કેમકે સચેત વસ્તુને માટે જિનેન્દ્ર ભગવાને નિષેધ કરેલ છે.

ભગવાન પાર્શ્વનાથના સતાનિક સ્થવિર ભગવાન્ તુગિકા નગરીના પુષ્પવતી નામના ઉદ્યાનમા પધાર્યા, તે નગરીના નિવાસી સ્થવિર ભગવાનને વન્દન કરવા પાંચ પ્રકારના અભિગમપૂર્વક ગયા. ભગવતી સૂત્રમાં કહ્યું છે જ્યાં પુષ્પવતી નામનુ ઉદ્યાન છે ત્યાં આવી તે સ્થવિર ભગવાનને પાંચ પ્રકારના અભિગમપૂર્વક વન્દન કરે છે અર્થાત્ સ્થવિર ભગવાનને વન્દના કરવા જતાં આ પાચ વાતોનું ધ્યાન રાખે છે, જેમકેઃ— (૧) સચેત દ્રવ્યોને દૂર રાખે છે, (૨) અચેત દ્રવ્યોને ધારણ કરે છે, (૩) એક શાટિક જોડયા વગરનાં કાપડનું (સાધ્યા શિવાય એક સળંગ) જતના માટે ઉત્તરાસગ કરે છે, (૪) દૂરથી ભગવાન દ્રષ્ટિગોચર થતાંજ—દેખતાંજ, હાથ જોડે છે; (૫) મનને એકાગ્ર કરે છે.

उपासकदशाङ्गसूत्रे-(१ अ.)ऽपि प्रसिद्धमेतद्-भगवन्तं महावीरं वन्दितुं-जितशत्रुनामधेयो नृपः पञ्चविधाभिगमेन जगाम। सचित्तपुष्पताम्बूलादीनां त्यागेन श्रावका अभिगच्छन्तीति वचनाद् भगवत्समवसरणसमागतानां देवानां सचित्तजलपुष्पादिवृष्टिकरणं नोपपद्यते।

चम्पानगर्यां भगवन्महावीरसमवसरणावसरे नरेन्द्रशिरोमणिः कूणिकश्चतुरङ्ग-सेनासमन्वितः पञ्चविधेनाभिगमेन भगवन्तं वन्दितुं सादरं सविनयं चाभिजगाम। स चैवं पञ्चविधोऽभिगम औपपातिकसूत्रे निर्दिष्टः-

'तए णं से कूणिए राया जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, तं जहा-

उपासकदशाङ्ग सूत्रमें भी यह बात प्रसिद्ध है। प्रथम अध्य-यनमें आता है कि-'जितशत्रु' नामक राजा पांच प्रकार के अभि-गमपूर्वक भगवान् को वन्दन करने के लिये गया। श्रावकगण भी भगवान् वीर को वन्दनार्थ सचित्त पुष्प, पान आदिका त्याग कर के ही जाते हैं। उपरोक्त प्रमाणोंसे भगवान् के समवसरण में आये हुए देवताओं के द्वारा की गयी सचित्त जल, पुष्प आदि की वृष्टि सिद्ध नहीं होती।

चम्पा नगरीमें श्रमण भगवान् महावीर के समवसरण के अवसर पर सम्राट् कुणिक अपनी चतुरङ्गिनी सेना के साथ पांच प्रकार के अभिगमपूर्वक भगवान को वन्दन करने के लिये अत्यन्त आदर एवं विनय के साथ गये थे। वह पांच प्रकारका अभिगम औपपातिक सूत्रमें इस प्रकार कहा गया है, जैसे-

ઉપાસકદશાગસૂત્રમા પણ આ વાત પ્રસિદ્ધ છે પ્રથમ અધ્યયનમાં આવે છે કે -" જિતશત્રુ " નામે રાજા પાચ પ્રકારના અભિગમપૂર્વક ભગવાનને વન્દન કરવા ગયા શ્રાવકગણ પણ વીરને વન્દન કરવા માટે સચેત પુષ્પ પાન આદિનો ત્યાગ કરીને પછીજ જાય છે, ઉપરોકત પ્રમાણોથી ભગવાનના સમવસરણમા આવેલ દેવતાઓદ્વારા કરેલી સચેત પુષ્પ પાણી આદિની વૃષ્ટિ સિદ્ધ થતી નથી

ચપા નગરીમા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના સમવસરણને અવસરે સમ્રાટ કુણિક પોતાની ચતુરગિણી સેના સાથે પાચ પ્રકારના અભિગમપૂર્વક ભગવાનને વન્દન કરવા અત્યન્ત આદર તેમજ વિનય સહિત ગયા હતા. તે પાચ પ્રકારનો અભિગત ઔપપાતિક સૂત્રમા એ પ્રમાણે કહેલ છે, જેમકે-

१- सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, २- अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणाए, ३- एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं, ४- चक्खुप्फासे अंजलिप्पग्गहेणं, ५- मणसो एगत्तीभावकरणेणं" इत्यादि। एवमन्येऽप्यागमा अनुसंधेयाः।

अथानुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य शब्दार्थः प्रदर्श्यते-

उत्तराणि=श्रेष्ठानि न सन्ति येभ्य इत्यनुत्तराणि=विजय वैजयन्त-जयन्ता-पराजित-सर्वार्थसिद्धाभिधानि विमानानि, तेषु उपपातः=उत्पत्तिः=स विद्यते येषां

जहाँ श्रमण भगवान् महावीर विराजते हैं, वहाँ कुणिक राजा आये, आकर श्रमण भगवान् महावीर को पांच प्रकार के अभिगम-पूर्वक वन्दन करते हैं। वे पांच अभिगम निम्न प्रकार हैं-

(१) सचित्त द्रव्यों को दूर रखते हैं। (२) अचित्त द्रव्यों को धारण करते हैं। (३) एक शाटिक-विना जोडवाले-कपडेका जयणा के लिये उत्तरासङ्ग करते हैं। (४) भगवान् के दृष्टिपथ होनेपर हाथ जोडते हैं। (५) मन को एकाग्र करते हैं।

विशेष ज्ञान के लिये इसी प्रकार दूसरे आगमों में अनु-सन्धान करना चाहिये।

अब यहाँ अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग का शब्दार्थ बताया जाता है-'अन्'=नहीं, 'उत्तर'=श्रेष्ठ हैं, अन्य विमान जिन से, ऐसे विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्ध नामक विमानो में 'उत्पातः'=उत्पन्न होना, अर्थात् विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित, और सर्वार्थसिद्ध नामक सर्वश्रेष्ठ विमानोंमें उत्पन्न होने वाले 'अनु-

જ્યા શ્રમણ ભગવન્ત મહાવીર બિરાજે છે ત્યા કુણિક રાજા આવ્યા આવીને ભગવાન મહાવીરને પાંચ પ્રકારના અભિગમપૂર્વક વન્દન કરે છે તે પાંચ અભિગમ નીચે મુજબ છે -

(૧) સચેત દ્રવ્યો (પદાર્થો)ને દૂર રાખે છે. (૨) અચેત દ્રવ્યોને ધારણ કરે છે. (૩) એકશાટિક-સાંધા વિનાનુ એક સળગ આખુ કપડું. તેનું જયણા માટે ઉત્તરાસગ કરે છે (૪) ભગવાન દૃષ્ટિગોચર થતાંજ હાથ જોડે છે. (૫) મનને એકાગ્ર કરે છે.

વિશેષ જ્ઞાન માટે આજ પ્રમાણે બીજા આગમોમાં અનુસન્ધાન કરવું જોઈએ

હવે અહિ અનુત્તરોપપાતિક દશાંગનો શબ્દાર્થ બતાવવામાં આવે છે:-

અન્=નહી ઉત્તર=શ્રેષ્ઠ છે અન્ય વિમાન જેનાથી, એવા વિજય, વૈજયન્ત, જયન્ત અપરાજિત, અને સર્વાર્થસિદ્ધ નામના વિમાનમાં 'उपपातः' ઉત્પન્ન થવું અર્થાત્ વિજય, વૈજયન્ત, જયન્ત, અપરાજિત, અને સર્વાર્થસિદ્ધ, નામના સર્વશ્રેષ્ઠ વિમાનોમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા 'अनुत्तरोपपातिक' છે. અનુત્તર વિમાનોમાં ઉત્પન્ન થવાવાળા

ते-अनुत्तरोपपातिकाः, अनुत्तरोपपातिकानां जालिकुमारादीनां दश=दशाध्ययनात्मकप्रथमवर्गोपलक्षितकथाः-अनुत्तरोपपातिकदशाः। अत्र दशशब्दो लक्षणया कथारूपार्थबोधकः, भगवताऽस्याङ्गस्य धर्मकथारूपतयैव प्रतिबोधितत्वात्। 'संख्यायास्तत्पुरुषस्य वाच्यः' इति डच्। तासाम्-अनुत्तरोपपातिकदशानां नवमस्याङ्गस्येदमाद्यं सूत्रम्-'तेणं कालेणं' इत्यादि।

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे अज्जसुहम्मस्स समोसरणं, परिसा निग्गया जाव जंबू पज्जुवासइ, एवं वयासी-जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते! अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ॥ सू० १ ॥

छाया-तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरम्, आर्यसुधर्मणः समवसरणम् परिषन्निर्गता यावज्जम्बूः पर्युपास्ते, एवमवादीत्-यदि खलु भदन्त! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेनाष्टमस्याङ्गस्यान्तकृतदशानामयमर्थः प्रज्ञप्तः, नवमस्य खलु भदन्त! अङ्गस्यानुत्तरोपपातिकदशानां यावत् संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ॥सू. १॥

टीका-'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिनसमये च राजगृहनामधेयं नगरमासीत्, तस्मिन् काले=चतुर्थारकलक्षणे तस्मिन् समये=हीयमानरूपे, राज-

---

त्तरोपपातिक हैं। अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होनेवाले जालिकुमार आदि दश अध्ययनवाला जिस का प्रथम वर्ग है, वह 'अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गसूत्र' है। यहाँ दश शब्द, लक्षणा से कथावस्तुका ज्ञान करानेवाला है, क्यों कि भगवान् के द्वारा इस अङ्ग का धर्मकथारूपसे उपदेश दिया गया है। इस नवमे अङ्ग का यह पहला सूत्र है-

'तेणं कालेणं' इत्यादि।

જાલિ કુમાર આદિ દશ અધ્યયન વાળો જેનો પ્રથમ વર્ગ છે તે 'अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गसूत्र' છે અહિં દશ શબ્દ લક્ષણાથી કથાવસ્તુનું જ્ઞાન કરવાવાળો છે કેમકે ભગવાનદ્વારા આ અંગેનો ધર્મકથારૂપે ઉપદેશ દેવાએલ છે તે નવમા અંગનું આ પ્રથમ સૂત્ર છે. 'तेणं कालेणं' ઇત્યાદિ.

गृहे नगरे तद्वहिःप्रदेशे गुणशिलकनाम्नि चैत्ये, आर्यसुधर्मणः=श्रीमहावीरभगवतः पञ्चमो गणधरः सुधर्मा स्वामी, स च ज्ञानाचारादियुक्तत्वादार्यः शोभनो धर्मो यस्य स सुधर्मा । 'धर्मादनिच्केवलात्' इत्यनिच्प्रत्ययः। आर्यश्चासौ सुधर्मा, आर्यसुधर्मा, तस्य आर्यसुधर्मणः समवसरणं बभूव। एतत्परिचयस्त्वेवम्।

कोल्लाकसन्निवेशे धम्मिल्लविप्रस्य भार्या भद्दिला। तयोः पुत्रो नाम्ना श्री सुधर्माऽऽसीत्, स पञ्चाशद्वर्षान्ते प्रव्रजितः। तेन त्रिंशद्वर्षाणि वीरसेवा कृता

जिस काल जिस समयमें राजगृह नामक नगर था। उस काल उस समयमें अर्थात् चतुर्थ आरेके हीयमानरूप समय में (जिस में आयुष्य, अवगाहना, वर्ण, रूप, रस, ज्ञान और शक्ति आदिका ह्रास होता हो उसे हीयमान कहते हैं) राजगृह नगर के वाहिर गुणशिल-नामक उद्यान में श्रमण भगवान् महावीर के पञ्चम गणधर श्री आर्य-सुधर्मा स्वामी पधारे। जो ज्ञानाचार दर्शनाचार आदि आचाररूप गुणों से संयुक्त हो उसे आर्य कहते हैं। वे इन गुणों से अलङ्कृत थे, अतः उन को आर्य शब्द से कहते हैं। जिसका श्रेष्ठ धर्म हो उसे सुधर्मा कहते हैं। सुधर्मा स्वामी का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

'कोल्लाक' नामक सन्निवेश में 'धम्मिल्ल' नाम के एक ब्राह्मण रहते थे। उनकी स्त्री का नाम 'भद्दिला' था। उनके पुत्र सुधर्मा थे। उन्होंने पचास वर्ष की अवस्था में श्रमण भगवान् महावीर से दीक्षा ग्रहण की। तीस वर्ष पर्यन्त भगवान् महावीर की सेवा की। वे

જે કાળ જે સમયમા રાજગૃહ નામે નગર હતુ તે કાળ તે સમયમાં અર્થાત્ ચોથા આરાના હીયમાન રૂપ સમયમા (જેમા આયુષ્ય, અવગાહના, વર્ણ, રૂપ, રસ, જ્ઞાન અને શકિત આદિનો હ્રાસ થતો હોય તેને હીયમાન કહે છે) રાજગૃહ નગરની બહાર ગુણશિલક નામના ઉદ્યાનમાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના પાચમા ગણધર શ્રી આર્ય સુધર્મા સ્વામી પધાર્યા, જે જ્ઞાનાચાર, દર્શનાચાર, આદિ આચાર રૂપ ગુણોથી યુકત હોય તેને આર્ય કહે છે, તે આ ગુણોથી અલકૃત હતા. માટે તેમને આર્ય શબ્દથી બોલાવવામાં આવતા હતા જેનો ધર્મ શ્રેષ્ઠ હોય તેને સુધર્મા કહે છે એવા આર્ય સુધર્મા સ્વામી ત્યાં પધાર્યા તેમનો સક્ષિપ્ત પરિચય આ પ્રમાણે છેઃ–

'કોલ્લાક' નામે સન્નિવેશમાં 'ધમ્મિલ્લ' નામનો એક બ્રાહ્મણ રહેતો હતો, તેની સ્રીનુ નામ 'ભદ્દિલા' હતુ તેમના પુત્ર સુધર્મા હતા, તેમણે પચાસ વર્ષની ઉમરે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પાસે દીક્ષા ગ્રહણ કરી. ત્રીશ વર્ષ સુધી ભગવાન

चतुर्दशपूर्वधरो जातः। स वीरनिर्वाणाद् द्वादशवर्षान्ते जन्मतो द्विनवतिवर्षान्ते च केवलज्ञानं प्राप, ततोऽष्टौ वर्षाणि केवलित्वं परिपाल्य शतवर्षायुषि श्री सुधर्मा स्वामी जम्बूस्वामिनं स्वपदे संस्थाप्य शिवं गतः।

अथ श्रीसुधर्मस्वामिनं वन्दितुं धर्मकथाश्रवणार्थं च परिषद्वृन्दरूपेण जनसंहतिः पञ्चविधाभिगमपुरस्सरं नगरात् निर्गता निःसृता। सा तत्समीपमागत्य सविधिवन्दनपुरस्सरं धर्मकथां श्रुत्वा स्व स्व स्थानं प्रतिगता। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रीसुधर्मस्वामिनो ज्येष्ठोऽन्तेवासी जम्बूरनगारस्तददूरसामन्ते नतमस्तकः कृताञ्जलिपुटश्चोर्ध्वजानुर्ध्यानकोष्ठोपगतः संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति।

चौदह-पूर्व के धारी हुए। वीरनिर्वाण के बारह वर्ष के पश्चात् जन्म से ९२ वर्ष की अवस्थामें उन को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। आठ वर्ष पर्यन्त केवलिपद को पालकर पूरे सौ वर्ष का आयुष्य पूर्ण करके श्री आर्य-जम्बूस्वामी को अपने पद पर प्रतिष्ठित कर मोक्ष पधारे थे। ऐसे आर्य सुधर्मा स्वामी वहां पधारे।

श्री सुधर्मा स्वामी का पधारना जानकर नगरनिवासी लोग वन्दन तथा धर्मकथा श्रवण करने के लिये निकले। धर्मकथा सुनकर अपने २ स्थान पर गये। उस काल उस समय में श्री सुधर्मा स्वामीके ज्येष्ठ शिष्य श्री जम्बू अनगार उन के अवग्रह में नतमस्तक हो दोनों हाथ जोडे हुए अपने घुटने को ऊंचा करके ध्यान में अवस्थित हो संयम और तप पूर्वक आत्माको भावित कर रहे है।

મહાવીરની સેવા કરી, અને તેઓ ચૌદ પૂર્વના ધારી થયા વીર નિર્વાણના બાર વર્ષ પછી જન્મથી બાણું ૯૨, વર્ષની અવસ્થાએ તેમને કેવળ જ્ઞાન પ્રાપ્ત થયું આઠ વર્ષ સુધી કેવળિપદને પાળી પૂરા સો વર્ષનુ આયુષ્ય પૂર્ણ કરી શ્રીઆર્યજમ્બૂસ્વામીને પોતાના પદ ઉપર પ્રતિષ્ઠિત કરીને મોક્ષ પધાર્યા

શ્રીસુધર્માસ્વામીનુ પધારવુ જાણી નગરનિવાસી લોક વન્દના કરવા તથા ધર્મકથા સાંભળવા નિકળ્યા, ધર્મકથા સાંભળી સૌ પોત-પોતાના સ્થાને ગયા, તે કાળ તે સમય શ્રી સુધર્માસ્વામીના મોટા શિષ્ય શ્રી જમ્બૂ અણુગાર તેમના અવગ્રહમા નતમસ્તક અર્થાત્ જેનુ મસ્તક નમેલું છે એવા થઇ, હાથ જોડી, પોતાના ઢીચણુને ઉંચા રાખી, અને ધ્યાનમાં અવસ્થિત થઇ સંયમ અને તપથી આત્માને ભાવિત કરી રહ્યા છે.

ततोऽसौ जातसंजातोत्पन्नसमुत्पन्नश्रद्धो जातसंजातोत्पन्नसमुत्पन्नसंशयो जातसंजातोत्पन्नसमुत्पन्नकुतूहलः सन् श्री सुधर्मस्वामिनमुपागत्य सविधिवन्दनं विधायाभिमुखं प्राञ्जलिः पर्युपास्ते=सेवते। एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्= उक्तवान्–यदि खलु भदन्त ! हे भगवन् !, इदं गुरोः संबोधनम् , श्रमणेन भगवता महावीरेण, यावत् आदिकरेण, तीर्थंकरेण, स्वयं संबुद्धेन पुरुषोत्तमेन, पुरुषसिंहेन, पुरुषवरपुण्डरीकेण, पुरुषवरगन्धहस्तिना, लोकोत्तमेन, लोकनाथेन, लोकहितेन, लोकप्रदीपेन, लोकप्रद्योतेन, अभयदेन, चक्षुर्देन, मार्गदेन, शरणदेन, जीवदेन,

परिषद् जानेके बाद वे जम्बू अनगार, जिन्हें श्रद्धा थी, जो जिज्ञासु थे, और जिन्हें जिज्ञासा के कारण कौतूहल हुआ था, जिन्हें श्रद्धा उत्पन्न हुई थी, संशय (जिज्ञासा) उत्पन्न हुआ था, और कौतूहल उत्पन्न हुआ था, जिन्हें भलीभाँति श्रद्धा थी, भलीभाँती संशय था, और भलीभाँति कौतूहल था, वे श्री सुधर्मा स्वामीके समीप आकर सविधि वन्दना कर के सन्मुख दोनों हाथ जोडकर सेवा करने लगे और इस प्रकार बोले–

हे भदन्त ! धर्मकी आदि करनेवाले, धर्म–तीर्थ की स्थापना करनेवाले, अपने आप बोध को प्राप्त करने वाले, पुरुषों में श्रेष्ठ, पुरुषों में सिंह के समान, पुरुषों में पुण्डरीक कमल के समान, पुरुषों में गन्धहस्ती के समान, लोक में उत्तम, लोक के नाथ, लोकहितैषी, लोकप्रदीपक, लोक को ज्ञान रूपी आलोक (प्रकाश) से प्रकाशित करने वाले, अभय देने वाले, ज्ञानरूपी नेत्र देने वाले, मोक्षमार्ग को बतानेवाले, शरण देने वाले, संयमरूपी जीवन प्रदान करने वाले,

પરિષદ્ ગયા પછી તે જમ્બૂ અનગાર, જેમને શ્રદ્ધા હતી, જે જિજ્ઞાસુ હતા, અને જેમને જિજ્ઞાસાને કારણે કુતૂહલ થયુ હતુ, જેમને શ્રદ્ધા ઉત્પન્ન થઇ, સંશય (જિજ્ઞાસા) ઉત્પન્ન થયો હતો, અને કુતૂહલ ઉત્પન્ન થયુ હતું, જેમને સારી પેઠે સંશય હતો અને સારી પેઠે કુતૂહલ હતું તે શ્રી સુધર્માસ્વામીની સમીપ આવી સવિધિ વન્દના કરીને સામે બેઉ હાથ જોડી સેવા કરવા લાગ્યા અને આ પ્રમાણે બોલ્યા–

હે ભગવન્ત ! ધર્મની આદિ કરવાવાળા, ધર્મતીર્થની સ્થાપના કરવાવાળા પોતાની મેળે સ્વય બોધને પ્રાપ્ત કરવાવાળા, પુરુષોમાં શ્રેષ્ઠ, પુરુષોમાં સિંહસમાન, પુરુષોમાં પુંડરીક કમળ સમાન, પુરુષોમાં ગન્ધહસ્તી સમાન, લોકમાં ઉત્તમ, લોકના નાથ, લોકહિતૈષી, લોકપ્રદીપક, લોકને જ્ઞાનરૂપી આલોક (પ્રકાશ)થી પ્રકાશિત કરવાવાળા અભય દેવાવાળા, જ્ઞાનરૂપી ચક્ષુના દેવાવાળા, મોક્ષ માર્ગ બતાવવાવાળા, શરણ દેવાવાળા

बोधिदेन, धर्मदेन, धर्मदेशनादेन, धर्मनायकेन, धर्मसारथिकेन, धर्मवरचतुरन्त-चक्रवर्तिकेन, द्वीप-त्राण-शरणगति-प्रतिष्ठेन, अप्रतिहतज्ञानदर्शनधरेण, व्यावृत्त-छद्मना, जिनेन, जापकेन, तीर्णेन, तारकेण, बुद्धेन, बोधकेन, मुक्तेन, मोचकेन, सर्वज्ञेन, सर्वदर्शिना, शिवमचलमरुजमनन्तमक्षयमव्याबाधमपुनरावृत्तिकं सिद्धिगति-नामधेयं स्थानं संप्राप्तेन अष्टमस्याङ्गस्य अन्तकृतदशानाम्=यैरायुषोऽन्तसमये केवलज्ञानं प्राप्तम्, अतएव भव्यजीवानां धर्मदेशनां कर्तुमक्षमतया मूककेवलिनो भूत्वा मुक्तिपदं प्राप्ताः, ते कर्मणस्तत्फलरूपस्य संसारस्य च विनाशं कृतवन्तः, अतोऽन्तः=कर्मणः संसारस्य च नाशः कृतो यैस्तेऽन्तकृताः, इति व्युत्पत्ति-लब्धनाम्ना प्रसिद्धाः तेषां दशाः=दशाध्ययनात्मकप्रथमवर्गोपलक्षितकथाः, अन्त-

सम्यक्त्व देने वाले, धर्म के दातार, धर्मदेशना देनेवाले, धर्मनायक, धर्म रूपी रथ के सारथी, धर्म में प्रधान तथा चार गति का अन्त करने वाले चक्रवर्ती समान, संसाररूपी समुद्र में द्वीप (बेट) के सदृश, शरण में आये हुए के आधारभूत, अप्रतिहत श्रेष्ठ ज्ञान दर्शन के धारण करने वाले, छद्म अर्थात् घातिकर्मरहित, स्वयं रागद्वेषको जीतने वाले, तथा दूसरों को भी जीताने वाले, स्वयं संसाररूपी समुद्र के तिरने वाले, तथा दूसरोंको भी तारने वाले, स्वयं बोध प्राप्त किये हुए तथा दूसरों को भी बोध प्राप्त करानेवाले, स्वयं कठिन कर्म बन्धनसे मुक्त तथा दूसरों को भी मुक्त करने वाले, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, कल्याणरूप, स्थिर, रोगरहित, अन्तरहित, अक्षय, अव्या-बाध, पुनरागमनरहित, ऐसे सिद्धगति नामक परम पद (मोक्ष) को प्राप्त करने वाले, श्रमण भगवान् महावीरने आठवें अङ्ग अन्तकृत-

સંયમરૂપી જીવન પ્રદાન કરવાવાળા, સમ્યક્ત્વ દેવાવાળા. ધર્મના દાતાર, ધર્મદેશના દેવાવાળા, ધર્મનાયક, ધર્મરૂપી રથના સારથી, ધર્મમા પ્રધાન તથા ચાર ગતિનો અન્ત કરવાવાળા, ચક્રવર્તી સમાન, સંસાર રૂપી સમુદ્રમા દ્વીપ (બેટ) સમાન, શરણે આવેલાને આધારભૂત, અપ્રતિહત શ્રેષ્ઠ જ્ઞાન દર્શનને ધારણ કરવાવાળા, છદ્મ અર્થાત્ ઘાતિકર્મ-રહિત, સ્વયં રાગદ્વેષને જીતવાવાળા તથા બીજાને પણ જીતાવવાવાળા, સ્વયં સંસારરૂપી સમુદ્રને તરવાવાળા તથા બીજાને પણ તારવાવાળા સ્વયં બોધ પ્રાપ્ત તથા બીજાને પણ બોધ પ્રાપ્ત કરાવવાવાળા, સ્વયં કઠિન કર્મબન્ધનથી મુક્ત તથા બીજાઓને પણ કર્મથી મુક્ત કરવાવાળા, સર્વજ્ઞ, સર્વદર્શી કલ્યાણસ્વરૂપ, સ્થિર, રોગ-રહિત, અન્તરહિત અક્ષય, અવ્યાબાધ, પુનરાગમનરહિત, એવા સિદ્ધિ ગતિ નામે પરમપદ (મોક્ષ) ને પ્રાપ્ત કરવાવાળા, શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આઠમા અંગ અન્ત-

कृतदशाः, तासाम्=अन्तकृतदशानाम् अन्तकृतदशाख्यस्य, अयमर्थः प्रज्ञप्तः=कथितः। हे भदन्त! हे भगवन्! नवमस्य अङ्गस्य अनुत्तरोपपातिकदशानाम्=अनुत्तरोपपातिकदशाख्यस्य यावत्-सकलगुणसंपन्नेन, संप्राप्तेन=मुक्तिं प्राप्तवता भगवता कोऽर्थः प्रज्ञप्तः=कथितः? ॥ सू० १ ॥

मूलम्-तए णं से सुहम्मे अणगारे जम्बू-अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जम्बू! समणेणं जाव संपत्तेणं नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं तिन्नि वग्गा पण्णत्ता। जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं नवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं तओ वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता?। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-(१) जाली (२) मयाली (३) उवयाली (४) पुरिससेणे य (५) वारिसेणे य (६) दीहदंते य (७) लट्ठदंते य (८) वेहल्ले (९) वेहासे (१०) अभये वि य कुमारे ॥ सू० २ ॥

छाया-ततः खलु स सुधर्माऽनगारो जम्बूमनगारमेवमवादीत्-'एवं खलु जम्बूः! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन नवमस्याङ्गस्य अनुत्तरोपपातिकदशानां त्रयो वर्गाः प्रज्ञप्ताः। यदि खलु भदन्त! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन नवमस्याङ्गस्य अनुत्तरोपपातिकदशानां त्रयो वर्गाः प्रज्ञप्ताः, प्रथमस्य खलु भदन्त! वर्गस्य अनुतत्तरोपपातिकदशानां, कत्यध्ययनानि प्रज्ञप्तानि?। एवं खलु जम्बूः! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेनानुत्तरोपपातिकदशानां प्रथमस्य वर्गस्य दशाध्ययनानि

दशा का ऐसा अर्थ कहा है तो हे भगवन्! मुक्तिप्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने इस नवमे अङ्ग 'अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग' सूत्रका कौनसा अर्थ प्ररूपित किया है? ॥ सू० १ ॥

कृतदशानो आ अर्थ कह्यो छे तो हे भगवन्! मुक्तिप्राप्त श्रमण भगवान महावीरे आ नवमा अनुत्तरोपपातिकदशांग सूत्रना शु शुं अर्थ प्ररूपित कर्या छे? (सू० १)

तद्यथा-(१) जालिः (२) मयालिः (३) उपजालिः (४) पुरुषसेनः (५) वारिषेणश्च (६) दीर्घदन्तश्च (७) लष्टदन्तश्च (८) वेहल्लः (९) वैहायसः (१०) अभयोऽपि च कुमारः ॥ सू० २ ॥

टीका-'तए णं से' इत्यादि ततः=जम्बूस्वामिपृच्छानन्तरम् सः=यस्य भगवत्कथितार्थवाचना मूलागमरूपेण जिनशासनेऽधुना प्रवर्तमाना विद्यते सः, सुधर्मा=सुधर्मेतिनाम्ना प्रसिद्धः अनगारः=सुखसमाधिना साधूनां नवकल्पविहारमर्यादातिक्रमप्रतिषेधान्नियतवासरहितः, जम्बूम्=जम्बूनाम्ना प्रसिद्धं, जिनवचनपीयूषपिपासुम् अनगारं=नियतवासरहितं संयमिनम् एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारं वचनम् अवादीत्=उक्तवान्-

हे जम्बूः! यावत्=उक्तगुणवता संप्राप्तेन=मुक्तिं लब्धवता श्रमणेन भगवता महावीरेण नवमस्याङ्गस्य, अनुत्तरोपपातिकदशानाम्=अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य त्रयो वर्गाः प्रज्ञप्ताः=कथिताः। अध्ययनसमूहो वर्गः।

'तए णं से' इत्यादि।

यहां प्रथम सुधर्मा स्वामी कैसे हैं? इसका कुछ वर्णन किया जाता है। जिन्हों ने भगवान् के द्वारा कही हुई अर्थरूप वाणी को मूलागम रूप से ग्रथित किया है, जो श्रेष्ठ धर्म को मानने वाले सुधर्मा नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ सुधर्मा स्वामी को अनगार विशेषण से क्यों सम्बोधित किया गया है? वह कहते हैं-जो सुख-समाधिमें रहते हुए विहार के नव कल्पों की मर्यादा का उल्लङ्घन न कर के नियतवासरहित अर्थात् एक निश्चित स्थान पर स्थायी रूप से न रहकर पवनसमान अप्रतिबन्ध-विहार करते रहते हैं, उन्हें अनगार कहते हैं। जम्बूस्वामी कैसे हैं?-जंबू स्वामी जिनवचनामृत के अत्यन्त

'तए णं से' ઇત્યાદિ.

સુધર્મા સ્વામી કેવા છે તેનું થોડું વર્ણન અહીં કરવામા આવે છે:- જેમણે ભગવાનદ્વારા કહેલી અર્થરૂપ વાણીને મૂળાગમ રૂપે ગ્રથિત કરી છે, જે શ્રેષ્ઠ ધર્મને માનવાવાળા સુધર્મા નામથી પ્રસિદ્ધ છે અહિં સુધર્માસ્વામીને અણગાર વિશેષણથી શા માટે સમ્બોધિત કરેલ છે તે કહે છે-

અણગાર-સુખ સમાધિ રહેતાં વિહારના નવ કલ્પોની મર્યાદાનું ઉલ્લંઘન ન કરી નિયતવાસરહિત અર્થાત એક નિશ્ચિતસ્થાને સ્થાયીરૂપ ન રહેતાં પવન સમાન અપ્રતિબન્ધ વિહાર કરતા રહે, તેને અણગાર કહે છે. જંબૂસ્વામી કેવા છે?- જંબૂ-

अथ-सोत्साहं सविनयं जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामिनं पप्रच्छ-भदन्त ! हे भगवन् ! यदि यावत्=उक्तगुणवता संप्राप्तेन=मुक्तिं लब्धवता, श्रमणेन=दुश्चर तपश्चर्याप्रविद्धेन महावीरेण भगवता नवमस्याङ्गस्य अनुत्तरोपपातिकदशानाम्= अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य त्रयो वर्गाः प्रज्ञप्ताः=कथिताः, तर्हि भदन्त !=हे भगवन् ! अनुत्तरोपातिकदशानाम्=अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य प्रथमस्य वर्गस्य खलु कति अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि=प्रोक्तानि ?

सुधर्मा स्वामी प्राह-हे जम्बूः ! एवं खलु यावत्=उक्तगुणवता, संप्रा-

---

पिपासु हैं, संयम में दृढ एवं नियतवासरहित अनगार हैं। श्री जम्बूस्वामी के पूछने पर पूर्वोक्त गुणयुक्त श्री सुधर्मास्वामी बोले-हे जम्बू ! उपरोक्त महान् गुणों से अलङ्कृत, निर्वाणपदप्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने नवमाङ्ग श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्र के तीन वर्ग कहे हैं। कई अध्ययनों के समूह को वर्ग कहते है ।

पूछे हुए प्रश्न का गुरुद्वारा समीचीन उत्तर पाकर श्री जम्बूस्वामी ने पुनः नवीन उत्साह एवं जिज्ञासाके साथ विनयसहित श्री सुधर्मा स्वामीसे पूछा—

हे भगवन् ! मुक्तिप्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने नवमाङ्ग श्री अनुत्तरोपपातिक दशाङ्ग के तीन वर्ग कहे हैं, तो हे भगवन् ! अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग के प्रथम वर्ग के कितने अध्ययन कहे हैं ? ।

श्री सुधर्मा स्वामी बोले-हे जम्बू ! उपरोक्त महान् गुणोंसे युक्त

સ્વામી જિનવચનામૃતના અત્યન્ત પિપાસુ છે, સયમમા દૃઢ તેમજ નિયતવાસ રહિત અણગાર છે. શ્રી જમ્બૂસ્વામીનાં પૂછવાથી પૂર્વોકત ગુણોથી યુકત શ્રી સુધર્મા સ્વામી બોલ્યા-હે જમ્બૂ! ઉપરોકત ગુણોથી અલંકૃત નિર્વાણપદ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવન્ત મહાવીરે નવમા અંગ શ્રી અનુત્તરોપપાતિકદશાગ સૂત્રના ત્રણ વર્ગ કહ્યા છે અધ્યયનોનાં સમૂહને વર્ગ કહે છે.

પૂછેલા પ્રશ્નનો ગુરુદ્વારા યથાર્થ ઉત્તર પ્રાપ્ત કરી શ્રીજંબૂસ્વામીએ ફરી નવીન ઉત્સાહ તેમજ જિજ્ઞાસા સાથે વિનય સહિત શ્રી સુધર્માસ્વામીને પૂછયુ-

હે ભગવન્! મુકિતપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે નવમા અંગ શ્રી અનુત્તરોપપાતિક દશાંગના ત્રણ વર્ગ કહ્યા છે, તો હે ભગવન્! અનુત્તરોપપાતિક દશાગના પ્રથમ વર્ગના કેટલા અધ્યયન કહ્યાં છે?

શ્રી સુધર્મા સ્વામી બોલ્યા-હે જંબૂ! ઉપરોક્ત મહાન ગુણોથી યુકત, મુકિત-

प्तेन=सिद्धिगतिं गतेन, श्रमणेन=घोरपरिषहसहनशीलेन महावीरेण भगवता अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य प्रथमस्य वर्गस्य दशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि=निगदितानि। तद् यथा-यत्प्रकारं=यन्नामकम् अध्ययनं तत्प्रदर्श्यते-(१) जालिः (२) मयालिः (३) उपजालिः (४) पुरुषसेनः (५) वारिषेणः (६) दीर्घदन्तः (७) लष्टदन्तः (८) वेहल्लः (९) वैहायसः (१०) अभयोऽपि च कुमारः। अत्र कुमार इति प्रत्येकं संबध्यते-जालिकुमारो, मयालिकुमारः, इत्यादि। अनेनैव क्रमेणाध्ययनविषयो बोद्धव्यः, तथा च-जालिकुमाराध्ययनम्, मयालिकुमाराध्ययनमित्यादिक्रमेण दशाध्ययनानि कथितानीत्यर्थः।

अस्याङ्गस्याध्ययनेन जालिकुमारादिचरित्रावबोधनतस्तपःसंयमाराधने प्रवृत्तिर्भवति। तया चाष्टविधकर्मनिर्जरा जायते। तया च सकलकर्मक्षयस्ततश्च

मुक्तिप्राप्त, घोर परिषहों को सहन करने वाले श्रमण भगवान् महावीरने श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्र के प्रथम वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं। वे यहाँ बताए जाते हैं-(१) जालि (२) मयालि (३) उपजालि (४) पुरुषसेन (५) वारिषेण (६) दीर्घदन्त (७) लष्टदन्त (८) वेहल्ल (९) वैहायस (१०) और अभयकुमार।

यहाँ 'कुमार' शब्द का प्रत्येक के साथ सम्बन्ध करना चाहिये, जैसे-जालिकुमार, मयालिकुमार आदि। इसी क्रम से अध्ययनों का विषय जानना चाहिये, जैसे कि-जालिकुमार अध्ययन, मयालिकुमार अध्ययन आदि, इस क्रम से दशों अध्ययन कहे गये हैं।

इस अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्र के अध्ययन से अर्थात् जालिकुमार आदि कुमारों के चारित्रज्ञान से संयम तथा तप मार्ग में

પ્રાપ્ત ઘોર પરિષહોને સહન કરવાવાળા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે શ્રી અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રના પ્રથમ વર્ગના દશ અધ્યયન કહ્યા છે. તે અહીં બતાવે છે- (૧) જાલિ, (૨) મયાલિ, (૩) ઉપજાલિ, (૪) પુરુષસેન, (૫) વારિષેણ, (૬) દીર્ઘદન્ત, (૭) લષ્ટદાન્ત, (૮) વેહલ્લ, (૯) વૈહાયસ અને (૧૦) અભયકુમાર.

અહિં "કુમાર" શબ્દથી પ્રત્યેકને સબંધિત કરવા જોઈએ જેમ જાલિકુમાર મયાલિકુમાર આદિ. આજ ક્રમથી અધ્યયનોનો વિષય જાણવો જોઈએ જેમકે.- જાલિકુમાર અધ્યયન, મયાલિકુમાર અધ્યયન આદિ આ ક્રમથી દશેય અધ્યયન કહેલા છે

આ અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રના અધ્યયનથી અર્થાત્ જાલિકુમાર આદિ કુમારોના ચરિત્રજ્ઞાનથી સયમ તથા તપ માર્ગમાં પ્રવૃત્તિ થાય છે તપસંયમમાં

मोक्षप्राप्तिः । एवं चास्य शास्त्रस्य फलं मोक्षप्राप्तिर्विषयश्च जालिकुमारादिचरित्रमिति भव्यैरधिगन्तव्यम् ॥ सू० २ ॥

मूलम्–जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अनुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अनुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ सू० ३ ॥

छाया–यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन अनुत्तरोपपातिकदशानां प्रथमस्य वर्गस्य दशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्यानुत्तरोपपातिकदशानां श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? ॥ सू० ३ ॥

टीका–'जइ णं भंते' इत्यादि हे भदन्त !=हे भगवन् ! यदि खलु यावत् =पूर्वोक्तगुणवता संप्राप्तेन=मुक्तिं लब्धवता, श्रमणेन भगवता महावीरेण, अनुत्तरोपपातिकदशानाम्=अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य प्रथमस्य वर्गस्य दशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि=कथितानि, तत्र हे भदन्त ! अनुत्तरोपपातिकदशानाम्=अनुत्तरोपपातिकद-

---

प्रवृत्ति होती है । तप संयम में प्रवृत्ति होने से आठों ही प्रकार के कर्मों की निर्जरा होती है । निर्जरा से समस्त कर्म क्षीण होते हैं । समस्त कर्मों के क्षय होने पर परम पद (मोक्ष) की प्राप्ति होती है । उक्त प्रकारसे इस शास्त्रका फल मोक्ष प्राप्ति और विषय जालिकुमार आदि का चरित्र है, यह भव्य जनों को जानना चाहिये ॥सू. २॥

श्री जम्बू स्वामी पुनः प्रश्न करते हैं–'जइ णं भंते !' इत्यादि ।

हे भदन्त ! पूर्वोक्त गुणों से युक्त निर्वाणपदप्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने अनुत्तरोपपातिकदशांग सूत्र के प्रथम वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं तो हे भगवन् ! पूर्वोक्त गुणों से अलङ्कृत मुक्ति-

---

પ્રવૃત્તિ થવાથી આઠેય કર્મોની નિર્જરા થાય છે. નિર્જરાથી સમસ્ત કર્મક્ષીણ થાય છે. સમસ્ત કર્મ ક્ષય થવાથી પરમપદ (મોક્ષ) ની પ્રાપ્તિ થાય છે. ઉક્ત પ્રકારથી, આ શાસ્ત્રજ્ઞાનનું ફલ મોક્ષપ્રાપ્તિ અને વિષય જાલિકુમાર આદિનું ચરિત્ર છે. એમ ભવ્ય જીવોને જાણવું જોઈએ (સૂ० ૨)

શ્રી જમ્બૂસ્વામી ફરીથી પ્રશ્ન કરે છે:– 'जइ णं भंते' ઇત્યાદિ

હે ભદંત ! પૂર્વોક્ત ગુણોથી સંયુક્ત નિર્વાણપદ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રના પ્રથમ વર્ગના દશ અધ્યયન કહ્યાં છે. તો હે

शास्त्रस्य प्रथमस्याध्ययनस्य यावत् पूर्वोक्तगुणवता संप्राप्तेन=मुक्तिं लब्धवता, श्रमणेन भगवता महावीरेण कोऽर्थः प्रज्ञप्तः=कथितः ? । 'श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेने' त्यादिपदानां पुनः पुनः कथनं भगवद्भक्तिप्रकर्षमावेदयति । किञ्च-वाक्यभेदेन पुनरुक्तिर्न दोषाय भवति । अपरञ्च-'भगवद्गुणानां पुनः पुनरनुस्मरणं भव्यानां भवतु'-इतीच्छया पुनः पुनरुच्चारणं गुण एव । अन्यच्च-अन्यविषयेभ्यो मनः समाकृष्य विवक्षितविषयावधानार्थं पुनः पुनरुच्चारणम् । तीर्थंकरोक्तभावानां बहुशोऽनुकीर्तन-सम्यक्त्वतपः संयमादि विशुद्धपरिणामानां पुष्टिकरं, मोहव्याधिविनाशनं, रागादिविषहरं च भवति । यथा विषापहरणार्थं पुनः पुनरेक एव

प्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग के प्रथम अध्ययनका क्या अर्थ प्ररूपित किया है? अर्थात् उस में क्या वर्णन किया है ?

यहाँ प्रश्न करते हुए "पूर्वोक्त गुणो से संयुक्त" "मुक्ति-प्राप्त" "श्रमण भगवान् महावीर" आदि शब्दों का वारवार प्रयोग करना भगवान् के प्रति अत्यन्त भक्ति को व्यक्त करता है । अथवा वाक्यभेदसे वारवार कथन पुनरुक्ति दोष का कारण भी नहीं होता है, और अत्यन्त इच्छा एवं भक्ति के साथ भगवान् के गुणों का वारवार स्मरण करना गुण ही होता है। तथा दूसरे विषयों से मन को खींचकर किसी एक विषय पर सावधान करने के लिये वार२ उच्चारण किया जाता है ।

तीर्थङ्कर द्वारा कथित भावों का वार २ कथन, सम्यक्त्व, संयम और तप आदि विशुद्ध भावों को परिपुष्ट करने वाला, मोहरूपी भय-

ભગવાન્! પૂર્વોકત ગુણયુકત એવા શ્રી શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અનુત્તરોપપાતિકદશાંગના પ્રથમ અધ્યયનના શું અર્થ પ્રરૂપિત કર્યા છે ? અર્થાત્ તેમાં શું વર્ણન કર્યું છે ?

અહિં પ્રશ્ન કરતાં "પૂર્વોકત ગુણોથી યુકત" "મુકિત પ્રાપ્ત" "શ્રમણ ભગવાન મહાવીર" આદિ શબ્દોનો પ્રયોગ વારવાર કરવામાં આવ્યો છે તે ભગવાન પ્રત્યે અત્યન્ત ભકિતને વ્યકત કરે છે વાકયભેદથી વારવાર કથન પુનરુકિતદોષનું કારણ પણ થતું નથી, અને અત્યન્ત ઇચ્છા તેમજ ભકિત સાથે ભગવાનના ગુણોનું વારવાર સ્મરણ કરતા ગુણજ થાય છે તથા બીજા વિચારોથી મનને ખેચી કોઈ પણ એક વિષય પર મનને એકાગ્ર કરવા માટે વારવાર ઉચ્ચારણ કરવામા આવે છે

તીર્થંકરોદ્વારા કથિત ભાવોનું વારવાર કથન, સમ્યકત્વ સંયમ અને તપ આદિ વિશુદ્ધ ભાવોને પરિપુષ્ટ કરવાવાળું, મોહરૂપી ભયંકર વ્યાધિનો નાશ કરવાવાળું

मन्त्रः समुच्चार्यते, मन्त्रसिद्ध्यर्थं जपकर्मणि पुनः पुनरेक एव मन्त्रो जप्यते। व्याधिनिवृत्त्यर्थं तदेवौषधं पुनःपुनरासेव्यते, कर्मक्षयार्थं च तावेव तपःसंयमौ पुनःपुनरनुदिनं समाचर्येते, तदेवार्हद्भगवद्ध्यानं स्वात्मस्वरूपप्रकटनार्थं पुनः पुनरुपादीयते, तथैवादेशोपदेशगुणसंकीर्तनादावुक्तपदानां पुनःपुनरुच्चारणं शुभ-परिणामप्रवर्तकमशुभपरिणामनिवर्तकं च भवति। उपदेशप्रदानसमये तीर्थंकर-गणधराणामभिप्रायश्च भव्यानां तत्त्वज्ञानसंस्कारात्रिर्भावार्थं मोहव्याधिविनाशनार्थं रागविषापहरणार्थं च भवति। पुनःपुनरुच्चारणेन सम्यक्त्वादिगुणपोषणादिकं भवतीति तदावश्यकमेव ॥ सू० ३ ॥

क्रूर व्याधि को नष्ट करने वाला और रागादिरूपी विष को दूर करने वाला होता है। जिस प्रकार विष को दूर करने के लिये एक ही मन्त्र का उच्चारण वारवार किया जाता है, मन्त्रसिद्धि के लिये जप करते हुए एक ही मन्त्र का वार २ जप किया जाता है, रोग को दूर करने के लिये वही औषधि वार २ सेवन की जाती है, कर्म क्षय करने के लिये उसी तप-संयम की आराधना वार २ की जाती है, अपने आत्मस्वरूप को प्रगट करने के लिये उन्हीं परम प्रभु अरिहन्त आदि का वार २ ध्यान किया जाता है, उसी प्रकार आज्ञा, उपदेश तथा गुणकीर्तन आदि में उपरोक्त उन पदों का वार २ उच्चारण शुभफल-दायक तथा अशुभ का निवर्तक होता है, उपदेश देते हुए तीर्थङ्करों का तथा गणधरों का अभिप्राय भव्यजनों के तत्वज्ञान-संस्कारों को उत्पन्न करने के लिये, मोहरूपी व्याधिका विनाश करने के लिये और

અને રાગાદિરૂપી વિષને દૂર કરવાવાળુ હોય છે જેવી રીતે વિષને દૂર કરવા માટે એકજ મન્ત્રનુ ઉચ્ચારણ વારવાર કરાય છે, મન્ત્રસિદ્ધિ માટે જપ કરતા એકજ મન્ત્રનો વારવાર જપ કરવામા આવે છે, રોગને દૂર કરવા માટે એની એજ ઔષધીનું વારવાર સેવન કરવામાં આવે છે, કર્મક્ષય કરવા માટે તપ-સંયમની આરાધના વારંવાર કરવામા આવે છે, નિજ આત્મસ્વરૂપને પ્રગટ કરવા માટે પરમ પ્રભુ અરિહંત આદિનુ વારવાર ધ્યાન કરવામાં આવે છે, તેજ રીતે આજ્ઞા, ઉપદેશ તથા ગુણકીર્તન આદિમાં ઉપરોક્ત એ પદોનું વારવાર ઉચ્ચારણ શુભ ફલદાયી તથા અશુભ ફળને દૂર કરવાવાળું થાય છે ઉપદેશ દેતા તીર્થંકરો તથા ગણધરોના અભિપ્રાય-ભવ્યજનોના તત્વજ્ઞાનસંસ્કારોને ઉત્પન્ન કરવા માટે, મોહરૂપી વ્યાધિનો વિનાશ

मूलम्-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, रिद्धत्थिमियसमिद्धे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे, जालिकुमारो जहा मेहो, अट्ठओ दाओ, जाव उप्पिं पासाय० विहरइ, सामी समोसढे, सेणिओ निग्गओ, जहा मेहो तहा जाली वि निग्गओ, तहेव निक्खंतो जहा मेहो एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, गुणरयणं तवोकम्मं जहा चेव खंदगवत्तव्वया सा चेव चिंतणा, आपुच्छणा, थेरेहिं सद्धिं विउलं तहेव दुरुहइ, नवरं सोलसवासाइं सामण्ण-परियागं पाउणित्ता, कालमासे कालं किच्चा, उड्ढं चंदिमसोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए कप्पे नवकगेविज्जे विमाणपत्थडे उड्ढं दूरं वीइवइत्ता विजए विमाणे देवत्ताए उववण्णे ॥सू०४॥

छाया-एवं खलु जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरं ऋद्धस्तिमितसमृद्धं, गुणशिलकं चैत्यं, श्रेणिको राजा, धारिणी देवी, सिंहः स्वप्ने, जालिकुमारो, यथा मेघः, अष्टाष्टको दायः, यावदुपरि प्रासाद० विहरति। स्वामी समवसृतः। श्रेणिको निर्गतः=यथा मेघस्तथा जालिरपि निर्गतः। तथैव निष्क्रान्तः, यथा मेघः, एकादश अङ्गानि अधीते। गुणरत्ने तपःकर्म्म यथैव स्कन्दकवक्तव्यता सैव चिन्तना, आपृच्छना, स्थविरैः सार्द्धं विपुलं तथैव दूरोहति, नवरं (विशेषः)-षोडशवर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा कालमासे कालं कृत्वा ऊर्ध्वं चन्द्रमः-सौधर्म्मैशान-यावत्-आरणाच्युते कल्पे नवकग्रैवेयके विमानप्रस्तरे ऊर्ध्वं दूरं व्यतिक्रम्य विजये विमाने देवत्वेन उत्पन्नः ॥सू०४॥

राग रूपी विष को दूर करने के लिये होता है। बार बार उच्चारण से सम्यक्त्व आदि गुणोंका पोषण होता है, अतः उपरोक्त शब्दों का पुनः पुनः प्रयोग आवश्यक है ॥ सू० ३ ॥

કરવા માટે અને રાગરૂપી વિષને દૂર કરવા માટે હોય છે વારવાર ઉચ્ચારણથી સમ્યકત્વ આદિ ગુણોનું પોષણ થાય છે, એટલે ઉપરોકત શબ્દોનો વારવાર પ્રયોગ આવશ્યક છે. ॥ સૂ૦ ૩ ॥

टीका–जम्बूस्वामिनः पृच्छानन्तरं श्रीसुधर्मा स्वामी प्रावोचत्–'एवं खलु' इत्यादि ।

हे जम्बूः ! एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण खलु=निश्चयेन प्रथमाध्ययनस्यार्थो भगवता कथितः–तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरमासीत् । कीदृशं तन्नगरम् ? ऋद्धस्तिमितसमृद्धम्–ऋद्धं=नभःस्पर्शिबहुलप्रासादयुक्तं बहुलजनसंकुलं च, स्तिमितं=स्वपरचक्रभयरहितम् , समृद्धं=धनधान्यादिपरिपूर्णम् । तत्रेशानकोणे गुणशिलं=तन्नाम्ना प्रसिद्धं चैत्यम्=उद्यानमासीत् । तस्मिन नगरे श्रेणिकः=श्रेणिकनामा राजा=राजगृहनगराधिपतिः, तथा तस्य देवी=पट्टमहिषी धारिणी=धारिणीनाम्नी शीलादिगुणशालिनी चासीत् । तया कदाचित् शुभवेलायां स्वप्ने=स्वप्नावस्थायां सिंहः=मृगेन्द्रो दृष्टः । श्रेणिकभूपस्य धारिणीदेव्यां तत्स्वप्नदर्शनफलस्वरूपो जालिकुमारः पुत्रो जातः । यथा मेघः मेघकुमारवत्

श्री जम्बू स्वामी के पूछने के पश्चात् श्रीसुधर्मा स्वामी बोले–'एवं खलु' इत्यादि ।

हे जम्बू ! इस प्रकार निश्चय ही भगवानने प्रथम अध्ययन का निम्न अर्थ कहा है–उस काल उस समय में धन–धान्य–ऐश्वर्य–वैभव–सम्पन्न, अनेक गगनचुम्बी प्रासादों से अलङ्कृत तथा स्वपर-चक्रभयरहित 'राजगृह' नामका नगर था। उस नगरके ईशान कोणमें 'गुणशिल' नामक प्रसिद्ध उद्यान था । वहां 'श्रेणिक' नामका राजा था । उस की पटरानी का नाम 'धारिणी देवी' था, जो शील आदि गुणों से सुशोभित थी । उसने एक बार स्वप्न में सिंह देखा । राजा 'श्रेणिक' के पट्टमहिषी 'धारिणी देवी' के इस शुभ स्वप्न के फलस्वरूप 'जालिकुमार' नामक पुत्र उत्पन्न हुआ । मेघकुमार के

શ્રીજંબૂ સ્વામી તરફથી પ્રશ્ન થતા શ્રીસુધર્માસ્વામી બોલ્યા– 'एवं खलु' ઇત્યાદિ.

હે જંબૂ ! આ રીતે નિશ્ચયથી ભગવાને પ્રથમ અધ્યયનના નીચે મુજબ અર્થ કહ્યા છે–તે કાળ તે સમયમા ધન–ધાન્ય–ઐશ્વર્ય–વૈભવ–સમ્પન્ન, અનેક આકાશ-સ્પર્શી ભવનોથી શોભિત તથા સ્વપરચક્રભયરહિત, રાજગૃહ નામનુ નગર હતુ તે નગરના ઇશાન કોણમા ગુણશિલક નામનું પ્રસિદ્ધ ઉદ્યાન હતું. ત્યા શ્રેણિક નામે રાજા હતો, તેની પટરાણીનું નામ ધારણીદેવી હતું. જે શીલ આદિ ગુણોથી સુશોભિત હતી. તેણે એક વખત સ્વપ્નામા સિંહ જોયો. રાજા 'શ્રેણિક' ની પટ્ટરાણી 'ધારિણી દેવી' ને આ શુભ સ્વપ્નના ફળસ્વરૂપ 'જાલિકુમાર' નામે પુત્ર ઉત્પન્ન થયો. મેઘકુમા-

तस्य जन्म, पञ्चधात्रीभिः परिपालनं, द्वासप्ततिकलाध्ययनं, विवाहश्च, विवाहे-अष्टाष्टको दायः=अष्टाष्टसंख्यकः श्वश्रूश्वशुरप्रदत्तवस्त्राभरणरत्नयानादियौतुकसमूहो विज्ञेयः। स च-उपरि प्रासाद०=प्रसादवरगतः सन् पूर्वजन्मोपार्जितसुकृतफलं भुञ्जानो विहरती=क्रीडति स्म। तदा स्वामी समवसृतः। राजगृहनगरस्य गुणशिलकचैत्ये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्वामिनः समवसरणं बभूवेत्यर्थः।

श्रेणिकः=श्रेणिकभूपतिः भव्यहितकरं चरमतीर्थकरं सुवीरं सुधीरञ्जनपरं गुणगम्भीरं श्रीमहावीरं पञ्चाभिगमपुरस्सरं वन्दितुं चतुरङ्गसैन्यसहितः परिवार-परिवृतः, निर्गतः=निस्सृतः श्रीभगवतः समीपं समाजगाम।

समान ही जन्मोत्सव, पांच धाईयोंद्वारा लालन-पालन, बहत्तर कलाओं का अध्ययन तथा विवाह आदि कार्य सम्पन्न हुए। श्वशुर के द्वारा दहेज में वस्त्र, अलङ्कार, रत्न आदि आठ २ प्रकारकी वस्तुएँ मेघ-कुमार के समान ही इनको विवाह में प्राप्त हुई थीं। वह 'जालिकुमार' निजमहलों में अपने पूर्वजन्म के उपार्जित शुभ कर्मों के कारण अत्युत्तम गीतनृत्यादि पांच प्रकार के अनुपम विषयसुखों का अनुभव करता हुआ विचरता था। उस समय राजगृह के 'गुणशिलक' नामक उद्यान में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी पधारे।

राजा 'श्रेणिक' अपने समस्त परिवार तथा चतुरङ्गिनी सेना के साथ भव्यजनों का कल्याण करने वाले, भव्यजनों के मन को रञ्जन करने वाले, गुणगम्भीर, चरमतीर्थङ्कर श्रमण भगवान् महावीर का आगमन जानकर उन को वन्दन तथा नमस्कार करने के लिये

રની માફક જ જન્મોત્સવ, પાંચ ધાઈઓ દ્વારા લાલન પાલન, બહોતેર કળાઓનું અધ્યયન, તથા વિવાહ આદિ કાર્ય સંપન્ન થયા. શ્વશુર તરફથી દાયજામાં વસ્ત્ર, અલંકાર, રત્ન આદિ આઠ આઠ પ્રકારની વસ્તુઓ, મેઘકુમારની માફક જ તેમને લગ્નમા પ્રાપ્ત થઈ હતી. તે 'જાલિકુમાર' પોતાના મહેલોમા પૂર્વજન્મ-ઉપાર્જિત શુભ કર્મોને કારણે અત્યુત્તમ ગીતનૃત્યાદિ પાંચ પ્રકારનાં અનુપમ વિષયસુખોનો અનુભવ કરતા વિચરતા હતા તે સમયે રાજગૃહના 'ગુણશિલક' નામના ઉદ્યાનમાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર સ્વામી પધાર્યા.

રાજા 'શ્રેણિક' પોતાના સમસ્ત પરિવાર તથા ચતુરંગિણી સેના સાથે ભવ્ય જીવોનું કલ્યાણ કરવાવાળા, ભવ્યજનોના મનને રંજન કરવાવાળા, ગુણગંભીર, ચરમ તીર્થંકર શ્રમણ ભગવાન મહાવીરનું આગમન જાણી તેમને વન્દન નમસ્કાર કરવા-

यथा मेघस्तथा जालिरपि निर्गतः=यथा पूर्वं मेघकुमारः श्रीमहावीरं वन्दितुं निर्गतस्तत्र समाजगाम तथा जालिकुमारोऽपि नगराभ्रिस्सृत्य तत्र समाजगाम। मेघकुमारवदसौ भगवद्देशनाश्रवणसमनन्तरं सपदिसंजातवैराग्यवेगः सोत्कण्ठं मातापितरावापृच्छय सर्वप्राणिरक्षादक्षां मोक्षैकलक्षां दीक्षां कक्षीचकार।

यथा मेघ एकादशाङ्गान्यधीते=मेघकुमारवज्जालिकुमारोऽपि सामायिकमारभ्य आचाराङ्गादीनि एकादशाङ्गानि समधीतवान्।

ननु जालिकुमारादायः श्रीभगवत्समीपे प्रव्रज्यां गृहीत्वा एकादशाङ्गनामध्ययनं कृतवन्त इति कथं संभवति, एकादशाङ्गान्तर्गतस्य नवमाङ्गस्य नाम्नां

निकला और पांच अभिगमपूर्वक भगवान की सेवामें उपस्थित हुआ।

जिस प्रकार 'मेघकुमार' भगवान् को वन्दन-नमस्कार करने निकला था, उसी प्रकार 'जालिकुमार' भी भगवान् को वन्दन-नमस्कार करने के लिये नगरसे निकलकर भगवान जहाँ विराजित थे वहाँ आये। मेघकुमार के समान उनको भगवान की अनुपम धर्मदेशना सुनकर वैराग्य उत्पन्न हुआ। अपने माता-पिता को पूछ कर अत्यन्त उत्साह एवं उत्कट अभिलाषाके साथ सर्व प्राणियों को अभय प्रदान करने वाली, परमपद मोक्ष के प्रति एकलक्ष्य बनाने वाली दीक्षा ग्रहण की।

जिस प्रकार मेघकुमारने ग्यारह अङ्गोंका ज्ञान प्राप्त किया था उसी प्रकार 'जालिकुमार' ने भी सामायिक से लेकर आचाराङ्ग आदि ग्यारह अङ्गोंका ज्ञान प्राप्त किया।

માટે નીકળ્યા અને પાંચ અભિગમપૂર્વક ભગવાનની સેવાનાં ઉપસ્થિત થયા.

જેવી રીતે પહેલા 'મેઘકુમાર' ભગવાનને વન્દન-નમસ્કાર કરવા નીકળ્યા હતા તેજ રીતે 'જાલિકુમાર' પણ ભગવાનને વન્દન-નમસ્કાર કરવા માટે નગરથી નીકળી ભગવાન જ્યા બિરાજતા હતા ત્યાં આવ્યા.

'મેઘકુમાર' ની માફક ભગવાનની અનુપમ ધર્મદેશના સાભળી તેઓને વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થયો. પોતાના માતાપિતાને પૂછી અત્યન્ત ઉત્સાહ તેમજ ઉત્કૃષ્ટ અભિલાષાની સાથે સર્વ પ્રાણિઓને અભય પ્રદાન કરવાવાળી, પરમપદ મોક્ષ તરફ એક લક્ષ્ય બનાવવાવાળી દીક્ષા ગ્રહણ કરી,

જે રીતે મેઘકુમારે અગ્યાર અંગોનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યું હતું. તેજ રીતે 'જાલિકુમારે' પણ સામાયિકથી લઇને આચારાંગ આદિ અગ્યાર અંગોનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યું.

इदमेव प्रस्तुतमङ्गमुपलभ्यते, जालिकुमारादीनां स्वकीयचरित्र प्रतिपादकस्यास्य प्रस्तुतस्य शास्त्रस्य तदानीमविद्यमानतया तदध्ययनविषयताया असंभवात् ? इति चेदुच्यते-एषा द्वादशाङ्गी अर्थरूपेण ध्रुवा, नित्या, शाश्वती च। मोक्षोपपयोगिश्रुतचारित्रनिरूपणार्थं प्रवृत्तेन भगवता तत्तत्समयोपयोगि केवलं हेतुदृष्टान्त-स्वरूपमन्यदन्यत्संगृहीतं, लक्ष्यं तु मोक्षप्राप्तिकरं श्रुतचारित्रं न कचिद् विभिन्नतयो-

यहाँ प्रश्न उत्पन्न होता है कि-'जालिकुमार' आदि राजकुमारों ने भगवान से दीक्षा ग्रहण की, तथा उनके ही समीप ग्यारह अङ्गोंका अध्ययन किया, यह बात कैसे सम्भव हो सकती है ?; क्यों कि यह नवमा अंगसूत्र ग्यारह अङ्गों के अन्तर्गत हो जाता है, जिसका विषय स्वयं जालिकुमार आदि राजकुमारों का जीवन वृत्तान्त ही है। अतः जालि कुमार आदि राजकुमारों का अपने ही चरित्र के निरूपक इस अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्र के उस समय अनुपलब्ध होनेसे इस अङ्गका अध्ययन (पढना) सर्वथा असम्भव है अर्थात् उनके अध्ययन विषय की बात कैसे सम्भव हो सकती है ?

इसका प्रत्युत्तर यह है कि-यह द्वादशाङ्गी अर्थरूपसे ध्रुव, नित्य एवं शाश्वत है, परन्तु मोक्षोपयोगी श्रुत चारित्रका निरूपण करने में प्रवृत्त सभी तीर्थङ्करोंने उस-उस समय के उपयोगी केवल हेतु और दृष्टान्त का स्वरूप जुदी-जुदी तरहसे संकलित किया है, किन्तु मोक्ष प्राप्ति कराने वाले श्रुतचारित्ररूप लक्ष्य का भिन्नरूपसे कहीं

અહિં પ્રશ્ન ઉત્પન્ન થાય છે કે-'જાલિકુમાર' આદિ રાજકુમારોએ ભગવાન પાસે દીક્ષા લીધી તથા તેમનીજ પાસે અગ્યાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું હતું, આ વાત કેવી રીતે સંભવિત હોઈ શકે છે ? કેમકે આ નવમું અંગસૂત્ર અગ્યાર અંગોની અન્તર્ગત થઈ જાય છે જેનો વિષય સ્વયં જાલિકુમાર આદિ રાજકુમારોના જીવન વૃત્તાન્તજ છે એટલે જાલિકુમાર આદિ રાજકુમારોના પોતાનાજ ચરિત્રને નિરૂપણ કરવાવાલા આ અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્ર તે સમયે અનુપલબ્ધ હોવાથી આ અંગનો અધ્યયન (ભણવું) સર્વથા અસંભવ છે, અર્થાત્ તેમના અધ્યયન (ભણવા) વિષયની વાત કેવી રીતે સંભવિત થઈ શકે છે ?

એનો પ્રત્યુત્તર આ છે કે-આ દ્વાદશાંગી અર્થરૂપથી ધ્રુવ, નિત્ય અને શાશ્વત છે. પણ મોક્ષોપયોગી શ્રુત ચારિત્રનું નિરૂપણ કરવામાં પ્રવૃત્ત સર્વે તીર્થંકરોએ તે તે સમયને ઉપયોગી ફક્ત હેતુ અને દૃષ્ટાંન્તનું સ્વરૂપ જુદી જુદી રીતે સંકલિત કરેલ છે પરન્તુ મોક્ષ પ્રાપ્તિ કરાવવાવાળા શ્રુત-ચારિત્રરૂપ લક્ષ્યનો જુદી રીતે કયાંય

पदिष्टम् । अत एवास्य श्रुतचारित्रस्वरूपस्यैकरूपेणाऽनादिकालतः प्रवृत्ततया ध्रुवत्वं नित्यत्वं शाश्वतिकत्वं च सिद्धयति द्वादशाङ्गयः, उक्तञ्च—

'इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च भवइ य, भविस्सइ य, धुवे नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे । " (नन्दी)

" इत्येष द्वादशाङ्गोगणिपिटको न कदाचिन्नासीत्, न कदाचिन्न भवति, न कदाचिन्न भविष्यति, अभूच्च भवति च, भविष्यति च, ध्रुवो, नियतः शाश्वतः अक्षयः अव्ययः अवस्थितः नित्यः।" इतिच्छाया।

हेतुदृष्टान्तानां तु श्रुतचारित्रपरिपोषकतया तीर्थङ्करैः समये समये स्वशिष्यप्रतिबोधानुकूलतया तेषां भिन्नरूपेण प्रदर्शनं कृतमिति नास्ति कस्याश्चिदाशङ्काया अवसर इति। अत एव ज्ञाताधर्मकथाङ्ग मेघकुमारस्य, विपाकसूत्रे सुबाहु-

भी उपदेश नहीं किया, अत एव इस श्रुतचारित्र के स्वरूपकी समानरूपसे अनादिकालिक प्रवृत्ति होने के कारण इस द्वादशाङ्गीका ध्रुवत्व, नित्यत्व, एवं शाश्वतिकत्व सिद्ध होता है । कहा भी है–

"यह बारह अङ्गरूप गणिपिटक (आचार्य की पेटी)न कभी था, न है, और न कभी रहेगा, ऐसी बात नहीं है । परन्तु यह था, है, और रहेगा, क्यों कि यह ध्रुव है, नियत है, शाश्वत है, अक्षय है, अव्यय है, अवस्थित है और नित्य है" (नन्दी) ।

हेतु और दृष्टान्त-श्रुत चारित्र का परिपोषक है, इस कारण तीर्थङ्करोंने समय समय पर अपने शिष्यों के प्रतिबोधकी अनुकूलता को लेकर उनका भिन्न-भिन्नरूपसे कथन किया है, अतः यहां अब शङ्का का कोई स्थान नहीं रहता। इसलिये ज्ञाताधर्मकथाङ्ग में मेघ-

પણ ઉપદેશ કરેલ નથી, એટલે આ શ્રુત—ચારિત્રના સ્વરૂપની સમાનરૂપથી અનાદિકાળની પ્રવૃત્તિ હોવાને કારણે આ દ્વાદશાંગીનું ધ્રુવત્વ નિત્યત્વ અને શાશ્વતિકત્વ સિદ્ધ થાયછે

તેમજ કહ્યુ પણ છે કે–"આ બાર અંગરૂપ ગણિપિટક (આચાર્યની પેટી) ક્યારેક પણ ન હતી અત્યારે પણ નથી અને ક્યારેય નહિ હોય તેમ નથી, પણ તે હતી, છે અને રહેશે, કેમકે આ પેટી ધ્રુવ છે નિયત છે, શાશ્વત છે, અક્ષય છે, અવ્યય છે અવસ્થિત છે અને નિત્ય છે." (નન્દી)

હેતુ અને દૃષ્ટાન્ત શ્રુતચારિત્રના પરિપોષક હોવાથી તીર્થંકરોએ પ્રત્યેક સમયે પોતપોતાના શિષ્યોને પ્રતિબોધવા અનુકૂળતાનુસારે તેનું જુદી જુદી રીતે કથન કરેલ છે, એટલે અહીં હવે શંકાને કોઈ સ્થાન રહેતુ નથી, તેથી જ્ઞાતાધર્મકથાંગમાં

कुमारादीनां, अन्तकृतदशाङ्ग गौतमकुमारादीनां तथा कालीमहाकालीप्रभृति-साध्वीनां चैकादशाङ्गाध्ययनं संगच्छते ।

गुणरत्नं तपःकर्मेति । जालिकुमारस्य मेघकुमारवत् गुणरत्नाख्यतपः-कर्मानुष्ठानम् । स्कन्दकऋषिवत् सर्वा वक्तव्यता, सैव चिन्तना=तद्वद्धर्मचिन्तना, आपुच्छना=तथैवानशनव्रतावरणार्थमनुज्ञामाप्तये भगवतः प्रार्थना । स्कन्दकवदेव च स जालिरनगारः स्थविरैः सार्द्धं विपुलगिरिं समारुरोह । नवरं=एतावानेव तस्माद्विशेषः–यदयं षोडश वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं=चारित्रं पालयित्वा कालमासे=

कुमार, विपाक सूत्रमें सुबाहुकुमार आदि, अन्तकृतदशाङ्ग सूत्रमें गौतमकुमार आदि, और काली-महाकाली आदि साध्वियों के ग्यारह अङ्गो का अध्ययन (पढना) सङ्गत होता है ।

मेघकुमार के समान जालिकुमारने भी गुणरत्न नामक तप का आराधन किया । इस तप की विधि इस प्रकार है–

प्रथम मास में एकान्तर उपवास, द्वितीय मास में बेले – बेले पारणा, तीसरे महीने में तेले – तेले पारणा, इस प्रकार सोलहवें महीने में सोलह – सोलह उपवास के अनन्तर पारणा, इसी क्रमसे पुनः उतरते हुए एकान्तर उपवास तक किया जाता है । दिन में उत्कुटुकासनसे सूर्यकी आतापना ले, रात्रि में मुखवस्त्रिका चोलपट्टक सिवाय प्रावरणरहित वीरासन से ध्यान करे । इस में तप के दिन ४०७, पारणेके दिन ७३, कुल ४८० दिन होते हैं । इस क्रमसे सोलह मास में यह तप पूर्ण होता है ।

મેઘકુમાર, વિપાકસૂત્રમા સુબાહુકુમાર આદિ, અન્તકૃતદશાંગસૂત્રમા ગૌતમકુમાર આદિ તથા કાલી મહાકાલી આદિ સાધ્વિઓને અગ્યાર અ ગોનું અધ્યયન (ભણવુ) સ ગત થાય છે

મેઘકુમારની માફક જાલિકુમારે પણ ગુણરત્ન નામે તપનુ આરાધન કર્યું એ તપની વિધિ આ રીતે છે :-પ્રથમ મહિનામા એકાન્તર ઉપવાસ, બીજા મહિનામા છટ્ઠને પારણે છટ્ઠ, ત્રીજામાં અટ્ઠમને પારણે અટ્ઠમ એ રીતે સોળમે મહિને સોળ સોળ ઉપવાસે પારણું, એજ ક્રમથી પાછા ઉતરતા એકાન્તર ઉપવાસ સુધી કરવામાં આવે છે. દિવસે ઉત્કુટુકાસને (ઉકડુઆસને) સૂર્યની આતાપના લે રાત્રિમા મુખ-વસ્ત્રિકા ચોલપટ્ટક સિવાય પ્રાવરણ રહિત થઈ વીરાસને બેસી ધ્યાન કરે આ પ્રમાણે આ તપમા તપ દિવસ ૪૦૭ તથા પારણાના દિવસ ૭૩ કુલ ૪૮૦ દિવસ થાય છે એ ક્રમે સોળ માસમા આ તપ પૂર્ણ થાય છે.

मृत्युसमये कालं कृत्वा=औदारिकशरीरं परित्यज्य ऊर्ध्वम्=ऊर्ध्वगतिं प्राप्नुवन् चन्द्रादारभ्य सौधर्मेशानादि यावदारणाच्युतं कल्पं गच्छन् नवग्रैवेयकविमानप्रस्तरा दूर्ध्वं दूरं व्यतिक्रम्य=समुल्लङ्घ्य विजये=विजयाख्ये विमाने=अनुत्तरविमाने देवत्वेन=वैमानिकदेवत्वेन उपपन्नः=उपपाताख्यं जन्म प्राप्तवान ॥ सू० ५ ॥

मूलम्–तए णं ते थेरा भगवंतो जालि अणगारं कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, काउस्सग्गं करित्ता पत्तचीवराइं गिण्हंति, गिण्हित्ता तहेव ओयरंति, जाव 'इमे से आयारभंडए भंते !' त्ति भगवं गोयमे जाव एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं अंतेवासी जालिनामं अणगारे पगइभद्दए, से णं जाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववण्णे ?, एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी तहेव जहा खंदयस्स जाव कालमासे कालं

स्कन्दक ऋषि के समान चिन्तना, पुच्छना, तथा अनशन आदि व्रत के लिये भगवान की आज्ञा प्राप्त करना आदि सब वर्णन जान लेना, और स्कन्दक ऋषि के समान ही ये जालिकुमार अनगार स्थविरों के साथ विपुलगिरि पर गए। यहाँ विशेष यह समझें कि–इन्हों ने सोलह वर्ष चारित्र का पालन कर अन्त समय औदारिक शरीरको त्याग कर ऊर्ध्वगति करते हुए चन्द्रमा से लेकर सौधर्म, ईशान आदि आरण, अच्युत पर्यंत बारह ही देवलोक तथा नव ग्रैवेयक विमानों को उल्लङ्घन कर 'विजय' नामक अनुत्तर विमान में वैमानिक देवतारूपसे उत्पन्न हुए ॥ सू० ५ ॥

સ્કન્દક ઋષિની માફક, ચિન્તના, પૃચ્છના તથા અનશન આદિ વ્રત માટે ભગવાનની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરવી આદિ સર્વ વર્ણન જાણવું, અને સ્કન્દક ઋષિની માફક જ એ જાલિકુમાર અણગાર સ્થવિરોની સાથે વિપુલાચલ પર્વત ઉપર ગયા. અહીં વિશેષ આટલુ જાણવું કે એઓએ સોળ વર્ષ ચારિત્રપાલન કરી અન્ત સમયમાં ઔદારિક શરીરને છોડી ઉર્ધ્વગતિ કરતાં ચન્દ્રમાથી લઇ સૌધર્મ ઇશાન આદિ આરણ અચ્યુત પર્યંત બારેય દેવલોક તથા નવ ગ્રૈવેયક વિમાનોને ઓલંઘી 'વિજય' નામે અનુત્તર વિમાનમાં વૈમાનિક દેવ રૂપે ઉત્પન્ન થયા. (સૂ૦ ૫)

किच्चा उड्ढं चंदिम जाव विजए विमाणे देवत्ताए उववण्णे। जालिस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। से णं भंते! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?, गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति । एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सू० ६ ॥

छाया–ततःखलु ते स्थविरा भगवन्तो जालिमनगारं कालगतं ज्ञात्वा परिनिर्वाणप्रत्ययिकं कायोत्सर्गं कुर्वन्ति, कायोत्सर्गं कृत्वा पात्रचीवराणि गृह्णन्ति, गृहीत्वा तथैवावतरन्ति यावत् 'इमानि तस्याचारभाण्डानि भदन्त !' इति भगवान् गौतमः यावदेवमवादीत्–

एवं खलु देवानुप्रियाः! युष्माकमन्तेवासी जालिनामानगारः प्रकृतिभद्रकः, स खलु जालिरनगारः कालमासे कालं कृत्वा क गतः! क्वोपपन्नः?। एवं खलु गौतम ! ममान्तेवासी तथैव यथा स्कन्दकस्य यावत्कालमासे कालं कृत्वा ऊर्ध्वं चन्द्रमः–यावद् विजये विमाने देवत्वेन उपपन्नः ।

जालेः खलु भदन्त! देवस्य कियत्कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता?, गौतम ! द्वात्रिंशत्सागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता । स खलु भदन्त ! तस्माद् देवलोकादायुःक्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण चयं त्यक्त्वा क गमिष्यति, क्वोपपत्स्यते ? गौतम ! महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति५। एवं खलु जम्बूः! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन अनुत्तरोपपातिकदशानां प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः ॥सू० ६॥

टीका–'तए णं ते इत्यादि–ततः=जालिकुमारस्य शरीरपरित्यागानन्तरं खलु=निश्चयेन ते=जालिकुमारसमीपवर्तिनो भगवन्तः स्थविरा जालिमनगारं

'तए णं ते' इत्यादि । जालिकुमार के शरीर छोडने पर उनके समीपवर्ती स्थविरोंने जालिकुमार अनगार को कालगत हुआ

'तए णं ते' ઇત્યાદિ
જાલિકુમારના શરીર છુટયા બાદ તેમના સમીપવર્તી સ્થવિરોએ જાલિકુમાર અણગારને કાલગત થયા જાણી પરલોકગમનહેતુક કાયોત્સર્ગ કર્યો તદનન્તર જાલિકુમારના

कालगतं ज्ञात्वा परिनिर्वाणप्रत्ययिकं=परलोकगमनहेतुकं कायोत्सर्गं कृतवन्तः। कायोत्सर्गं कृत्वा पात्रचीवराणि–पात्राणि=भिक्षापात्रादीनि, चीवराणि=वस्त्राणि-सदोरकमुखवस्त्रिकाचोलपट्टकशाटिकारजोहरणादीनि धर्मोपकरणानि जगृहुः, गृहीत्वा च तथैव विपुलगिरितटादवतरन्ति, अवतीर्णाः यावत्–भगवत्समीपमागत्याऽब्रुवन् हे भगवन्! इमानि तस्य परलोकगतस्य जालेरनगारस्य आचारभाण्डानि=धर्मोपकरणानि सन्ति। ततः 'भदन्त! इति'=हे भगवन्! इति सविनयं भगवन्तं स्वाभिमुखीकृत्य भगवान् गौतमः यावत्–भगवन्तं पर्युपासीन एवं=वक्ष्यमाणरीत्याऽवादीत्—

एवं खलु=निश्चयेन हे देवानुप्रियाः युष्माकमन्तेवासी=शिष्य जालिनामा अनगारः प्रकृतिभद्रकः=स्वभावेनैवोपशान्तकषाय आसीत्। स खलु जालिरनगारः कालमासे=आयुषोऽवसानकाले कालं कृत्वा=औदारिकशरीरं त्यक्त्वा क्व गतः? क्वोपपन्नः?=कस्मिन् स्थाने जन्म प्राप्तः? भगवानाह -हे गौतम!

जानकर परलोकगमन–हेतुक कायोत्सर्ग किया, तदनन्तर जालिकुमार के पात्र–भिक्षापात्र आदि, वस्त्र – दोरासहित मुखवस्त्रिका, चोलपट्ट, चादर, रजोहरण आदि धर्मोपकरण लेकर विपुलाचल पहाडसे उतरे और भगवान महावीर स्वामी की सेवा में उपस्थित हुए, तथा वन्दन नमस्कार कर इस प्रकार बोले– हे भगवन्! कालप्राप्त जालिकुमार अनगार के ये धर्मोपकरण हैं।

इस के बाद 'हे भगवन्!' ऐसा सम्बोधन करके भगवान गौतमस्वामी श्रमण भगवान महावीर से अत्यन्त विनय के साथ इस प्रकार पूछने लगे– हे भगवन्! देवताओं द्वारा सेवित, भद्र–प्रकृतिवाले, आपके सुशिष्य जालिकुमार अनगार काल करके कहां गये? तथा कहाँ उत्पन्न हुए?।

પાત્ર–ભિક્ષાપાત્ર આદિ, વસ્ત્ર–દોરાસહિત મુખવસ્ત્રિકા, ચોલપટ્ટ, ચાદર, રજોહરણ આદિ ધર્મોપકરણ લઈને વિપુલાચલ પહાડથી ઉતરી ભગવાન મહાવીર સ્વામીની સેવામા ઉપસ્થિત થયા, અને વન્દન નમસ્કાર કરી આ પ્રમાણે બોલ્યા. હે ભગવન્! કાલપ્રાપ્ત જાલિકુમારના આ ધર્મોપકરણો છે. ત્યારબાદ હે ભગવન્! એવું સમ્બોધન કરી ભગવાન ગૌતમ સ્વામી શ્રમણ ભગવન્ત મહાવીરને અત્યન્ત–વિનય–સહિત આ પ્રમાણે પૂછવા લાગ્યા–હે ભગવન્! દેવતાઓ દ્વારા સેવિત ભદ્રપ્રકૃતિવાળા આપના સુશિષ્ય જાલિકુમાર અણગાર કાળ કરીને ક્યાં ગયા? અને ક્યાં ઉત્પન્ન થયા?

एवं खलु ममान्तेवासी=शिष्यः जालिरनगारः यथास्कन्दकस्य=स्कन्दकऋषिवत् त्यक्तौदारिकशरीरः ऊर्ध्वगतिं प्राप्नुवन् चन्द्रादारभ्य यावद् विजये विमाने देवत्वेनोपपन्नः ।

गौतमः पृच्छति-भगवन् । जालेः खलु देवस्य विजयविमाने कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता । भगवानाह-हे गौतम ! जालिदेवस्य स्थितिस्तत्र द्वात्रिंशत्सागरोपमानि प्रज्ञप्ता ।

गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! स खलु जालिदेवः आयुःक्षयेण=देवायुषः क्षयेण, भवक्षयेण=देवभवच्यवनेन, स्थितिक्षयेण=विजयविमाने द्वात्रिंशत्सागरोपमस्थितिक्षयेण च पश्चात्तस्मात्=विजयविमानाख्याद्देवलोकात् प्रच्युतः क्व गमिष्यति? क्व पुनरुपपत्स्यते?। भगवान् कथयति-हे गौतम ! महाविदेहे वर्षे=महाविदेहक्षेत्रे सेत्स्यति=सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं प्राप्स्यति ।

भगवान महावीर कहते हैं:-हे गौतम ! मेरा सुशिष्य जालिकुमार अनगार स्कन्दक ऋषि के समान अपने इस औदारिक शरीर को छोडकर चन्द्र आदि बारहों देवलोक और नव ग्रैवेयक को उल्लङ्घन कर विजयनामक अनुत्तर विमान में उत्पन्न हुआ है।

श्री गौतम स्वामी पुनः प्रश्न करते हैं-हे भगवन् ! विजय विमान में जालिकुमार देवकी कितनी स्थिति है ? भगवानने कहा-हे गौतम ! बत्तीस सागरोपमकी स्थिति है। गौतमस्वामी-हे भगवन् ! जालिकुमार देव, अपनी देव-सम्बन्धी आयु, भव और स्थितिको समाप्तकर कहाँ जायेंगे ? तथा कहाँ उत्पन्न होंगे ?'

भगवान-हे गौतम ! महाविदेहक्षेत्रमें जन्म लेकर वहाँ से सिद्धिगतिनामक स्थान को प्राप्त करेगा, अर्थात् अपने समस्त कर्मों को क्षय करके मोक्षमें जायेगा।

ભગવાન મહાવીર કહે છે,-હે ગૌતમ! મારા સુશિષ્ય જાલિકુમાર અણગાર સ્કન્દક ઋષિની જેમ પોતાના ઔદારિક શરીરને છોડી ચન્દ્ર આદિ બારેય દેવલોક અને નવ ગ્રૈવેયકને ઓળંગી વિજય નામના પહેલા અનુત્તરવિમાનમાં ઉત્પન્ન થયો છે

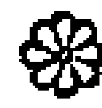
શ્રી ગૌતમસ્વામી પુનઃ પ્રશ્ન કરે છે- હે ભગવન્! વિજય વિમાનમાં જાલિકુમાર દેવની કેટલી સ્થિતિ છે? ભગવાને કહ્યું -હે ગૌતમ! બત્રીસ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

શ્રી ગૌતમસ્વામી-હે ભગવન્! જાલિકુમારદેવ પોતાની દેવસમ્બન્ધી આયુ, ભવ અને સ્થિતિને પૂર્ણ કરી ક્યાં જશે? તથા ક્યાં ઉત્પન્ન થશે?

अथ सुधर्मस्वामी जम्बूस्वामिनं प्रति प्रणिजगाद-

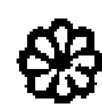
हे जम्बूः ! एवं खलु=उक्तरीत्या श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् उक्तसकलविशेषणविशिष्टेन संप्राप्तेन=सिद्धिगतिगतेन अनुत्तरोपपातिकदशानाम् =अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्य अयं=पूर्वप्रतिपादितः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः=कथितः ॥ सू० ६ ॥

अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गसूत्रस्यार्थबोधिन्याख्यायां व्याख्यायां प्रथमं जालिकुमाराख्यमध्ययनं समाप्तम् ॥१॥



श्री सुधर्मा स्वामी श्री जम्बू स्वामी के प्रति कहते हैं:-हे जम्बू ! पूर्वोक्त समस्त गुणों से युक्त मुक्तिप्राप्त श्रमण भगवान महावीरने अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्रके प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ कहा है ।

श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्रकी अर्थबोधिनीनामक टीका के हिन्दी अनुवाद का प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

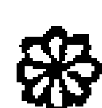


ભગવાન કહે છે-હે ગૌતમ! મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ લઈને ત્યાંથી સિદ્ધિગતિ નામે સ્થાનની પ્રાપ્તિ કરશે, અર્થાત્ પોતાના સમસ્ત કર્મોનો ક્ષય કરી મોક્ષમાં જશે

શ્રી સુધર્મા સ્વામી શ્રી જમ્બૂસ્વામી પ્રત્યે કહે છે :-

હે જમ્બૂ! પૂર્વોકત સમસ્ત ગુણોથી યુકત મુકિતપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સુત્રના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પ્રમાણે અર્થ કહેલ છે.

'શ્રી અનુત્તરોપપાતિક સૂત્ર'-ની 'અર્થબોધિની' નામની ટીકાના 'ગુજરાતી અનુવાદ' નું પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત.



मूलम्—एवं सेसाण वि नवण्हं भाणिअव्वं, णवरं सत्त धारिणीसुया, वेहल्लवेहासा चिल्लणाए, अभए णंदाए। आइल्लाणं पंचण्हं सोलसवासाइं सामण्णपरियाओ, तिण्हं बारस वासाइं, दोण्हं पंचवासाइं। आइल्लाणं पंचण्हं आणुपुव्वीए उववाओ विजए, वेजयंते, जयंते, अपराजिते, सव्वट्ठसिद्धे। दीह दंते सव्वट्ठसिद्धे। उक्कमेणं सेसा, अभओ विजए, सेसं जहा पढमे। अभयस्स नाणत्तं—रायगिहे णयरे सेणिए राया, नंदा देवी माया, सेसं तहेव। एवं खलु जम्बू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पणत्ते ॥सू०१॥

छाया- एवं शेषाणामपि नवानां भणितव्यं, नवरं (विशेषः)—सप्त धारिणीसुताः, वेहल्लवैहायसौ चेल्लनायाः, अभयो नन्दायाः। आद्यानां पञ्चानां षोडशवर्षाणि श्रामण्यपर्यायः। त्रयाणां द्वादशवर्षाणि, द्वयोः पञ्च वर्षाणि। आद्यानां पञ्चानामानुपूर्व्योपपातः=विजये, वैजयन्ते, जयन्ते, अपराजिते, सर्वार्थसिद्धे। दीर्घदन्तः सर्वार्थसिद्धे, उत्क्रमेण शेषाः, अभयो विजये। शेषं यथा प्रथमे।

अभयस्य नानात्वं—राजगृहं नगरं, श्रेणिको राजा, नन्दादेवी माता, शेषं तथैव। एवं खलु जम्बूः! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन, अनुत्तरोपपातिकदशानां प्रथमस्य वर्गस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः ॥ सू० १ ॥

॥ इति प्रथमो वर्गः समाप्तः ॥१॥

टीका—'एवं इत्यादि। एवम् उक्तरीत्या जालिकुमारवत् शेषाणामपि नवानां मयालिप्रभृतिनां कुमाराणां भणितव्यं=वर्णनं वक्तव्यम्। नवरमिति

'एवं' इत्यादि।

इस प्रकार जालिकुमार के तुल्य ही शेष मयालि आदि नवों राजकुमारों का जीवन-वृत्तान्त जानना चाहिये। यहाँ विशेष यह है

'एवं' ઇત્યાદિ

આ રીતે જાલિકુમારની માફક શેષ મયાલિ આદિ નવે રાજકુમારોનાં જીવનવૃત્તાન્ત

विशेषार्थवाचकमव्ययम् ततो दशसु कुमारेषु खल्वेतावान् विशेषः—सप्त—१ जालि २ मयालिः, ३ उपयालिः, ४ पुरुषसेनः, ५ वारिषेणः, ६ दीर्घदन्तः, ७ लष्टदन्तश्चैते सप्त धारिणीपुत्राः। वेहल्ल—वैहायसौ, इमौ द्वौ चेल्लनायाः पुत्रौ। अभयश्च नन्दायाः पुत्र आसीत्। आद्यानां पञ्चानां जालिकुमारादिवारिषेण पर्यन्तानां श्रामण्यपर्यायः=चारित्रपर्यायः षोडश वर्षाणि। त्रयाणां=दीर्घदन्त-लष्टदन्त वेहल्लानां श्रामण्यपर्यायो द्वादश वर्षाणि। द्वयोः=वैहायसस्य, अभयस्य च श्रामण्यपर्यायः पञ्च वर्षाणि। तथा आद्यानां=पञ्चानां=जालिकुमारस्य, मयालिकुमारस्य उपयालिसकुमारस्य, पुरुषसेनस्य, वारिषेणस्य च आनुपूर्व्या=अनुक्रमशः विजये, वैजयन्ते, जयन्ते, अपराजिते सर्वार्थसिद्धे च विमाने=तत्तदाख्ये विमाने उपपातः=उत्पत्तिर्बभूव। दीर्घदन्तः सर्वार्थसिद्धे उत्पन्नः। उत्क्रमेण=पश्चानुपूर्व्या शेषाः—अपराजिते लष्टदन्तः, जयन्ते वेहल्लः, वैजयन्ते

कि—इन दस कुमारों में—१ जालि, २ मयालि, ३ उपयालि, ४ पुरुषसेन, ५ वारिषेण, ६ दीर्घदन्त, और ७ लष्टदन्त, ये सात धारिणी रानी के, वेहल्ल और वैहायस ये दो चेलणा के पुत्र हैं। अभय-कुमार महारानी 'नन्दा' के पुत्र हैं। जालिकुमार से वारिषेण पर्यन्त पांच राजकुमारोंने सोलह वर्ष, दीर्घदन्त, लष्टदन्त और वेहल्ल इन तीन राजकुमारोंने बारह वर्ष, वैहायस और अभयकुमारने पांच पांच वर्ष संयम पालन किया। जालिकुमार, मयालिकुमार, उपयालिकुमार पुरुषसेन और वारिषेणकुमार, ये पांच क्रमशः—विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्ध में उत्पन्न हुए। दीर्घदन्त सर्वार्थसिद्ध में उत्पन्न हुए। शेष तीन पश्चानुपूर्वीसे अपराजित आदि विमानों में

જાણવાં અહિ વિશેષ એમ સમજવું કે આ દશ કુમારોમા ૧ જાલિ, ૨ મયાલિ, ૩ ઉપયાલિ, ૪ પુરુષસેન, ૫ વારિષેણ, ૬ દીર્ઘદન્ત અને ૭ લષ્ટદન્ત, એ સાત ધારીણી રાણીના, વેહલ્લ અને વૈહાયસ એ બે ચેલ્લણાના પુત્ર છે અભયકુમાર મહારાણી નન્દાનો પુત્ર છે જાલિકુમારથી વારિષેણ સુધી પાંચ રાજકુમારોએ સોળ વર્ષ, દીર્ઘદન્ત, લષ્ટદન્ત, અને વેહલ્લ, એ ત્રણે બાર વર્ષ અને વૈહાયસ તથા અભયકુમાર, એ બે પાંચ પાંચ વર્ષ સુધી સયમ પાલન કર્યું જાલિકુમાર, મયાલિકુમાર, ઉપયાલિકુમાર, પુરુષસેન, અને વારિષેણકુમાર એ પાંચ ક્રમશઃ વિજય, વૈજયન્ત, જયન્ત, અપરાજિત અને સર્વાર્થસિદ્ધમાં ઉત્પન્ન થયા દીર્ઘદન્ત સર્વાર્થસિદ્ધમાં ઉત્પન્ન થયા બાકીના ત્રણ પશ્ચાનુપૂર્વીથી અપરાજિત આદિ વિમાનોમાં ઉત્પન્ન થયા, અર્થાત્ અપરાજિતમ

वैहायसः, इत्येवं त्रयः समुत्पन्नाः। अभयो विजये विमाने उपपातं प्राप। शेषम्=उक्तादन्यद् वर्णनं यथा प्रथमे=प्रथमाऽध्ययने जालिकुमारस्य तद्वद् बोध्यमित्यर्थः। अभयस्य=अभयकुमारविषये नानात्वं=विशेषो वर्त्तते यथा—राजगृहं नगरं, श्रेणिको राजा पिता, नन्दादेवी माता, शेषम्=अवशिष्टं वर्णनं तथैव=जालिकुमारवद्विज्ञेयम्। एवं खलु जम्बूः! इत्यादि पूर्वं व्याख्यातम्। अनुत्तरोपपातिकदशानां प्रथमस्यवर्गस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः ॥१॥

॥ इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषाकलितललित-कलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मायक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूछत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैन शास्त्राचार्य'-पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायाम् अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग-सूत्रस्य अर्थबोधिन्याख्यायां व्याख्यायां प्रथमो वर्गः समाप्तः ॥ १ ॥

उत्पन्न हुए, अर्थात् अपराजित में लष्टदन्त, जयन्त में वेहल्ल, और वैजयन्त में वेहायस उत्पन्न हुए। अभयकुमार विजय विमान में उत्पन्न हुए। शेष वर्णन प्रथम अध्ययनमें वर्णित जालिकुमार के ही समान जानना चाहिये। अभयकुमारका विशेष परिचय इस प्रकार है—'राजगृह' नगर, पिताका नाम 'श्रेणिक', तथा माता का नाम 'नन्दा' देवी। अवशेष वर्णन जालिकुमार के समान है। श्रीसुधर्मास्वामीने कहा—हे जम्बू! मुक्तिप्राप्त श्रमण भगवान महावीरने अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्र के प्रथम वर्गका यह उपरोक्त अर्थ कहा है।

श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्रकी अर्थबोधिनीनामक टीका के हिन्दी अनुवाद का प्रथम वर्ग समाप्त ॥

લષ્ટદન્ત, જયન્તમા વેહલ્લ, અને વૈજયન્તમાં વૈહાયસ ઉત્પન્ન થયા. અભયકુમાર વિજય વિમાનમા ઉત્પન્ન થયા. શેષ વર્ણન પ્રથમ અધ્યયનમા વર્ણિત જાલિકુમારની માફક જ જાણવુ, અભય કુમારનો વિશેષ પરિચય આ પ્રમાણે છે રાજગૃહ નગર, પિતાનું નામ શ્રેણિક તથા માતાનુ નામ નન્દાદેવી, અવશેષ વર્ણન જાલિકુમારની માફક છે.

શ્રીસુધર્માસ્વામીએ કહ્યુ - હે જમ્બૂ! મુક્તિપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવન્ત મહાવીરે અનુત્તરોપપાતિકદશાંગસૂત્રના પ્રથમ વર્ગના આ ઊપર મુજબ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યા છે.

અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રની 'અર્થબોધિની' નામક ટીકાના ગુજરાતી અનુવાદનો પ્રથમ વર્ગ સમાપ્ત.

।अथ द्वितीयो वर्गः ।

अथ जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामीनं पृच्छति-'जइ णं भंते !' इत्यादि ।

मूलम्-जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अनुत्तरोववाइयदसाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अनुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?। एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-दीहसेणे १ महासेणे २ लट्ठदंते य ३ गूढदंते य ४ सुद्धदंते य ५। हल्ले ६ दुमे ७ दुमसेणे ८, महादुमसेणे य ९ आहिए ॥१॥ सीहे य १० सीहसेणे य ११, महासीहसेणे य आहिए १२। पुण्णसेणे य बोधव्वे १३, तेरसमे होइ अज्झयणे ॥२॥ सू० १ ॥

छाया-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन अनुत्तरोपपातिकदशानां प्रथमस्य वर्गस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य खलु भदन्त ! वर्गस्यानुत्तरोपपातिकदशानां श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?। एवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्यानुत्तरोपपातिकदशानां त्रयोदशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-"(१) दीर्घसेनः, (२) महासेनः, (३) लष्टदन्तश्च, (४) गूढदन्तश्च, (५) शुद्धदन्तश्च, (६) हल्लः, (७) द्रुमः, (८) द्रुमसेनः, (९) महाद्रुमसेन आख्यातः ॥१॥" (१०) सिंहश्च, (११) सिंहसेनश्च, (१२) महासिंहसेनश्चाख्यातः ।(१३)पुण्यसेनश्च, बोद्धव्यः, त्रयोदशो भवत्यध्ययने ।२।सू०१।

टीका-भदन्त !=हे भगवन् यदि खलु यावत् सलकगुणयुक्तेन संप्राप्तेन=मुक्तिं लब्धवता श्रमणेन भगवता श्रीमहावीरस्वामिना अनुत्तरोपपातिक-

---

श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्रका द्वितीय वर्ग ।

श्रीजम्बूस्वामी श्रीसुधर्मास्वामी से पूछते हैं-'जइ णं भंते' ! इत्यादि

શ્રી અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રનો બીજો વર્ગ (૨).

શ્રી જમ્બૂસ્વામી સુધર્માસ્વામીને પૂછે છે- 'जइ णं भंते' ઇત્યાદિ.

दशानाम्=अनुत्तरोपपातिकदशाख्यस्य नवमस्याङ्गस्य प्रथमस्य वर्गस्य अयम्=पूर्वोक्तः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः=कथितः। भदन्त ! हे भगवन ! अनुत्तरोपपातिक दशानाम्=अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य द्वितीयस्य वर्गस्य यावत्-सकलगुणयुक्तेन संप्राप्तेन=मुक्तिं प्राप्तवता श्रमणेन भगवता श्रीमहावीरस्वामिना कोऽर्थः प्रज्ञप्तः?।

सुधर्मा स्वामी कथयति-हे जम्बूः ! यावत्=पूर्वोक्तसकलगुणयुक्तेन संप्राप्तेन=मुक्तिं लब्धवता श्रमणेन भगवता श्रीमहावीरस्वामिया अनुत्तरोपपातिकदशानाम्=अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य एवं=वक्ष्यमाणरीत्या त्रयोदशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि=कथितानि, तद्यथा-यद्यथा=येन प्रकारेण भगवत्कथनं तत्तथा कथयामीत्यर्थः।

(१) दीर्घसेनः, (२) महासेनः, (३) लष्टदन्तः, (४) गूढदन्तः, (५) शुद्धदन्तः, (६) हल्लः, (७) द्रुमः, (८) द्रुमसेनः, (९) महाद्रुमसेनः, आख्यातः=

हे भदन्त ! पूर्वोक्त सकलगुणालङ्कृत मुक्तिप्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने श्री-अनुत्तरोपपातिकदशांगनामक इस नववे अङ्ग के प्रथम वर्गका यह अर्थ प्ररूपित किया है तो हे भगवन् ! सकलगुणयुक्त मुक्तिप्राप्त श्रमण भगवान् महावीर स्वामीने इस अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्र के द्वितीय वर्गका क्या अर्थ कहा है ?, अर्थात् उसमें किस विषय का वर्णन किया गया है ?।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं जम्बू ! पूर्वोक्त समस्त गुणों से अलङ्कृत मुक्ति प्राप्त श्रमण भगवान महावीरने इस अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग-सूत्र के तेरह अध्ययन प्ररूपित किये है, वे इस प्रकार हैं-

(१) दीर्घसेन, (२) महासेन, (३) लष्टदन्त, (४) गूढदन्त (५) शुद्ध-

---

હે ભગવન્! પૂર્વોક્ત સકલગુણાલંકૃત મુક્તિપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે શ્રીઅનુત્તરોપપાતિકદશાંગ નામક આ નવમા અંગના પ્રથમ વર્ગના આ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યા છે તો ભગવન્! સકલગુણયુક્ત મુક્તિપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ આ અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રના દ્વિતીય વર્ગના શું અર્થ કહ્યા છે? અર્થાત્ તેમાં કયા વિષયનું વર્ણન કર્યું છે.

શ્રીસુધર્મા સ્વામી કહે છે-જંબૂ! પૂર્વોક્ત સર્વ ગુણોથી યુક્ત મુક્તિપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રના તેર (૧૩) અધ્યયન પ્રરૂપિત કર્યાં છે તે આ પ્રમાણે છે :- (૧) દીર્ઘસેન (૨) મહાસેન (૩) લષ્ટદન્ત (૪) ગૂઢદન્ત

कथितः, (१०) सिंहः (११) सिंहसेनः, (१२) महासिंहसेनश्च, आख्यातः- द्वादशः कथितः। (१३) त्रयोदशेऽध्ययने पुण्यसेनो भवति, इत्ययं बोद्धव्य । ।सू.१।

पुनर्जम्बूस्वामी पृच्छति-'जइ णं भंते!' इत्यादि।

मूलम्-जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अनुत्तरोववाइयदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पण्णत्ता। दोच्चस्स णं भंते! वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?। एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे, जहा जालिस्स तहा जम्मं, बालत्तणं, कलाओ, नवरं दीहसेणे कुमारे। सच्चेव वत्तव्वया जहा जालिस्स जाव अंतं काहिति। एवं तेरसण्हवि रायगिहे णयरे, सेणिओ पिआ, धारिणी माया, तेरसण्हवि सोलस वासा परियाओ, आणुपुव्वीए विजए दोण्णि, वेजयन्ते दोण्णि, जयंते दोण्णि, अपराजिते दोण्णि, सेसा महादुमसेणमाई पंच सव्वट्ठसिद्धे। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। मासियाए संलेहणाए दोसु वि वग्गेसु ॥ सू० २॥

॥ बिइओ वग्गो समत्तो ॥

छाया-यदि खलु भदन्त! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेनानुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयस्य वर्गस्य त्रयोदशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, द्वितीयस्य खलु भदन्त! वर्गस्य प्रथमस्याध्ययनस्य श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः?। एवं खलु जम्बूः!

दन्त (६) हल्ल, (७) द्रुम, (८) द्रुमसेन, (९) महाद्रुमसेन, (१०) सिंह, (११) सिंहसेन, (१२) महासिंहसेन, (१३) पुण्यसेन ॥ सू० १ ॥

---

(५) શુદ્ધદન્ત (૬) હલ્લ (૭) દ્રુમ (૮) દ્રુમસેન (૯) મહાદ્રુમસેન (૧૦) સિંહ (૧૧) સિંહસેન (૧૨) મહાસિંહસેન (૧૩) પુન્યસેન (સૂ૦ ૧)

तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं, नगरं, गुणशिलकं चैत्यम्, श्रेणिको राजा, धारिणी देवी, सिंहः स्वप्ने, यथा जालेस्तथा जन्म, बाल्यत्वं, कलाश्च। नवरं=विशेषः-दीर्घसेनः कुमारः। सा चैव वक्तव्यता यथा जालेः यावद् अन्तं करिष्यति।

एवं त्रयोदशानामपि राजगृहं नगरं, श्रेणिकः पिता, धारिणी माता। त्रयोदशानामपि षोडश वर्षाणि पर्यायः, आनुपूर्व्या विजये द्वौ, वैजयन्ते द्वौ, जयन्ते द्वौ, अपराजिते द्वौ, शेषा महाद्रुमसेनादयः पञ्च सर्वार्थसिद्धे। एवं खलु जम्बूः! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयस्य वर्गस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः। मासिक्या संलेखनया द्वयोरपि वर्गयोः ॥ सू० २ ॥

॥ द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥

टीका-भदन्त !=हे भगवान् यदि खलु यावत्=सकलगुणयुक्तेन संप्राप्तेन सिद्धिगति प्राप्तवता श्रमणेन भगवता श्रीमहावीरेण अनुत्तरोपपातिकदशानाम्=अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य द्वितीयस्य वर्गस्य त्रयोदशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि=कथितानि, भदन्त !=हे भगवान् ! द्वितीयस्य खलु वर्गस्य प्रथमस्याध्ययनस्य=द्वितीयवर्गान्तर्गत-प्रथमाध्ययनस्य यावत् सकलगुणयुक्तेन संप्राप्तेन=सिद्धिगतिं प्राप्तवता श्रमणेन भगवता श्रीमहावीरस्वामिना कोऽर्थः प्रज्ञप्तः=कथितः ?।

सुधर्मा स्वामी कथयति-एवम्=उक्तप्रकारेण खलु हे जम्बूः! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरम्। गुणशिलकं=गुणशिलकाख्यं चैत्यम्=उद्यानम्

श्री जम्बूस्वामी श्रीसुधर्मा स्वामीसे पूछते है-'जइ णं भंते' इत्यादि।

हे भदन्त ! निर्वाणपदप्राप्त सकलगुणालङ्कृत श्रमण भगवान् महावीर स्वामीने यदि अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्र के द्वितीय वर्ग के तेरह (१३) अध्ययन कहे हैं, तो हे भदन्त ! मुक्तिप्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने द्वितीय वर्ग के प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ प्रतिपादित किया है ?।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं-हे जम्बू ! उस काल उस समय

શ્રી જંબૂ સ્વામી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે—'जइ णं भंते' ઇત્યાદિ

હે ભગવાન્! નિર્વાણપદપ્રાપ્ત સકળગુણાલંકૃત શ્રમણ ભગવાન મહાવીર સ્વામીએ જો અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રના દ્વિતીય વર્ગના તેર (૧૩) અધ્યયન કહ્યા છે તો હે ભગવન્! મુક્તિપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવન્ત મહાવીરે દ્વિતીય વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનના શું અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યા છે ?

શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે.-હે જંબૂ! તે કાળ તે સમયમાં રાજગૃહ નામે

श्रेणिको राजा। धारिणी देवी। तथा स्वप्ने सिंहो दृष्टः। यथा जालेः=जालिकुमारस्य तथा जन्म, बालभावः, कलाः=कलाग्रहणं च विज्ञेयम्। नवरं=विशेषः-दीर्घसेन इति नाममात्रतो भेद इत्यर्थः। सा चैव वक्तव्यता यथा जालेर्यावदन्तं करिष्यति=जालिकुमारवद् भगवत्समीपगमनप्रव्रज्याग्रहणादि सर्वं यावत् सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति।

एवं त्रयोदशानामपि, दीर्घसेनादिकुमाराणां राजगृहं नगरं, श्रेणिकः पिता, धारिणी माता, षोडश वर्षाणि श्रामण्यपर्यायोऽभवत्।

आनुपूर्व्या=अनुक्रमेण द्वौ=दीर्घसेन-महासेनौ विजये=विजयाख्येऽनुत्तर-

---

में राजगृह नामक नगर, गुणशिलक चैत्य, श्रेणिक राजा, धारिणी देवी, उसने स्वप्नमें एकवार सिंह देखा, जिसके फलस्वरूप एक पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ। जालिकुमार के समान ही इसका भी जन्म महोत्सव, बालक्रीडा, शिक्षण आदि जानना चाहिए। यहाँ विशेष यह समझें कि इनका नाम दीर्घसेन है। शेष-भगवान् के समीप दीक्षा ग्रहण करना, मासिक संलेखना से कालकर विजय विमान में उत्पन्न होना, महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेना, तथा वहाँ समस्त दुःखों का नाश कर निर्वाणपद प्राप्त करना आदि इसकी भी वही समस्त वक्तव्यता है जो जालिकुमार की है।

इस प्रकार दीर्घसेन आदि तेरह ही राजकुमारों का राजगृह नगर, श्रेणिक पिता, धारिणी माता तथा दीक्षा पर्याय सोलह २ वर्षकी थी।

इनमें अनुक्रम से दीर्घसेन और महासेन; ये दो विजयमें,

નગર, ગુણશિલક ચૈત્ય શ્રેણિક રાજા, ધારિણી દેવી, તેણે સ્વપ્નમાં એકવાર સિંહ દેખ્યો, જેના ફળસ્વરૂપ એક પુત્રરત્ન ઉત્પન્ન થયો. જાલિકુમારની માફક જ તેનો પણ જન્મ-મહોત્સવ, બાલક્રીડા, શિક્ષણ આદિ જાણવું જોઇએ અહિ વિશેષમાં આટલું સમજવું કે એમનું નામ દીર્ઘસેન છે. શેષ ભગવાનની પાસે દીક્ષા ગ્રહણ કરવી, માસિક સંલેખનાથી કાળ કરી વિજય વિમાનમાં ઉત્પન્ન થવું, મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જન્મ લેવો, તથા ત્યાં સમસ્ત દુઃખનો નાશ કરી નિર્વાણપદ પ્રાપ્ત કરવું, આદિ તેનુ પણ સમસ્ત વક્તવ્ય જાલિકુમારની માફક જ છે

એજ પ્રમાણે દીર્ઘસેન આદિ તેરેય (૧૩) રાજકુમારોનુ રાજગૃહનગર શ્રેણિક પિતા, ધારિણી માતા, તથા દીક્ષાપર્યાય સોળ સોળ વર્ષની હતી

એમાં અનુક્રમથી દીર્ઘસેન અને મહાસેન એ બે વિજયમાં, લષ્ટદન્ત અને

विमाने समुत्पन्नौ। द्वौ=लष्टदन्तो गूढदन्तश्च वैजयन्ते जातौ। द्वौ=शुद्धदन्तो हल्लश्च जयन्ते, द्वौ द्रुमः, द्रुमसेनश्च अपराजिते विमाने उपपन्नौ। शेषाः=अवशिष्टाः पञ्च महाद्रुमसेनादयः=(९) महाद्रुमसेनः, (१०) सिंहः, (११) सिंहसेनः, (१२) महासिंहसेनः, (१३) पुण्यसेनश्च, इत्येते पञ्चसंख्यकाः सर्वार्थसिद्धे=सर्वार्थसिद्धाभिधेऽनुत्तरविमाने उपपातं प्राप्तवन्तः।

हे जम्बूः! एवं=पूर्वोक्तरीत्या खलु=निश्चयेन श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिस्थानं संप्राप्तेन अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य द्वितीयस्य वर्गस्य अयं=पूर्वोक्तप्रकारः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः=कथितः।

लष्टदन्त और गूढदन्त, ये दो वैजयन्त में, शुद्धदन्त और हल्ल, ये दो जयन्त में, द्रुम और द्रुमसेन, ये दो अपराजित विमान में और शेष महाद्रुमसेन, सिंह, सिंहसेन, महासिंहसेन और पुण्यसेन, ये पांचों ही सर्वार्थसिद्ध नामक अनुत्तर विमान में उत्पन्न हुए।

हे जम्बू! इस प्रकार मोक्षप्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्रके द्वितीय वर्गका यह अर्थ प्ररूपित किया है।

दोनों ही वर्गों के अर्थात् जालिकुमार आदि तेइसों ही मुनियों ने एक एक मासकी संलेखना करके अपना शरीर परित्याग किया।

भावार्थ–अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्र का यह द्वितीय वर्ग तेरह अध्ययनों में विभाजित है। प्रत्येक अध्ययन का वर्णन प्रत्येक राजकुमार का जीवन–वृत्तान्त है। ये तेरह ही राजकुमार राजगृह के राजा श्रेणिक के पुत्र तथा पट्टमहिषी धारिणी देवी के अङ्गजात थे।

ગૂઢદન્ત એ બે વૈજયન્તમા, શુદ્ધદન્ત અને હલ્લ એ બે જયન્તમા દ્રુમ અને દ્રુમસેન એ બે અપરાજિત વિમાનમા, અને શેષ મહાદ્રુમસેન, સિંહ, સિંહસેન, મહાસિંહસેન અને પુણ્યસેન એ પાંચેય સર્વાર્થસિદ્ધ નામે અનુત્તર વિમાનમાં ઉત્પન્ન થયા

હે જમ્બૂ! આ પ્રમાણે મોક્ષપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે શ્રી અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રના બીજા વર્ગના આ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યા છે બન્ને વર્ગના અર્થાત્ જાલિકુમાર આદિ ત્રેવીસ મુનિયોએ એક એક માસની સંલેખના કરી પોતાના શરીરનો પરિત્યાગ કર્યો હતો.

ભાવાર્થ–અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રનો આ બીજો વર્ગ તેર અધ્યયનોમા વિભાજિત છે પ્રત્યેક અધ્યયનનું વર્ણન પ્રત્યેક રાજકુમારનુ જીવનવૃત્તાન્ત છે આ તેરેય રાજકુમાર રાજગૃહના રાજા શ્રેણિકના પુત્ર તથા પટ્ટમહિષી ધારિણીદેવીના અંગજાત હતા

द्वयोरपि वर्गयोः जालिकुरादयस्त्रयोस्त्रिंशतिर्मुनयो मासिक्या संलेखनया–एकैकमासं पादपोपगमनसंस्तारकेण शरीरं त्यक्तवन्तः ॥सू० २॥

॥ इति श्री–विश्वविख्यात–जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचक–पञ्चदशभाषा
कलितललितकलापालापक–प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मायक–
वादिमानमर्दक–श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त–
'जैन शास्त्राचार्य'–पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु-
–बालब्रह्मचारि–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर
पूज्यश्री–घासीलाल- व्रतिविरचितायाम्
अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग–सूत्रस्य
अर्थबोधिन्याख्यायां व्याख्यायां
द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥२॥

जालिकुमार के समान ही इनका जन्ममहोत्सव, शिक्षा, बालक्रीडा आदि कार्य सम्पन्न हुए। इनमें त्याग की पराकाष्ठा पाई जाती है। अनुपम सांसारिक सुखों को त्याग कर उन्होंने श्रमण भगवान् महावीर के समीप दीक्षा ग्रहण की। ग्यारह अङ्गो का ज्ञान प्राप्त किया। गुणरत्न तप, चिन्तन आदि समस्त कार्य किये। सोलह वर्ष पर्यन्त संयम पालन किया। अन्त में एक मास की पादपोपगमन संलेखना से इस शरीर को छोडकर अनुत्तर विमानों में उत्पन्न हुए। वहाँ से चवकर महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर समस्त कर्मों को क्षय करके परमपद मोक्ष प्राप्त करेंगे ॥ सू० २ ॥

इति श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्र की अर्थबोधिनी नामक टीका के
हिन्दी अनुवाद का द्वितीय वर्ग समाप्त ॥ २ ॥

જાલિકુમારની માફક જ તેમનો જન્મ–મહોત્સવ, શિક્ષા, બાલક્રીડા, આદિ કાર્ય સમ્પન્ન થયાં. તેઓમાં ત્યાગની પરાકાષ્ઠા હતી અનુપમ સાંસારિક સુખોને ત્યાગી એમણે ભગવાન મહાવીર પાસે દીક્ષા ગ્રહણ કરી, અગ્યાર અંગોનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યું. ગુણરત્ન તપ, ચિન્તન આદિ સમસ્ત કામ કર્યું, સોળ વર્ષ પર્યન્ત સંયમનું પાલન કર્યું. અન્તમાં એક મહિનાની પાદપોપગમન સંલેખના કરી આ શરીરને છોડી અનુત્તર વિમાનમાં ઉત્પન્ન થયા ત્યાંથી ચવી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ લઈ સમસ્ત કર્મોના ક્ષય કરી પરમપદ મોક્ષ પ્રાપ્ત કરશે (સૂ૦ ૨)

ઇતિ શ્રી અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રની અર્થબોધિની નામક ટીકાના
ગુજરાતી અનુવાદનો બીજો વર્ગ સમાપ્ત. ॥૨॥

॥ अथ तृतीयो वर्गः ॥

जम्बूस्वामि पृच्छति–'जइ णं भंते!' इत्यादि ।

मूलम्–जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं दोच्चस्स णं वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–"धन्ने य १ सुनक्खत्ते य २, इसिदासे य ३ आहिए । पेल्लए ४ रामपुत्ते य ५, चंदिमा ६ पिट्ठिमाइया ७ ॥ १ ॥ पेढालपुत्ते ८ अणगारे, नवमे पोट्टिले ९ वि य । वेहल्ले १० दसमे वुत्ते, इमे य दस आहिया ॥२॥" ॥सू० १॥

जम्बूस्वामी पुनः पृच्छति–'जइ णं भंते' इत्यादि ।

मूलम्–जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी नामं नयरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा । सहसंबवणे उज्जाणे सव्वोउयसमिद्धे । जियसत्तू राया । तत्थ णं काकंदीए नयरीए भद्दा नामं सत्थवाही परिवसइ, अड्ढा जाव अपरिभूया । तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते धण्णे, नामं दारए होत्था, अहीण जाव सुरूवे, पंचधाईपरिग्गहीए, तं जहा–खीरधाई०, जहा महाबले जाव बावत्तरिं कलाओ अहीए, जाव अलं भोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥ सू० २ ॥

छाया--यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयस्य खलु वर्गस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः, तृतीयस्य खलु भदन्त ! वर्गस्यानुत्तरोपपातिकदशानां श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?। एवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेनानुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयस्य वर्गस्य दशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-"धन्यश्च १, सुनक्षत्रश्च २, ऋषिदासश्च ३, आख्यातः। पेल्लको ४, रामपुत्रश्च ५, चन्द्रिकः ६, पृष्टिमातृकः ७ पेढालपुत्रः अनगारः ८, नवमः पोट्टिलोऽपि ९ च। वेहल्लो १० दसम उक्तः, इमे च दश आख्याताः ॥२॥ सू० १ ॥

छाया-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेनानुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयस्य वर्गस्य दशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?। एवं खलु जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये काकन्दी नाम नगरी अभवत्, ऋद्धस्तिमितसमृद्धा। सहस्राम्रवनमुद्यानं सर्वर्तुकसमृद्धम्। जितशत्रू राजा। तत्र खलु काकन्द्यां नगर्यां भद्रा नाम सार्थवाही परिवसति, आढ्या यावदपरिभूता। तस्या भद्रायाः सार्थवाह्याः पुत्रो धन्यो नाम दारक आसीत् अहीन यावत्सुरूपः पञ्चधात्रीपरिगृहीतः, तद्यथा क्षीरधात्री, यथा महाबलो यावद् द्वासप्ततिकला अधीतः, यावद् अलं भोगसमर्थो जातश्चाप्यभवत् ॥२॥ सू० २ ॥

टीका-'जइ णं भंते !' हे भदन्त ! यदि खलु श्रमणेन यावत् सिद्धिगतिं संप्राप्तेन भगवता महावीरेण अनुत्तरोपपातिकदशानाम्=अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य द्वितीयस्य वर्गस्य=त्रयोदशाध्ययनसमुदायरूपस्य अयं=पूर्वोक्तः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः =कथितः। किन्तु हे भगवन् ! अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य तृतीयस्य वर्गस्य श्रमणेन

अथ तृतीय वर्ग प्रारंभः

श्री जम्बू स्वामी पूछते हैं-'जइ णं भंते !' इत्यादि।

हे भदन्त ! निर्वाणपद प्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने श्री अनुत्तरोपपातिक दशाङ्ग सूत्रके द्वितीय वर्गके तेरह अध्ययनोंका यह अर्थ कहा है तो हे भदन्त ! मुक्तिप्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने

અથ તૃતીય વર્ગ પ્રારંભ.

શ્રી જંબૂસ્વામી પૂછે છે:—હે ભગવન્ 'जइ णं भंते' ઇત્યાદિ.

નિર્વાણપદપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે શ્રી અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રના બીજા વર્ગના (૧૩) તેર અધ્યયનોના આ ઉપરોક્ત અર્થ કહ્યા છે તો, હે ભગવન્!

यावत्-सिद्धिगतिं संप्राप्तेन कोऽर्थः=को भावः प्रज्ञप्तः=कथितः ? ।

श्री सुधर्मा स्वामी कथयति—

हे जम्बूः ! यावत्संप्राप्तेन=सकलगुणयुक्तेन मुक्तिं प्राप्तेन श्रमणेन भगवता महावीरेण एवं=वक्ष्यमाणरीत्या अनुत्तरोपपातिकदशानाम्=अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य तृतीयस्य वर्गस्य दश अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि=कथितानि, तद्यथा= भगवता यथा कथितं तदेवम्-"(१) धन्यः, (२) सुनक्षत्रः, (३) ऋषिदासश्च, आख्यातः-भगवता तृतीयाध्ययने ऋषिदासः कथितः इत्यर्थः । (४) पेल्लकः, (५) रामपुत्रः, (६) चन्द्रिकः, (७) पृष्टिमातृकः, (८) पेढालपुत्रोऽनगारः= अष्टमाध्ययने पेढालपुत्र नामा अनगारः कथितः, (९) पोट्टिल इति च=नवमाध्ययने पोट्टिलः कथितः । (१०) वेहल्लो दशम उक्तः, इमे=वक्ष्यमाणा धन्यनामानगारमारभ्य वेहल्लपर्यन्ता अनगारा दश आख्याताः=कथिताः, तन्नामकान्यध्ययनानिप्ररूपितानीत्यर्थः ॥२॥ ॥ सू० १ ॥

टीका- 'जइ णं भंते !' इत्यादि । भदन्त !=हे भगवन ! 'समणेणं' इत्यादि 'सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्तेणं' इत्यन्तवाक्यबोधितगुणविशिष्टेन भगवता

इस अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग के तृतीय वर्गका क्या अर्थ प्ररूपित किया है ? ।

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं ।-हे जम्बू ! मुक्तिप्राप्त पूर्वोक्त गुणोंसे सुशोभित श्रवण भगवान् महावीर प्रभुने इस अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्र के तृतीय वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं, वे इस प्रकार हैं:- (१) धन्य (२) सुनक्षत्र (३) ऋषिदास (४) पेल्लक (५) रामपुत्र (६) चन्द्रिक (७) पृष्टिमातृक (८) पेढालपुत्र (९) पोट्टिल (१०) वेहल्ल ॥ सू० १ ॥

श्री जम्बू स्वामी पूछते हैं:-'जइ णं भंते' इत्यादि । हे भगवन् सिद्धिगति नामक परम पदको प्राप्त करनेवाले उपरोक्त अनेक गुणों-

---

મુક્તિપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ અનુત્તરોપપાતિકદશાંગના તૃતીય વર્ગના શું અર્થ પ્રરૂપિત કર્યા છે ?

શ્રીસુધર્માસ્વામી કહે છે-હે જમ્બૂ ! મુક્તિપ્રાપ્ત પૂર્વોક્ત ગુણોથી સુશોભિત શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-પ્રભુએ આ અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રના ત્રીજા અધ્યયન કહ્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે.-

(૧) ધન્ય, (૨) સુનક્ષત્ર, (૩) ઋષિદાસ, (૪) પેલ્લક, (૫) રામપુત્ર, (૬) ચન્દ્રિક (૭) પૃષ્ટિમાતૃક, (૮) પેઢાલપુત્ર, (૯) પોટ્ટિલ, (૧૦) વેહલ્લ. (સૂ૦ ૧)

શ્રી જમ્બૂસ્વામી પૂછે છે-जइ णं भंते ! ઇત્યાદિ હે ભગવન્ ! સિદ્ધિગતિનામક પરમ પદને પ્રાપ્ત કરવાવાળા ઉપરોક્ત અનેક ગુણોથી યુક્ત શ્રમણ ભગવાન મહા-

महावीरेण अनुत्तरोपपातिकदशानाम्=अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य तृतीयस्य वर्गस्य दशाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि=कथितानि, भदन्त !=हे भगवन् ! श्रमणेन यावत् संप्राप्तेन श्रीमहावीरेण भगवता प्रथमस्य अध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?

सुधर्मा स्वामी कथयति-हे जम्बू ? एवं=वक्ष्यमाणरीत्या खलु=निश्चयेन तस्मिन् काले तस्मिन् समये काकन्दी नाम नगरी आसीत्, सा कीदृशी आसीत् ? ऋद्धस्तिमितसमृद्धा-ऋद्धा=नभःस्पर्शिबहुलप्रासादयुक्ता, बहुलजनसंकुला च, स्तिमिता=स्वपरचक्रभयरहिता, समृद्धा=धनधान्यादिपरिपूर्णा । तत्र सर्वर्तुकसमृद्धं=सर्वर्तुफलपुष्पादिसमन्वितं सहस्राम्रवननामकमुद्यानमासीत् । तत्र नगर्यां जितशत्रुनामधेयो राजाऽभवत् ।

से युक्त श्रमण भगवान् महावीरने श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्र-के तीसरे वर्ग के दश (१०) अध्ययन कहे हैं तो हे भगवन ! मुक्तिप्राप्त श्रमण भगवान् महावीरने प्रथम अध्ययनका क्या अर्थ प्रतिपादित किया है ?

श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं-हे जम्बू ! इस अनुत्तरोपपातिदशाङ्गसूत्र के तृतीय वर्ग के प्रथम अध्ययन का श्रमण भगवान् महावीरने यह आगे कहेजानेवाला अर्थ प्ररूपित किया है-

उस काल उस समयमें अनेक गगनचुम्बी प्रासादों से युक्त स्वचक्र परचक्र भय रहित, धन धान्य, और जनसे परिपूर्ण, ऐश्वर्य तथा वैभवसम्पन्न काकन्दी नामक प्रसिद्ध नगरी थी। वहाँ सर्व ऋतु के फल-फूलोंसे युक्त सहस्राम्र नामक एक अतीव रमणीय उद्यान था। उस नगरी में जितशत्रु नामक राजा था।

वीरे श्री अनुत्तरोपपातिकदशांगना त्रीजा वर्गना दस (१०) अध्ययनो कह्या छे तो हे भगवन्! मुक्तिप्राप्त श्रमण भगवान महावीरे प्रथम अध्ययनना शुं अर्थ प्रतिपादित कर्या छे:-

श्री सुधर्मा स्वामी कहे छे हे जंबू! आ अनुत्तरोपपातिकदशांग सूत्रना त्रीजा वर्गना प्रथम अध्ययनना श्रमण भगवान महावीरे आ अर्थ प्रतिपादित कर्या छे.-

ते काळ ते समयमां अनेक गगनचुम्बी प्रासादोथी युक्त स्वचक्रपरचक्रभयरहित, धन-धान्य-जनथी परिपूर्ण, ऐश्वर्य तथा वैभव सम्पन्न काकन्दी नामे प्रसिद्ध नगरी हती. त्यां सर्व ऋतुना फलफूलोथी युक्त सहस्राम्र नामे एक अतीव रमणीय उद्यान हतुं, ते नगरीमां जितशत्रुनामे राजा हतो.

तत्र खलु काकन्द्यां नगर्यां भद्रा=नाम्नी सार्थवाही परिवसति। सार्थं वहति यः स सार्थवाहः=गणिम-धरिम-मेय-परिच्छेद्यरूपं क्रयाणकद्रव्यजातं गृहीत्वा लाभार्थमन्यदेशं व्रजन योगक्षेमचिन्तया सार्थपालकः। तत्र-गणिमम्=एकद्वित्रिचतुरादिसंख्याक्रमेण गणयित्वा यद्दीयते तत्, यथा नालिकेरपूगीफल-कदलीफलादिकम्। धरिमम्=तुलायामुत्तोल्य यद्दीयते तत्, यथा व्रीहिय-वलवणसितादि।

मेयम्=यत् पल्यादिना सेटिकादिना हस्तादिना वा मीयते=माप्यते तत्, यथा दुग्धघृततैलादिकं वस्त्रादिकं वा। परिच्छेद्यम्=प्रत्यक्षतो निकषादिकपरीक्षया यद्दीयते तत्, यथा मणिमुक्ताप्रवालादि। तस्य स्त्री सार्थवाही।

उस काकन्दी नगरी में भद्रा नामक एक सार्थवाही रहती थी। सार्थवाही शब्द का अर्थ निम्न प्रकार है:-

जो गणिम धरिम मेय और परिच्छेद्य रूप विक्रेय पदार्थों को लेकर विशेष लाभ के लिये दूसरे देशको जाती हो तथा सार्थ-(साथ में चलने वाले जन समूह) के योग क्षेम की चिन्ता करती हो उसे सार्थवाह कहते हैं। उसकी स्त्री सार्थवाही कहलाती है।

'गणिम' आदि पदों का अर्थ निम्न प्रकार है-

गणिम-उन विक्रेय वस्तुओं को कहते हैं जो एक, दो, तीन आदि संख्या क्रमसे गिन कर दी जाती हों, जैसे-नारियल, सुपारी, केले आदि।

धरिम-उन विक्रेय वस्तुओं को कहते है, जो तराजू (तकडी) अथवा कांटेद्वारा तोलकर दी जाती हों। जैसे - गेहूँ, जौ, नमक, शक्कर आदि।

તે કાકન્દી નગરીમાં ભદ્રા નામે એક સાર્થવાહી રહેતી હતી સાર્થવાહી શબ્દનો અર્થ નિચે મુજબ છે.-

જે ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્યરૂપ વિક્રેય પદાર્થો લઈને વિશેષ લાભ માટે બીજે દેશ જતા હોય તથા સાર્થ (સાથે ચાલનારા જનસમૂહ) નાં યોગક્ષેમની ચિન્તા કરતા હોય તેને સાર્થવાહી કહે છે, તેની સ્ત્રી સાર્થવાહી કહેવાય છે

'ગણિમ' આદિપદોના અર્થ નિમ્ન પ્રકારે છે-

'ગણિમ'—તે વિક્રેય વસ્તુઓને કહે છે કે જે એક બે ત્રણ, આદિ સંખ્યા-ક્રમથી ગણત્રી કરી આપવામાં આવે; જેમ-નાળિયેર, સોપારી, કેળા આદિ

'ધરિમ'—તેને કહે છે કે જે ત્રાજવા-કાંટા એ દ્વારા તોલ કરી શકાય, જેમ-ઘઉં, જવ, મીઠું, સાકર, આદિ

'अड्ढा जाव अपरिभूया,' इति 'अड्ढा' इत्यारभ्य 'अपरिभूया' इत्येतत्पर्यंतोक्तसमस्तविशेषणविशिष्टेत्यर्थः, तेन 'अड्ढा दित्ता वित्थिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णा, बहुधणबहुजायरूवरयया, आओगपओगसंपउत्ता, विच्छड्डियविउलभत्तपाणा, बहुदासीदासगोमहिसगवेलयप्पभूया, बहुजणस्स अपरिभूया इति पाठस्य संग्रहः ।

तत्र आढ्या=महती, धनधान्यादिसंपन्ना वा । दीप्ता=सदाचारगुणैरुज्ज्वला, दर्पिता धर्मगौरवगर्विता वा । विस्तीर्णविपुलभवनशयनासनवाहना-

मेय-उन विक्रेय पदार्थों को कहते हैं जो बली गज, वार, हाथ अथवा किसी माप-विशेष के द्वारा माप कर दिये जाते हों, जैसे-दूध, घी, तैल, वस्त्र आदि ।

परिच्छेद्य-उन विक्रेय पदार्थों को कहते हैं जो प्रत्यक्ष रूपसे कसौटी अथवा अन्य किन्हीं उपायों द्वारा परीक्षा करके दिये-लिये जाते हों; जैसे-माणिक, मोती, मूंगा सोना आदि ।

'अड्ढा जाव अपरिभूया'-'अड्ढा' शब्दसे लेकर 'अपरिभूया' पर्यन्त समस्त विशेषण पदोंका निम्न अर्थ है-

अड्ढा-आढ्या अपार धन धान्यसे सम्पन्न, दित्ता=दीप्ता-शील, सदाचार आदि गुणोंसे प्रकाशित, दित्ता=दर्पिता धर्म गौरव से गर्वित, अर्थात् वह भद्रा सार्थवाही अत्यधिक धनधान्यसम्पन्न, शील-सदाचाररूपी गुणोंसे प्रकाशित तथा अपने गौरव से युक्त थी । उसके विस्तृत अनेक भवन, पलंग, शय्या, सिंहासन, चौकी आदि, यान-गाडी,

'मेय'-ते विक्रेय पदार्थोने कहे छे के जे, पळी, गज, वार, हाथ अथवा कोई माप विशेषद्वारा मापी शकाय, जेम-दूध, घी, तेल, वस्त्र, आदि.

'परिच्छेद्य'-ते पदार्थोने कहे छे के जे, प्रत्यक्षरूपे कसोटी अथवा अन्य कोई उपायोद्वारा परीक्षा करी देवाय, अथवा लेवाय, जेम-माणेक, मोती, मुंगा, सोनु, आदि.

'अड्ढा जाव अपरिभूया' 'अड्ढा' शब्दथी लई 'अपरिभूया' पर्यन्त समस्त विशेषण पदोना नीचे प्रमाणे अर्थ छे-

'अड्ढा'-अपार धन-धान्यथी सम्पन्न, 'दित्ता'-दीप्ता,-शील सदाचार आदि गुणोथी प्रकाशित, 'दित्ता' दर्पिता-धर्म-गौरवथी गर्वित अर्थात ते भद्रा सार्थवाही घणां धन धान्यथी सम्पन्न, शील-सदाचार रूपी गुणोथी प्रकाशित तथा पोताना गौरवथी युक्त हती. तेने विस्तृत अनेक भवन, पलंग, शय्या, सिंहासन, पाटला आदि, यान-

कीर्णा-विस्तीर्णानि=विस्तृतानि, विपुलानि=बहूनि भवनानि=गृहाः, शयनानि=तल्पानि, आसनानि=पीठकादीनि, यानानि=गन्त्रीप्रभृतीनि, वाहनानि=तुरगादयः, तैराकीर्णा=समन्विता। बहुधनबहुजातरूपरजता-बहु-विपुलं धनं=गणिमधरिमादि यस्याः सा बहुधना, बहु=विपुलं जातरूपं=सुवर्ण, रजतं=रूप्यं यस्याः सा बहुजातरूपरजता, बहुधना चासौ बहुजातरूपरजता चेति बहुधनबहुजातरूपरजता। आयोगप्रयोगसंप्रयुक्ता=आ=समान्तात् योजनं द्विगुणादिलाभार्थं रूप्यादीनाम् ऋणग्राहकेभ्यो नियोजनमायोगः, तस्य प्र=प्रकर्षेण योजनम्=उपायचिन्तनं प्रयोगः यद्वा आयोगेन=द्विगुणादिलिप्सया प्रयोगः=ऋणग्राहकाणां सविधे द्रव्यस्य वितरणमायोगप्रयोगः, स संप्रयुक्तः=प्रवर्तितो यया, तस्मिन् वा संप्रयुक्ता=संलग्ना या सा आयोगप्रयोगसंप्रयुक्ता=नीत्या द्रव्योपार्जनप्रवृत्तेत्यर्थः। विच्छर्दितविपुलभक्तपाना=भक्तं च पानं च भक्तपाने, विपुले च ते भक्तपाने विपुलभक्तपाने, वि=विशेषेण छर्दिते=भोजनावशिष्टे भक्तपाने यस्याः सा विच्छर्दितविपुलभक्तपाना। बहुदासीदासगोमहिषगवेलकप्रभूता=दास्यश्च दासाश्च गावश्च महिषाश्च गवेलका-उरभ्राश्चेति दासीदासगोमहिषगवेलकाः, अत्र बहुशब्दः प्रशस्तार्थपरतेन-बहवः=प्रशस्ताश्च ते दासीदासगोमहिषगवेलका इति बहुदासीदासगोमहिषगवेलकाः, ते प्रभूताः=प्रचुरा यस्याः सा बहुदासीदासगोमहिषगवेलक-

रथ आदि और वाहन-घोडा, हाथी आदि थे। उसके बहुत धन-गणिम धरिम आदि, तथा बहुत चाँदी सोना थे। उसने अपना धन द्विगुणित लाभपर न्यायपूर्वक कर्जलेनेवाले मनुष्यों में तथा व्यापार में लगा रक्खा था। उसके यहां सबके भोजन कर लेने बाद बहुत भक्त-पान अवशिष्ट रहता था और वह अवशिष्ट भक्त-पान गरीबों को दिया जाता था। उसके आज्ञाकारी बहुत दास-दासी थे और बहुतसे जातिमन्त गाय, बैल, भैंसभैंसा, भेड आदि उसके पास थे। वह उस नगरमें अत्यन्त प्रतिष्ठित एवं सम्माननीय थी।

ગાડી, રથ આદિ, વાહન-ઘોડા, હાથી આદિ હતા તેને ઘણુ ધન-ગણિમ ધરિમ આદિ, તથા ઘણુ ચાંદી, સોનુ હતુ, તેણે પોતાનુ ધન બેવડા લાભ ઉપર ન્યાયપૂર્વક કર્જ લેવાવાળા મનુષ્યોમા તથા વ્યાપારમાં લગાવી રાખ્યુ હતું તેને ત્યા સહુએ જમી લીધા પછી પણ ઘણુ ભક્ત-પાન વધતુ હતુ, અને તે વધેલુ ભક્ત-પાન ગરીબોને આપવામા આવતુ હતુ તેને આજ્ઞાકારી દાસ દાસી અને જાતિવંત ગાય, બળદ, ભેંસ, પાડા, ગાડર આદિ ઘણા હતા, તે ભદ્રા રાજગૃહ નગરમા ઘણી પ્રતિષ્ઠિત અને સમ્માનનીય હતી

प्रभूता। अत्र गवादिपदं स्त्रीगवादीनामप्युपलक्षकम्। 'बहुजनस्य अपरिभूता' बहुजनैः पराभवरहिता बहुजनमान्येत्यर्थः।

तस्याः खलु भद्रायाः सार्थवाह्या धन्यनामा दारकः पुत्रोऽभवत्। दारक इति स्वोदराज्जातो नतु दत्तकत्वेन परिगृहीत इत्यर्थः। सः 'अहीणजावसुरूवे' इति 'अहीण' इत्यारभ्य 'सुरूवे' इत्येतत्पर्यन्तोक्तसकलविशेषणविशिष्ट इत्यर्थः, तेन 'अहीणपंचिंदियसरीरे, लक्खणवंजणगुणोववेए, माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्ण-सुजायसव्वंगसुदरंगे, ससिसोमागारे कंते पियदंसणे सुरूवे' इति पाठस्य संग्रहः।

तत्र--अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरः=अहीनानि = लक्षणस्वरूपाभ्यां परिपूर्णानि पञ्च इन्द्रियाणि यस्मिंस्तादृशं शरीरं यस्य स तथोक्तः, स्वस्वविषयग्रहणसमर्थ-पूर्णाकारचक्षुरादीन्द्रियविशिष्ट इत्यर्थः। लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेतः=लक्ष्यन्ते= चिह्नयन्ते यैस्तानि लक्षणानि=पुरुषचिह्नानि हस्तस्थविद्याधनजीवितरेखारूपाणि वा, व्यज्यन्ते=प्रकटीक्रियन्ते गुणा यैस्तानि व्यञ्जनानि=तिलकालक-मषादीनि, गुणाः=सौशील्यादयः, यद्वा पूर्वोक्तप्रकारैर्लक्षणैर्व्यज्यन्ते इति लक्षणव्यञ्जनाः, ते च ते गुणास्तैः, उपपेतः=समन्वितः। मानोन्मानप्रमाणप्रतिपूर्णसुजातसर्वाङ्ग-सुन्दराङ्गः=मानं = जलादिपरिपूर्णकुण्डादिप्रविष्टे पुरुषादौ यदा द्रोणपरिमितं

उस भद्रा सार्थवाही के 'धन्य' नामक दारक-पुत्र था। 'दारक' शब्द से यह जानना चाहिए कि वह उसी के गर्भ से उत्पन्न था,-अर्थात् गोद लिया हुआ (दत्तक पुत्र) नहीं था। वह सर्वप्रकार के शुभ लक्षणों से तथा आकारपरिपूर्ण पाँच इन्द्रियों से युक्त सर्वाङ्ग-सुन्दर था। अर्थात्-जिसकी समस्त इन्द्रियाँ अपने-अपने विषय को ग्रहण करने में समर्थ और पूर्ण आकार वाली थीं। वह हाथमें रही हुई विद्या, धन जीवन रेखारूप लक्षणों से, शरीरपर रहे हुए तिल-मस आदि व्यञ्जनो से तथा सुशीलता आदि गुणोंसे युक्त थीं।

मान-कोई पुरुष आदि, जल से लबालब भरे हुए कुंड (शरीर

તે ભદ્રા સાર્થવાહીને ધન્ય નામે દારક-પુત્ર હતો, 'દારક' શબ્દથી એ જાણવું જોઈએ કે તેના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થએલ હતો અર્થાત્ ખોળે લીધેલ ન હતો, તે સર્વ પ્રકારના શુભ લક્ષણોથી તથા આકાર-પરિપૂર્ણ પાંચ ઇન્દ્રિયોથી યુક્ત સર્વાંગ સુન્દર હતો અર્થાત્ જેની બધીય ઇન્દ્રિયો પોતપોતાના વિષયને ગ્રહણ કરવામાં સમર્થ અને પૂર્ણ આકાર વાળી હતી, તે હાથમાં રહેલ વિદ્યા, ધન, જીવન રેખારૂપ લક્ષણોથી, શરીર પર રહેલ તિલ, મસ આદિ વ્યંજનોથી તથા સુશીલતા આદિ ગુણોથી યુક્ત હતો.

जलादि निस्सरति तदा स पुरुषादीर्मानवान उच्यते, तस्य शरीरावगाहनाविशेषो मानमत्र गृह्यते। उन्मानम्=ऊर्ध्वमानं यत्तुलायामारोप्य तोलनेऽर्द्धभारप्रमाणं भवति तत् । प्रमाणं=निजाङ्गुलीभिरष्टोत्तरशताङ्गुलपरिमितोच्छ्रायः, मानं च, उन्मानं च प्रमाणं चेति मानोन्मानप्रमाणानि, तैः प्रतिपूर्णानि=संपन्नानि, अत एव सुजातानि=यथोचितावयवसन्निवेशवन्ति सर्वाणि=सकलानि अङ्गानि= मस्तकादारभ्य चरणान्तानि यस्मिंस्तत्, अत एव सुन्दरमङ्गं=वपुर्यस्य स तथोक्तः। शशिसौम्याकारः=शशी=चन्द्रस्तद्वत्सौम्यः रमणीय आकारः=स्वरूपं यस्य सः।

प्रमाण गहरा, शरीर-प्रमाण लम्बा व शरीर-प्रमाण ही चौडा) आदि में घुसे, और उसके घुसने से यदि एक द्रोण (परिमाण-विशेष) जल बाहर निकले तो उस पुरुष आदि को मानवान (मान से युक्त) कहते है। यहाँ मानवान् पुरुष आदि के शरीर की अवगाहना विशेष को मान कहते हैं। उन्मान–तराजू में रखकर तोलने से जो अर्ध भार (एक प्रकार का परिमाण) हो उसे उन्मान कहते हैं। प्रमाण–अपनी अंगुली से एक सौ आठ अंगुली उंचाई को प्रमाण कहते है।

इन मान, उन्मान और प्रमाण से युक्त होने के कारण यथा-योग्य अवयवों की रचनावाला होने से जिस पुरुष का समस्त अंग सुन्दर हो उसे 'मानोन्मानप्रमाणप्रतिपूर्णसुजातसर्वाङ्गसुन्दराङ्ग' कहते हैं। इस प्रकार की शरीरसम्पदावाला वह धन्य कुमार चन्द्रमा के समान सौम्य आकारवाला, सुन्दर कान्तिवाला, सभी के हृदय को आह्लादित करनेवाला तथा सर्वोत्कृष्ट रूप लावण्य करके युक्त था।

માન–કોઈ પુરુષ આદિ જળથી ભરપૂર ભરેલા કુંડ (શરીર જેટલા ઉંડા અને પહોળો) આદિમા પેસે અને તેના પેસવાથી જો એક દ્રોણ (પરિમાણવિશેષ) જળ બહાર નીકળી જાય તો તે પુરુષ આદિને માનવાન (માનથ યુક્ત) કહે છે અહીં માનવાન પુરુષ આદિના શરીરની અવગાહનાવિશેષને માન કહેવામા આવે છે 'उन्मान'–ત્રાજવામા રાખી તોલવાથી જે અર્ધભાર (એક પ્રકારનો પરિણામ) થાય તેને ઉન્માન કહે છે 'प्रमाण'–પોતાની આંગળિઓથી ૧૦૮ એકસો આઠ આંગુળ ઉંચાઈ ને પ્રમાણ કહે છે

આ માન, ઉન્માન અને પ્રમાણથી યુક્ત હોવાને કારણે યથાયોગ્ય અવયવોની રચનાવાળા હોવાથી જે પુરુષનુ સમસ્ત અગ સુન્દર હોય તેને "मानोन्मानप्रमाणप्रतिपूर्णसुजातसर्वाङ्गसुन्दराङ्ग" કહે છે આ જાતની શરીર સમ્પદાવાળા તે ધન્ય કુમાર ચન્દ્રમા સમાન સૌમ્ય આકારવાળા, સુન્દર કાન્તિવાળા, સહુનાં હૃદયને આહ્લાદિત કરવાવાળા તથા સર્વોત્કૃષ્ટ રૂપ લાવણ્યે કરી યુક્ત હતા

कान्तः=कमनीयः । प्रियदर्शनः=दर्शकजनचित्ताह्लादकं दर्शनम्=अवलोकनं स तथोक्तः । अत एव सुरूपः=सर्वातिशायिरूपलावण्यवान्, रूपेण लावण्यस्याप्युपलक्षितत्वात् । तथा पञ्चधात्रीपरिगृहीतः=पञ्चविधधात्रीप्रतिपालितः । तद्यथा-क्षीरधात्री, धात्री पञ्चविधा-यथा-(१) क्षीरधात्री=स्तन्यपायिका, (२) मज्जनधात्री=स्नापिका, (३) मण्डनधात्री=वस्त्राभरणपरिधापिका, (४) क्रीडनधात्री=खेलनकूर्दनादिकारयित्री, (५) अङ्कधात्री=क्रोडवाहिनी च ।

यथा महाबलः=महाबलकुमारवर्णनवत् धन्यकुमारस्य वर्णनं विज्ञेयम्, यावत् द्वासप्तति कला अधीतवान् । पुनः-यावत् अलं=परिपूर्णः भोगसमर्थः, भोगाः शब्दादयस्तेषु=समर्थो जातश्चाप्यभूत्, धन्यकुमारो यौवनं प्राप्त इत्यर्थः ॥सू० २॥

मूलम्–तए णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णं दारयं उम्मुक्कबालभावं जाव भोगसमत्थं विजाणित्ता बत्तीसं पासायवडिंसए कारेइ, अब्भुग्गयमूसिए जाव तेसिं मज्झे एगं भवणं अणेगखंभसयसन्निविट्ठं जाव बत्तीसाए इब्भवरकन्नगाणं एगदिवसेणं

यह धन्यकुमार पांच प्रकार की धाइयोंद्वारा पाला गया था । (१) क्षीरधात्री–दूध स्तन–पान करानेवाली । (२) मज्जनधात्री–स्नान करानेवाली (३) मण्डनधात्री–वस्त्र आभूषण पहिनानेवाली, (४) क्रीडनधात्री–खेल कूद करानेवाली, और(५) अङ्कधात्री–गोदमें लेनेवाली धाई ।

धन्यकुमार का शेष वर्णन बहत्तर (७२) कलाओं के अध्ययन से लेकर जब तक वे शब्दादि विषयों के भोगों में समर्थ हुए अर्थात् यौवनावस्था को प्राप्त हुए वहाँ तक का वर्णन-श्री भगवतीसूत्र में कहे गये महाबलकुमार के वर्णन के समान जानना चाहिये ॥ सू० २ ॥

આ ધન્યકુમારનુ પાંચ પ્રકારની ધાઈમાતાઓદ્વારા પાલન કરવામા આવેલ હતુ. જેમ-(૧) ક્ષીરધાત્રી–દૂધ ધવરાવનારી. (૨) મજ્જનધાત્રી–સ્નાન કરાવવાવાળી (૩) મંડનધાત્રી–વસ્ત્રાભૂષણ પહેરાવવાવાળી (૪) ક્રીડનધાત્રી ખેલાવવા–કુદાવવાવાળી અર્થાત રમાડવાવાળી, (૫) અંકધાત્રી–ખોળમાં લેવાવાળી ધાઇ.

ધન્યકુમારનું શેષ વર્ણન–બહોતેર ૭૨ કળાઓના અધ્યયનથી માંડી જ્યા સુધી શબ્દાદિ વિષયોના ભોગોમા સમર્થ થયા અર્થાત્ યૌવનાવસ્થાને પ્રાપ્ત થયા ત્યાં સુધીનું વર્ણન શ્રી ભગવતીસૂત્રમા કહેલ મહાબલકુમારના વર્ણનની માફક જાણવું જોઇયે. (સૂ૦ ૨)

पाणिं गिण्हावेइ । बत्तीसओ दाओ जाव उप्पिंपासाय० फुट्ट-तेहिं जाव विहरइ ॥ सू० ३ ॥

छाया-ततः खलु सा भद्रा सार्थवाही धन्यं दारकमुन्मुक्तबालभावं यावद् भोगसमर्थं विज्ञाय द्वात्रिंशतं प्रासादावतंसकान कारयति अभ्युद्गतानुच्छ्रितान् यावत् तेषां मध्ये एकं भवनमनेकस्तम्भशतसंनिविष्टं, यावद् द्वात्रिंशत इभ्यवरकन्यकानामेकदिवसे पाणिं ग्राहयति । द्वात्रिंशत्को दायो यावदुपरि प्रासाद० स्फुटद्भिः यावद् विहरति ॥ सू० ३ ॥

टीका-'तए णं सा' इत्यादि । ततः=तदनन्तरं खलु=निश्चयेन सा सार्थवाही भद्रा धन्यं=धन्यकुमारनामधेयं दारकं=निजपुत्रम् उन्मुक्तबालभावं=अतिक्रान्त बाल्यावस्थं यावत् भोगसमर्थं च विज्ञाय अभ्युद्गतोच्छ्रितान्=अत्युन्नतान् नभःस्पर्शिन इत्यर्थः, द्वात्रिंशतं प्रासादावतंसकान्=श्रेष्ठप्रासादान् कारयति, यावत् तेषां मध्ये अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टम् अनेके=अनेकप्रकारा नानावर्णदेदीप्यमानचारुचिक्यचञ्चचक्षुश्चित्ताह्लादजनकमणिगतविचित्रशिल्परचनाशुशोभिता ये स्तम्भाः=सुवर्णमयस्तम्भाः, तेषां शतैः संनिविष्टं=समन्वितम् एकं भवनं=प्रासादं कारयतीत्यनेनान्वयः, यावत् द्वात्रिंशत इभ्यवरकन्यकानां=महाश्रेष्ठिकन्यकानां पाणिमेकदीवसे ग्राहयति । महाश्रेष्ठिनां द्वात्रिंशत्कन्यकाभिः सहैकस्मिन्नेव दिवसे

'तए णं सा' इत्यादि । तदनन्तर उस भद्रा सार्थवाहीने अपने पुत्र धन्यकुमार को बाल्यावस्था का उल्लङ्घन कर युवावस्थामें आया हुआ तथा भोगसमर्थ जानकर बत्तीस अत्यन्त उन्नत गगनचुम्बी श्रेष्ठ प्रासाद निर्माण कराये । उन भवनों के मध्य में एक सुन्दर भवन, देदीप्यमान विविध वर्णवाली मणियों से खचित, शिल्पकौशल से युक्त, नेत्र तथा मन को आह्लादित करनेवाले सुन्दर अनेक प्रकार के सुवर्णस्तम्भों से युक्त था ।

बाद में उस भद्रा सार्थवाहीने (३२) बत्तीस इभ्य सेठोंकी कन्याओंसे एक दिनमें धन्यकुमारका विवाह कराया ।

'तए णं सा' ઇત્યાદિ, તે પછી ભદ્રા સાર્થવાહી પોતાના પુત્ર ધન્યકુમારને બાલ્યાવસ્થા ઓળંગી યુવાવસ્થામાં આવેલ તથા ભોગસમર્થ જાણી બત્રીસ અત્યન્ત ઉંચા ગગનચુંબી શ્રેષ્ઠ ભવન નિર્માણ-તૈયાર કરાવ્યા, તે ભવનોના મધ્યમાં એક સુન્દર ભવન, દેદીપ્યમાન વિવિધ વર્ણવાળા મણિઓથી જડેલ, શિલ્પ કૌશલ્ય યુક્ત, નેત્ર તથા મનને આહ્લાદિત કરવાવાળા સુન્દર અનેક પ્રકારનાં સુવર્ણ સ્તંભોથી યુક્ત હતું.

धन्यकुमारस्य विवाहं कारितवतीत्यर्थः। अत्र इभ्यशब्देन त्रिविधाः श्रेष्ठिनो ज्ञायन्ते, तथाहि-इभो=हस्ती तत्प्रमाणं द्रव्यमर्हन्तीति इभ्याः, ते च जघन्यमध्यमोत्कृष्टभेदात्त्रिप्रकाराः। तत्र हस्तिपरिमितमणिमुक्ताप्रवालसुवर्णरजतादिद्रव्यराशिस्वामिनो जघन्याः। हस्तिपरिमितवज्रमणिमाणिक्यराशिस्वामिनो मध्यमाः। हस्तिपरिमितकेवलवज्रहीरकराशिस्वामिन उत्कृष्टाः। तेषु वरा=उत्कृष्टाः श्रेष्ठिन इभ्यवरा इति। प्रत्येककन्याया मातापितृभ्यां धन्यकुमाराय प्रदत्तः-द्वात्रिंशत्कः=द्वात्रिंशत्संख्यकः दायः=रत्नाभरणवस्त्रयानासनदासदासीप्रभृतिरूपो यौतुक आगतः

'इभ' शब्दका अर्थ होता है हाथी। जिसके पास हस्तिपरिमित द्रव्य होता है, उसे 'इभ्य' सेठ कहते हैं। ये इभ्य सेठ जघन्य, मध्यम तथा उत्कृष्ट भेद से तीन प्रकार के होते हैं। एक हाथी के परिमाण में जिसके पास माणिक, मोती, मूंगा, सोना, चांदी आदि हो उसे जघन्य इभ्य कहते हैं। एक हाथी के परिमाणमें जिसके पास वज्र मणि, माणिक, आदिकी धनराशि हो, उसे मध्यम इभ्य कहते हैं। एक हाथी के परिमाण में जिसके पास मात्र वज्र हीरे ही हों उसे उत्कृष्ट इभ्य कहते है। इभ्य श्रेष्ठियों में श्रेष्ठ अर्थात् उत्कृष्ट इभ्य श्रेष्ठियों के यहाँ धन्यकुमार का विवाह हुआ प्रत्येक कन्या के माता-पिता द्वारा धन्यकुमार को रत्न, आभरण, वस्त्र, यान-रथ, घोडा, गाडी आदि, आसनपलंग, बिछौने आदि, दास-दासी आदि बत्तीस-बत्तीस दहेज में मिले।

ત્યાર બાદ તે ભદ્રા સાર્થવાહીએ બત્રીસ ૩૨ ઇભ્ય શેઠોની કન્યાઓ સાથે એક દિવસે ધન્યકુમારનો વિવાહ કરાવ્યો અહિં 'इभ' શબ્દનો અર્થ થાય છે હાથી, જેની પાસે હાથી જેટલુ દ્રવ્ય હોય તેને 'इभ्य' શેઠ કહે છે. એ ઇભ્ય શેઠ જઘન્ય મધ્યમ ઉત્કૃષ્ટ ભેદથી ત્રણ પ્રકારના હોય છે, એક હાથીના પરિમાણમા જેની પાસે માણેક, મોતી, મૂંગા, સોના, ચાંદી આદિ હોય તેને જઘન્ય ઇભ્ય કહે છે એક હાથીના પરિમાણમાં જેની પાસે વજ્રમણિ, માણેક આદિની ધનરાશિ હોય, તેને મધ્યમ ઇભ્ય કહે છે. એક હાથીના પરિમાણમાં જેની પાસે માત્ર વજ્ર હીરા હોય તેને ઉત્કૃષ્ટ ઇભ્ય કહે છે. ઇભ્ય શ્રેષ્ઠિઓમાં શ્રેષ્ઠ અર્થાત્ ઉત્કૃષ્ટ ઇભ્ય શ્રેષ્ઠિઓને ત્યાં ધન્યકુમારના વિવાહ થયા, પ્રત્યેક કન્યાના માતા પિતા દ્વારા ધન્યકુમારને રત્ન, આભરણ, વસ્ત્ર, યાન-રથ ઘોડા ગાડી આદિ, આસન-પલંગ, પથારી આદિ. દાસ, દાસી આદિ બત્રીસ બત્રીસ દાયજામાં મળ્યાં.

'यावदुपरि प्रासादे स्फुटद्भिः यावद् विहरतीति। स धन्यकुमारः मृदङ्गादि-विविधवाद्यनादैः स्फुटद्भिः=वादितैः मृदङ्गादिविविधवाद्यैर्युक्ते प्रासादे उपरि=ऊर्ध्वप्रदेशे मनुष्यसम्बन्धीनि पञ्चविधविषयसुखानि भुञ्जानो विहरति ॥सू०३॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे, परिसा निग्गया, राया जहा कोणिओ तहा निग्गओ ॥ सू० ४ ॥

छाया–तस्मिन् काले तस्मिन् समये भगवान् महावीरो यावत्समवसृतः। परिषन्निर्गता। राजा यथा कोणिकस्तथा निर्गतः ॥ सू० ४ ॥

टीका–'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये धन्यकुमारस्य मनुष्यसम्बन्धिपञ्चविधविषयसुखानुभवपूर्वकविहरणसमये तत्र काकन्दीनगर्यां भगवान् महावीरः समवसृतः=समाजगाम। तन्नगरीनिवासिनां परिषद् भगवद्वन्दनार्थं निर्गता। यथा राजा कोणिकः पूर्वं निर्गतस्तथा राजा जितशत्रुरपि भगवन्तं वन्दितुं निर्गतः ॥४॥

तदनन्तर वे धन्यकुमार अपने महल में अनेक प्रकार के मृदंग आदि वाद्यों एवं गीत-नृत्यों के साथ मनुष्यसम्बन्धी पांचो प्रकार के विषय सुखोंका उपभोग करते हुए विचरने लगे ॥ सू० ३ ॥

'तेणं कालेणं' इत्यादि। जिस समय धन्यकुमार मनुष्यसंबंधी पाँच प्रकार के विषय सुखोंका अनुभव कर रहे थे उस काल उस समय काकन्दी नगरी में श्रमण भगवान् श्रीमहावीर प्रभु पधारे। उस नगरनिवासियों की परिषद् भगवान को वन्दनार्थ गई। जिस प्रकार के ठाट-बाट एवं भक्ति के साथ सम्राट कोणिक भगवान महावीर

त्यार पछी ते धन्यकुमार पोताना महेलमां अनेक प्रकारनां मृदंग आदि वाद्यो तेमज गीत नृत्योनी साथे मनुष्यभव संबन्धी पांचेय प्रकारना विषय सुखोनो उपभोग करता विचरवा लाग्या (सू० ३)

'तेणं कालेणं' इत्यादि जे वखते धन्यकुमार मनुष्य भवसंबंधी पाच प्रकारना विषय सुखोनो अनुभव करी रह्या हता ते काल ते समये काकन्दी नगरीमां श्रमण भगवान श्री महावीर प्रभु पधार्या, ते नगरनिवासिओनी परिषद भगवानने वांदवा माटे गई जे प्रकारना ठाग–माठ तेमज भक्तिनी साथे सम्राट कोणिक भगवान

मूलम्-तए णं तस्स धण्णस्स दारगस्स तं महया जण-सद्दं वा जहा जमाली तहा निग्गओ, नवरं पायचारेणं जाव नवरं अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि। जहा सुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह ॥ सू० ५॥

छाया-ततः खलु तस्य धन्यस्य दारकस्य तं महाजनशब्दं वा यथा जमालिस्तथा निर्गतः, नवरं-पादचारेण यावत् नवरम्-अम्बां भद्रां सार्थवाहीमापृच्छामि, ततः खलु अहं देवानुप्रियाणामन्तिके यावत् प्रव्रजामि। यथा सुखं देवानुप्रिय! मा प्रतिबन्धं कुरु ॥सू०५॥

टीका-'तए णं तस्से'-त्यादि। ततः=तदनन्तरं, जितशत्रुभूपतिनिर्गमनसमये खलु काकन्दीनगरीनिवासिनां जनानां परस्परालापादिजन्यमहाकलकलध्वनिश्रवणेन भगवदागमनं ज्ञात्वा तस्य धन्यस्य दारकस्य=धन्यकुमारस्य एवं विधो मनोगतः संकल्पः समजनि, यत्-धर्मादिकरो धर्मतीर्थङ्करो धर्मनायको धर्मसार्थवाहः श्रीवर्द्धमानस्वामी चरमतीर्थङ्करः काकन्दीबहिः प्रदेशे सहस्राम्रवने

स्वामी को वन्दनार्थ गया था उसी प्रकार काकन्दी के राजा जितशत्रु भी भगवान् के वन्दनार्थ गये ॥ सू० ४॥

'तए णं तस्स' इत्यादि। इसके पश्चात् जितशत्रु राजा के गमन समय काकन्दी नगरीनिवासी मनुष्यों के परस्पर वार्तालाप जन्य महाकलकलनाद से भगवान के आगमन को जानकर धन्यकुमारके हृदय में इस प्रकारके विचार उत्पन्न हुए-

धर्म की आदि करनेवाले, धर्मतीर्थकी स्थापना करनेवाले, धर्मनायक, धर्मसार्थवाह, चरमतीर्थङ्कर भगवान् श्री वर्धमानस्वामी काकन्दी

महावीर स्वामीने वन्दनार्थ गया तेज प्रमाणे काकन्दीनाराजा जितशत्रु पण भगवानने वन्दनार्थ गया. (सू० ४)

'तए णं तस्स' ईत्यादि, त्यार पछी जितशत्रुराजाना जवा समये काकन्दी नगरीनिवासी मनुष्योना परस्पर वार्तालापथी उत्पन्न थता कोलाहलथी भगवाननुं आगमन जाणी धन्यकुमारने हृदये आ प्रमाणे विचारो उत्पन्न थया.-

धर्मनी आदि करवावाळा, धर्म-तीर्थनी स्थापना करनार, धर्मनायक, धर्म-सार्थवाह, चरम तीर्थंकर भगवान् श्री वर्धमान स्वामी काकन्दी नगरीनी बहार

उद्याने समवसृतः। सर्वे जनास्तद्वन्दनार्थं गच्छन्ति, तत्=तस्मात्कारणात् गगनात् उच्चैः कलकलध्वनिः श्रूयते। तथारूपाणामर्हतां भगवतां नामगोत्रश्रवणेऽपि महाफलं जायते किं पुनस्तदभिमुखगमने यावत्तत्पर्युपासने ?। इति विचार्य यथा जमालिर्निर्गतस्तथैव धन्यकुमारोऽपि निर्गतः। नवरम्=एतावान् विशेषः- जमालिरश्वरथारूढो निर्गतः, धन्यकुमारस्तु पादचारेण=रथादीयानं विना पद्भ्यामेव जगाम। स तत्र गत्वा भगवन्तं सविधि प्रणम्य धर्मदेशनां श्रोतुं तदन्तिके समुपविष्टः। यावत्=भगवान् तस्यां महापर्षदि धन्यकुमारमभिमुखीकृत्य धर्मकथां

नगरी के बहार सहस्राम्रवन नामक उद्यान में पधारे हैं। समस्त मनुष्य उनको वन्दनार्थ जा रहे हैं, अतः उनके परस्पर वार्तालाप से उत्पन्न यह महाकलकल नाद सुनाई देता है। उपरोक्त महान् गुणों से युक्त ऐसे अर्हन्त भगवन्तों के नाम मात्र के सुननेसे भी महाफल की प्राप्ति होती है तो फिर उन के सन्मुख दर्शनार्थ जाने तथा उनकी सेवा करने के फलका तो कहना ही क्या है।

इस प्रकार विचार करके भगवान् को जिस भाव और भक्ति के साथ जमालि वन्दन करने के लिये गया था, उसी प्रकार धन्य-कुमार भी गया। यहाँ विशेषता यह है कि-जमालि रथ में बैठ-कर भगवान् को वन्दन करने के लिये गया था, परन्तु धन्यकुमार अनेक वाहनों के होते हुए भी पैदल ही-बिना किसी वाहन के गये। वहाँ जाकर उन्होंने भगवान् को सविधि वन्दन किया, तथा धर्म-देशना को श्रवण करने के लिये उनके समीप बैठे। तब भगवान्ने

સહસ્રામ્રવન નામના ઉદ્યાનમા પધાર્યા છે સમસ્ત મનુષ્ય તેમને વંદવા માટે જઈ રહ્યા છે એટલે તે લોકોના અંદરો અંદર વાર્તાલાપથી થતો કોલાહલ સંભળાય છે. ઉપરોકત મહાન ગુણોથી યુકત એવા અર્હન્ત ભગવાનના નામ માત્રના શ્રવણથી મહાફળની પ્રાપ્તિ થાય છે તો પછી તેમની સન્મુખ દર્શનાર્થ જતાં તથા તેમની સેવા કરતા ફળનુ તો કહેવુ જ શુ

એ પ્રમાણે વિચાર કરી, જે ભાવ અને ભકિતથી ભગવાનને જમાલિ વન્દન કરવા ગયા હતા તેજ પ્રમાણે ધન્યકુમાર પણ ગયા અહિં વિશેષતા એ છે કે જમાલિ રથમા બેસી ભગવાનને વંદવા ગયા હતા ત્યારે ધન્યકુમાર પોતાને અનેક વાહનો હોવા છતા પણ કોઈ જાતના વાહન સિવાય પગથી ચાલીને ગયા ત્યાં જઈને તેમણે ભગવાનને વિધિ વન્દન કર્યાં તથા ધર્મદેશના શ્રવણ કરવા ભગવાનની સમીપે

कथयति-'अत्थि लोए अत्थि अलोए' इत्यादि यावत्—

हे धन्यकुमार ! प्रचुरतररत्नखनिपरिपूरितरोहणाचलसदृशं सर्वगुणागारं स्वर्गापवर्गसुखसारं दुर्लभमिदं मनुष्यजन्म। हे देवानुप्रिय ! अनन्तानन्तदुःखानि सहमानेन मुहुर्मुहुः पुद्गलपरावर्त्तनं कुर्वता त्वया कथञ्चिद्विशिष्टपुण्यप्रकृत्युदयेन धर्मानुष्ठानावसरोऽयं लब्धः। ईदृशोऽयमवसरो न पुनर्लभ्यः। हे देवानुप्रिय ! इदं मनुष्यजन्म १, इदमार्यक्षेत्रम् २, अत्रोत्तमकुलम् ३, दीर्घायुष्यम् ४, इन्द्रियपूर्णत्वम् ५, शरीरनैरुज्यम् ६, साधुसमागमः ७, सूत्रश्रवणम् ८, सम्यक्श्रद्धा ९,

---

धन्यकुमार को सम्बोधित करके उस विशाल धर्मसभा में धर्मकथा कहने लगे-'लोक है, अलोक है' इत्यादि।

बाद में फिर भगवान् धन्यकुमार को सम्बोधित कर कहते हैं-हे धन्यकुमार ! अत्यधिक रत्नोंकी खानोंसे परिपूर्ण रोहणाचल पर्वत के समान समस्त गुणों की खान, स्वर्ग तथा मोक्ष के सुखो को देनेवाले यह मनुष्य जन्म अतीव दुर्लभ है। हे देवानुप्रिय ! अनन्तानन्त दुःखों को सहन करते हुए, तथा बार-बार पुद्गल-परावर्त करते हुए तुमने किसी विशिष्ट पुण्य-प्रकृति के उदयसे धर्मानुष्ठान का मनुष्य-भवरूपी यह स्वर्णावसर प्राप्त किया है, ऐसा सु-अवसर पुनः प्राप्त होना मुश्किल है, क्योंकि हे देवानुप्रिय ! (१) मनुष्यजन्म, (२) आर्यक्षेत्र, (३) उत्तमकुल, (४) दीर्घ आयुष्य, (५) समस्त इन्द्रियोंका पूर्ण होना, (६) शरीर का स्वस्थ (नीरोग) होना,

---

બેઠા. ત્યારે ભગવાન્ ધન્યકુમારને સંબોધીને તે વિશાળ ધર્મ સભામાં ધર્મ કથા કહેવા લાગ્યા- 'લોક છે' 'અલોક છે' ઇત્યાદિ.

તે પછી ભગવાન ધન્યકુમારને સંબોધીને કહે છે કે :—

હે ધન્યકુમાર! ઘણાં રત્નોની ખાણોથી પરિપૂર્ણ રોહણાચલ પર્વત સમાન, સમસ્ત ગુણોની ખાણ, સ્વર્ગ તથા મોક્ષના સુખોને દેવાવાળો આ મનુષ્યજન્મ અતિ દુર્લભ છે. હે દેવાનુપ્રિય! અનંતાનન્ત દુ:ખોને સહન કરતાં કરતા તથા વારંવાર અનેક પુદ્ગલ-પરાવર્ત કરતા કરતાં કોઇ વિશિષ્ટ પુણ્ય-પ્રકૃતિના ઉદયથી ધર્માનુષ્ઠાન કરવાને આ મનુષ્ય-ભવરૂપ સુવર્ણાવસ તને પ્રાપ્ત થયો છે. આવો સુઅવસર ફરીથી પ્રાપ્ત થવો મુશ્કેલ છે, કેમકે—હે દેવાનુપ્રિય! (૧) મનુષ્ય જન્મ, (૨) આર્યક્ષેત્ર, (૩) ઉત્તમ કુળ, (૪) દીર્ઘ આયુષ્ય, (૫) સમસ્ત ઇન્દ્રિયોની પરિપૂર્ણતા, (૬) શરીરનું સ્વસ્થ

धर्मे पराक्रमस्फोरणम् १०, इत्येतानि दश मोक्षसाधनानि प्राणिनां दुर्लभानि सन्ति।

हे देवानुप्रिय ! देवदुर्लभमिदं मनुष्यजन्म संप्राप्य यः स्वात्मनः कल्याणाय मोक्षमार्गं नाश्रयति स निजाञ्जलिगतं पीयूषं निपात्य विषं पातुमिच्छति, चिन्तामणिं विहाय पाषाणखण्डं जिघृक्षति, ऐरावतं त्यक्त्वा रासभमारुरुक्षति, कल्पवृक्षमुन्मूल्य बर्बूरमारोपयति, स्पर्शमणिविनिमयेन ग्रावाणं गृह्णाति, कस्तूरीं दत्त्वाऽङ्गारकमङ्गीकरोति, कामधेनुं विक्रीय छागीं क्रीणाति, तेजो विहाय तिमिरं सेवते, राजहंसं विनिन्द्य वायसमाद्रियते, मुक्तां परित्यज्य गुञ्जामुपादत्ते।

---

(७) साधु-समागम, (८) सूत्र-श्रवण, (९) सम्यक्-श्रद्धा, (१०) धर्म-कार्य में पराक्रम फुरना, ये दश मोक्ष के साधन, जीवोंको अत्यन्त कठिनता से प्राप्त होते हैं।

हे देवानुप्रिय ! जो मनुष्य इस दुर्लभ मानव जन्म को प्राप्त कर अपने आत्मकल्याण के लिए मोक्षमार्ग का आश्रय नहीं लेता है वह मानो अपनी अंजलि में आये हुए अमृत को गिराकर विष पीना चाहता है। समस्त इच्छाओं को पूर्ण करनेवाले अनमोल चिन्तामणि-रत्न को छोडकर पत्थर के टुकडे को ग्रहण करना चाहता है। ऐरावत हाथी को छोडकर गधेपर चढना चाहता है। सर्व अभिलाषाओं को पूर्ण करनेवाले कल्पवृक्ष को उखाडकर बबूल बोना चाहता है। पारसमणि देकर बदले में पत्थर के टुकडे को ग्रहण करना चाहता है। कस्तूरी को देकर कोयले को ग्रहण करना चाहता है। कामधेनु गाय को बेचकर बकरी खरीदना चाहता है। प्रकाश को छोडकर अन्धकार ग्रहण करना चाहता है, । राजहंस की निन्दाकर

(નિરોગી) હોવું, (૭) સાધુ-સમાગમ, (૮) સૂત્ર-શ્રવણ, (૯) સમ્યક્-શ્રદ્ધા, (૧૦) ધર્મ કાર્યમા પરાક્રમ ફોરવવો એ દશ મોક્ષસાધન, જીવોને અત્યન્ત દુર્લભતાએ મળે છે

હે દેવાનુપ્રિય ! જે મનુષ્ય, આ દુર્લભ માનવ-જન્મ પ્રાપ્ત કરીને પોતાના કલ્યાણ માટે મોક્ષમાર્ગનો આશ્રય નથી લેતા તે મનુષ્યો પોતાની અંજલિમા આવેલ અમૃતને ઢોળી નાખી વિષપાન કરવા ઇચ્છે છે, સમસ્ત ઇચ્છાઓને પૂર્ણ કરવાવાળા, અણમોલ ચિન્તામણિ રત્નને છોડી પથ્થરના ટુકડાને ગ્રહણ કરવા ઇચ્છે છે, ઐરાવત હાથીને છોડી ગધેડા પર ચઢવાની ઇચ્છા રાખે છે સર્વ અભિલાષાઓ પૂર્ણ કરવાવાળા કલ્પવૃક્ષને ઉખાડી બાવળને રોપવા માંગે છે પારસમણિ આપી તેનાં બદલામાં પથ્થરના ટુકડાને લેવાની ચાહના રાખે છે કસ્તૂરી આપીને કોલસા ગ્રહણ કરવા ઇચ્છે છે કામધેનુ ગાયને વેચી બકરી ખરીદ કરવા ઇચ્છે છે. પ્રકાશને છોડી અન્ધકારને ઇચ્છે

अतः क्षणमात्रसुखदान् परिणामतश्चिरतरदुःखजनकान् कामभोगान् परिहाय सर्वविरतिलक्षणे चारित्रधर्मे सर्वथा प्रयतितव्यम्।

यथा गिरिनदीप्रवाहान्तर्गतपुनःपुनरुद्वर्त्तितपरावर्त्तितपाषाणस्य शतसहस्रप्रघट्टनसंघर्षणैः कथञ्चिद् वर्तुलता संपद्यते, तथैवानन्तकालतोऽनन्तानन्तपुद्गलपरावर्त्तं कृत्वा विशिष्टपुण्योदयेन कथं कथमपि स्वात्मकल्याणाय धर्माराधनस्य दुर्लभोऽयमवसरस्त्वया लब्धः, इत्यादि।

अथ धन्यकुमारः पृच्छति—भगवन्! कोऽयं पुद्गलपरावर्त्तः? भगवानाह-

कौओको आदर देना चाहता है। मोतीको छोडकर गुंजा (चिरमी) लेना चाहता है। अत एव क्षणमात्र के लिए सुखदायी, परन्तु परिणाम में लम्बे समय तक अनन्त दुःख देनेवाले इन काम भोगों को छोडकर सर्वविरतिरूप चारित्रधर्म में सर्व प्रकार से यत्न करना चाहिये।

जिस प्रकार किसी पहाडी नदी के तेज प्रवाह में पडा हुआ पत्थर बारबार ऊपर नीचे गिरने तथा लाखों चोटों और घसीटोंके कारण विनाप्रयत्न–स्वयमेव गोल आकार का हो जाता है, उसी प्रकार अनन्तकाल से अनन्तानन्तपुद्गल परावर्त्त करते हुए किसी विशिष्ट पुण्य प्रकृति के उदयसे अपना आत्मकल्याण करने के लिए धर्मकी आरधना करने का तुम्हें यह दुर्लभ अवसर बडी कठिनतासे प्राप्त हुआ है, इत्यादि।

धन्यकुमार पूछता है—हे भगवन्! यह पुद्गल परावर्त्त क्या है? भगवान् कहते हैं—

છે. ગજરાજની નિન્દા કરી કાગડાને આદર આપવા ઇચ્છે છે. મોતીઓને છોડી ગુંજા (ચણોઠી) લેવા ઇચ્છે છે. એટલે ક્ષણમાત્ર સુખદાયી, પરન્તુ પરિણામમાં લાંબા સમય સુધી અનન્ત દુઃખ દેવાવાળા એ કામભોગોને છોડી સર્વવિરતિરૂપ ચારિત્રધર્મમાં સર્વપ્રકારે યત્ન કરવો જોઇએ. જેવી રીતે કોઇ પહાડી નદીના ઉગ્ર પ્રવાહમાં પડેલ પત્થર વારંવાર ઉપર નીચે ગબડતાં તથા અનેક ઠેકાણે અથડાતાં અથડાતાં અમુક ટાઇમે વગર પ્રયત્ને સ્વયમેવ ગોળ થઇ જાય છે તેવીજ રીતે અનન્ત કાળથી અનન્તાનન્ત પુદ્ગલ–પરાવર્ત કરતાં કરતાં કોઇ વિશિષ્ટ પુણ્યપ્રકૃતિના ઉદયથી આત્મકલ્યાણ અર્થે ધર્મની આરધના કરવાનો અપૂર્વ તેમજ દુર્લભ અવસર તમને મહાન મુશ્કેલીથી પ્રાપ્ત થયો છે. ઇત્યાદિ.

ધન્યકુમાર પૂછે છે– હે ભગવન્! આ પુદ્ગલપરાવર્ત શું છે?

पुद्गलानाम्=आहारकवर्जितौदारिकादिवर्गणायोग्यानां चतुर्दशरज्ज्वात्मक-लोकवर्त्तिसमस्तपरमाणूनां परावर्त्तः=सामस्त्येन स्पर्शः=संमिलनं पुद्गलपरावर्त्तः। स च यावता कालेन भवति स कालोऽपि पुद्गलपरावर्त्त इत्युच्यते । स चानन्तोत्सर्पिण्यवसर्पिणीपरिमाणः । स सप्तविधः—

(१) औदारिकपुद्गलपरावर्त्तः, (२) वैक्रियपुद्गलपरावर्त्तः, (३) तैजसपुद्गलपरावर्त्तः, (४) कार्मणपुद्गलपरावर्त्तः, (५) मनःपुद्गलपरावर्त्तः, (६) भाषापुद्गलपरावर्त्तः, (७) श्वासोच्छ्वासपुद्गलपरावर्त्तः, । उक्तञ्च—

" सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते तं जहा- (१) ओरालियपोग्गलपरियट्टे, (२) वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, (३) तेयापोग्गलपरियट्टे (४) कम्मापोग्गलपरियट्टे, (५) मणपोग्गलपरियट्टे, (६) वइपोग्गलपरियट्टे, (७) आणापाणुपोग्गलपरियट्टे । " (भगवती० श० १२ उ० ४)

आहारक शरीर को छोडकर औदारिक आदि शरीर की वर्गणाओं के योग्य चौदह राजुलोकवर्त्ती समस्त परमाणुओंका समस्त रूपसे सम्मिलन ही पुद्गलपरावर्त है । वह जितने कालसे होता है वह काल भी पुद्गलपरावर्त कहलाता है, इसका परिमाण (कालमान) अनन्त उत्सर्पिणियां और अवसर्पिणियां हैं।

यह पुद्गलपरावर्त सात प्रकार का है :-

(१) औदारिक पुद्गलपरावर्त, (२) वैक्रिय पुद्गलपरावर्त, (३) तैजस पुद्गलपरावर्त, (४) कार्मण पुद्गलपरावर्त, (५) मनपुद्गल-परावर्त, (६) भाषा पुद्गलपरावर्त, (७) श्वासोच्छ्वास पुद्गलपरावर्त । (भगवती० शतक १२ उ ४)

ભગવાન કહે છે- આહારકને છોડીને ઔદારિક આદિ શરીરની વર્ગણાઓને યોગ્ય ચૌદ રાજુલોકવર્તી સમસ્ત પરમાણુઓના સમસ્તરૂપથી સમ્મિલનજ પુદ્ગલ-પરાવર્ત છે, તે જેટલા કાલમાં થાય છે, તે કાળ પણ પુદ્ગલ-પરાવર્ત કહેવાય છે, તેનું પરિમાણ (કાળમાન) અનન્ત ઉત્સર્પિણિઓ અને અવસર્પિણિઓ છે.

આ પુદ્ગલ-પરાવર્ત સાત પ્રકારનુ છેઃ- (૧) ઔદારિક-પુદ્ગલ-પરાવર્ત, (૨) વૈક્રિય-પુદ્ગલ-પરાવર્ત, (૩) તૈજસ-પુદ્ગલ-પરાવર્ત, (૪) કાર્મણ-પુદ્ગલ-પરાવર્ત, (૫) મન-પુદ્ગલ-પરાવર્ત, (૬) ભાષા-પુદ્ગલ-પરાવર્ત, (૭) શ્વાસોચ્છ્વાસ-પુદ્ગલ-પરાવર્ત, આ સાત પુદ્ગલપરાવર્તનો ઉલ્લેખ ભગવતી શ. ૧૨ ઉ. ૪ માં પણ છે

तत्र प्रत्येकं पुद्गलपरावर्त्तश्चतुर्धा भवति–द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदात्। तत्रापि द्रव्यपुद्गलपरावर्त्तादयो बादर–सूक्ष्मभेदात्प्रत्येक द्विधा, यथा—

(१) बादरद्रव्यपुद्गलपरावर्त्तः, (२) सूक्ष्मद्रव्यपुद्गलपरावर्त्तः, (३) बादरक्षेत्रपुद्गलपरावर्त्तः, (४) सूक्ष्मक्षेत्रपुद्गलपरावर्तः, (५) बादरकालपुद्गल-परावर्त्तः, (६) सूक्ष्मकालपुद्गलपरावर्त्तः, (७) बादरभावपुद्गलपरावर्त्तः, (८) सूक्ष्मभावपुद्गलपरावर्त्तः ।

औदारिकादीनां सप्तानां द्रव्यक्षेत्रकालभावविषयभेदात्प्रत्येकं चातुर्विध्येऽष्टाविंशतिर्भेदा भवन्ति। तत्रापि बादरसूक्ष्मभेदात्प्रत्येकं द्वैविध्ये षट्पञ्चाशद् भेदाः पुद्गलपरावर्त्तस्य जायन्ते ।

यह पुद्गलपरावर्त, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव भेदसे प्रत्येक चार प्रकार का होता है। ये द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रूप पुद्गलपरावर्तभी सूक्ष्म और बादर के भेद से प्रत्येक दोर प्रकार के होते हैं। जैसे–

(१) बादर द्रव्य पुद्गलपरावर्त, (२) सूक्ष्म द्रव्य पुद्गलपरार्त,
(३) बादर क्षेत्र पुद्गलपरावर्त, (४) सूक्ष्म क्षेत्र पुदगलपरावर्त,
(५) बादर काल पुद्गलपरावर्त, (६) सूक्ष्म काल पुद्गलपरावर्त,
(७) बादर भाव पुद्गलपरावर्त, (८) सूक्ष्म भाव पुद्गलपरावर्त,

औदारिक आदि सातों ही पुद्गलपरावर्तों को द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव से चौगुने करनेपर (२८) अट्ठाइस भेद होते हैं। इस प्रकार सूक्ष्म और बादर के भेदसे प्रत्येक दो दो प्रकार का होनेसे पुद्गल परावर्त के (५६) छप्पन भेद हो जाते हैं।

આ પુદ્ગલપરાવર્ત દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ, ભાવ, ભેદથી પ્રત્યેક ચાર પ્રકારનાં થાય છે આ દ્રવ્ય ક્ષેત્ર, કાળ, ભાવ, રૂપ પુદ્ગલપરાવર્ત પણ સૂક્ષ્મ અને બાદરના ભેદથી પ્રત્યેક બે બે પ્રકારના થાય છે, જેમ–

(૧) બાદર-દ્રવ્ય–પુદ્ગલપરાવર્ત, (૨) સૂક્ષ્મ-દ્રવ્ય-પુદ્ગલપરાવર્ત, (૩) બાદર-ક્ષેત્ર-પુદ્ગલપરાવર્ત, (૪) સૂક્ષ્મ-ક્ષેત્ર-પુદ્ગલપરાવર્ત, (૫) બાદર-કાળ-પુદ્ગલપરાવર્ત, (૬) સૂક્ષ્મ-કાળ-પુદ્ગલપરાવર્ત, (૭) બાદર-ભાવ-પુદ્ગલપરાવર્ત, (૮) સૂક્ષ્મ-ભાવ-પુદ્ગલપરાવર્ત.

ઔદારિક આદિ સાતેય પુદ્ગલપરાવર્તોને દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ, ભાવથી ચારગુણા કરતાં (૨૮) અઠ્ઠાવીસ ભેદ થાય છે. એ રીતે સૂક્ષ્મ અને બાદરના ભેદથી પ્રત્યેક બબ્બે પ્રકારના હોવાથી પુદ્ગલપરાવર્તના (૫૬) છપ્પન ભેદ થાય છે.

(औदारिकादिपुद्गलपरावर्ताः)

तत्र–औदारिकशरीरे वर्त्तमानो जीवो यदा सकललोकवर्तिनः सर्वानौदारिकशरीरयोग्यपरमाणून् औदारिकशरीरतया सामस्त्येन स्पृशति परिणमयति, परिभुज्य२ मुञ्चति तदा स स्पर्शो औदारिकपुद्गलपरावर्त्तः कथ्यते । एवं वैक्रियपरमाणून् वैक्रियशरीरतया सामस्त्येन एक एव जीवो यदा स्पृशति परिणमयति परिभुज्य२ मुञ्चति तदा स वैक्रियपुद्गलपरावर्त्तः । एवं शेषा अपि तैजसादिपुद्गलपरावर्त्ता विज्ञेयाः ।

। द्रव्यपुद्गलपरावर्त्तः ।

इह किलानादिसंसारे परिभ्रमन् कश्चिदेको जीवो यदाऽनन्तानन्तभवग्रहणैः

औदारिकादि–पुद्गलपरावर्त ।

औदारिक शरीर में स्थित जीवात्मा जब समस्त लोकवर्ती औदारिक शरीर योग्य सब परमाणुओंको सामस्त्यरूप से औदारिक शरीरपने स्पर्श करता है, परिणमन करता है और उपभोगकर छोड देता है तब वह स्पर्श औदारिक पुद्गल परावर्त कहलाता है। एवं वैक्रिय शरीर स्थित जीव जब समस्त लोकवर्ती वैक्रिय शरीर के योग्य परमाणुओंको समस्त रूपसे स्पर्श करता है, परिणमन करता है और उपभोग कर–कर छोड देता है तब वह वैक्रिय पुद्गल परावर्त होता है। इसी प्रकार तैजस आदि समस्त पुद्गल परावर्त्त जान लेना चाहिये।

द्रव्य–पुद्गलपरावर्त ।

इस अनादि संसारमें भ्रमण करताहुआ कोइ एक जीव जब

ઔદારિકાદિ–પુદ્ગલ–પરાવર્ત

ઔદારિક શરીરમાં સ્થિત જીવાત્મા જ્યારે સમસ્ત લોકવર્તી ઔદારિક શરીર યોગ્ય સર્વે પરમાણુઓને સમસ્ત રૂપથી ઔદારિકશરીરપણે સ્પર્શ કરે છે, પરિણમન કરે છે, અને ઉપભોગ કરીને છોડે છે ત્યારે તે સ્પર્શ ઔદારિક–પુદ્ગલ–પરાવર્ત કહેવાય છે એમજ વૈક્રિય–શરીર–સ્થિત જીવ જ્યારે સમસ્તલોકવર્તી વૈક્રિય–શરીર–યોગ્ય પરમાણુઓને સમસ્ત–રૂપથી સ્પર્શ, પરિણમન અને ઉપભોગ કરીને છોડે છે, ત્યારે તે વૈક્રિય–પુદ્ગલ–પરાવર્ત થાય છે એવી રીતે તૈજસ આદિ સમસ્ત પુદ્ગલપરાવર્ત જાણી લેવા

દ્રવ્ય–પુદ્ગલપરાવર્ત.

આ અનાદિ સંસારમાં ભવભ્રમણ કરતાં કરતા કોઈ જીવ જ્યારે અનન્ત અનન્ત

सकललोकवर्तिनः समग्रान् स्व स्व वर्गणायोग्यान् पुद्गलपरमाणून् औदारिकशरीर-वैक्रियशरीर-तैजसशरीर-कार्मणशरीर-मनो-भाषा-श्वासोच्छ्वासलक्षणपदार्थसमस्तभावेन स्पृशति परिणमयति परिभुज्य२ मुञ्चति तदा स परामाणूनां स्पर्शो बादरद्रव्यपुद्गलपरावर्तो भवति।

एकस्य जीवस्य द्रव्यतोऽनन्तानन्तपुद्गलपरावर्त्ता भवन्ति, तथाहि-परमाणवोऽनन्ताः सन्ति, एकैकं परमाणुमनन्तवारमौदारिकादिना जीवः स्पृशति, परिणमयति, परिभुज्य २ मुञ्चति च। तत्रानन्तेन गुणिता अनन्ता अनन्तानन्ता

अनन्त अनन्तभव ग्रहणसे सकल लोकवर्ती समस्त परमाणुओं को अपनी २ वर्गणा के योग्य अर्थात् औदारिकशरीर के औदारिक शरीर योग्य, वैक्रियशरीर-योग्य, तैजस के तैजस शरीर योग्य, कार्मण के कार्मणशरीर-योग्य, मन के मनयोग्य, भाषा के भाषा-योग्य, और श्वासोच्छ्वास के श्वासोच्छ्वासयोग्य पुद्गलपरमाणुओं को सामस्त्यरूपसे स्पर्श कर लेता है, परिणमन कर लेता है और उपभोग कर-कर छोड देता है, तब परमाणुओं का वह स्पर्श बादर-द्रव्य-पुद्गलपरावर्त्त होता है।

द्रव्य से एकजीव के अनन्तानन्त पुद्गलपरावर्त होते हैं, क्यों कि परमाणु अनन्त हैं। एक एक परमाणु को जीव अनन्तवार औदारिकादि सातों ही रूप से स्पर्श करता है, परिणमन करता है तथा उपभोग कर-कर छोड देता है। अनन्त का अनन्त से गुणा करने पर अनन्तानन्त होते हैं। अनन्त परमाणुओं में से एक एक पर-

ભવગ્રહણથી સકલલોકવર્તી સમસ્ત પરમાણુઓને પોત પોતાની વર્ગણાને યોગ્ય, અર્થાત ઔદારિક શરીરને ઔદારિક શરીર યોગ્ય, વૈક્રિયને વૈક્રિય-શરીર યોગ્ય, તૈજસને તૈજસ શરીર યોગ્ય કાર્મણને કાર્મણશરીરયોગ્ય, મનને મનયોગ્ય, ભાષાને ભાષાયોગ્ય, શ્વાસોચ્છવાસને શ્વાસોચ્છવાસયોગ્ય, પુદ્ગલ પરમાણુઓને સમસ્તરૂપથી સ્પર્શ કરે છે, પરિણમન કરે છે અને ઉપભોગ કરી કરી છોડે છે, ત્યારે બાદરદ્રવ્યપુદ્ગલપરાવર્ત થાય છે

દ્રવ્યથી એક જીવને અનન્તાનન્ત પુદ્ગલપરાવર્ત થાય છે, કેમકે પરમાણુ અનન્ત છે. એક એક પરમાણુને જીવ અનન્તાનન્ત ઔદારિક આદિ સાતેય રૂપથી સ્પર્શ કરે છે, પરિણમન કરે છે. તથા ઉપભોગ કરી કરીને છોડે છે. અનન્તને અનન્તથી ગુણતાં

भवन्ति। अनन्तपरमाणूनामेकैकस्य परमाणोरनन्तपरावर्त्तनसद्भावेन अनन्तानन्ताः पुद्गल परावर्त्ता एकस्य जीवस्य भवन्ति।

एवमनन्तानन्तपुद्गलपरावर्त्तरूपेभ्यः संसारमहाचक्रपरिवर्त्तनेभ्यो जीवः कदापि शान्तिं नोपयाति।

औदारिकादिसप्तानामन्यतरेण पुनरेकेन केनचिदौदारिकादिना स्वस्ववर्गणायोग्यान् सकललोकवर्त्तिनः पुद्गलपरमाणून् एकैकं क्रमशः स्पृशति, औदारिकादिशरीरतया परिणमयति, परिभुज्य२ मुञ्चति स स्पर्शः सूक्ष्म-द्रव्यपुद्गलपरावर्तो भवति।

इदमत्र तत्त्वम्-प्रथमं तावत् औदारिकशरीरेण-औदारिकवर्गणायोग्यान् सर्वान् समस्तलोकवर्तिनः पुद्गलान् स्पृष्ट्वा २ परिणमय्य २ उपभुज्य २ पुनः

माणु के अनन्त पुद्गल परावर्त होने से एकजीव के अनन्तानन्त पुद्गलपरावर्त होते हैं।

इस प्रकार अनन्तानन्त पुद्गलपरावर्तरूप संसारमहाचक्र के परिभ्रमण से जीव कभी भी शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता है।

औदारिक आदि सातों ही का अपने अपने रूपसे अर्थात् औदारिक आदि पने से अपनी अपनी वर्गणा के योग्य समस्तलोक-व्याप्त पुद्गलपरमाणुओं को एक एक-करके क्रमशः स्पर्श करना, औदारिक शरीररूप में परिणमन करना तथा उपभोग कर-कर छोड देना ही सूक्ष्म द्रव्यपुद्गलपरावर्त है।

यहाँ तात्पर्य यह है कि-प्रथम औदारिक शरीर द्वारा औदारिक वर्गणा योग्य सकल लोकव्याप्त समस्त पुद्गल-परमाणुओं को

અનન્તાનન્ત થાય છે અનન્ત પરમાણુઓમા એકેક પરમાણુના અનન્ત પુદ્ગલપરાવર્ત થવાથી એક જીવને અનન્તાનન્ત પુદ્ગલપરાવર્ત થાય છે એટલા માટે આ રીતે અનન્ત-પુદ્ગલપરાવર્તરૂપ સંસાર મહાચક્રનાં પરિભ્રમણથી જીવ કદી પણ શાન્તિ પ્રાપ્ત કરી શકતો નથી

ઔદારિક આદિ સાતેયનુ પોતપોતના રૂપથી અર્થાત્ ઔદારિક આદિ પણાથી પોતપોતાની વર્ગણા યોગ્ય સમસ્ત લોકવ્યાપી પુદ્ગલ પરમાણુઓનં એકેક કરતા ક્રમથી સ્પર્શ કરવો, ઔદારિક-શરીર-રૂપમા પરિણમન કરવો તથા ઉપભોગ કરી-કરી છોડી દેવો તેજ સૂક્ષ્મપુદ્ગલપરાવર્ત છે.

અહિ તાત્પર્ય એ છે કે :- પ્રથમ ઔદારિકશરીરથી ઔદારિક-વર્ગણા-યોગ્ય સકલ-લોક-વ્યાપ્ત સમસ્ત પુદ્ગલ-પરમાણુઓને સ્પર્શ કરવો, પરિણમન કરવો તથા

पुनर्मुञ्चति, एवं सकलौदारिकवर्गणायोग्यपुद्गलोपभोगे सति, तदनन्तरं वैक्रियशरीरेण तादृशवर्गणायोग्यपुद्गलान् समग्रान् स्पृशति, परिणमयति, उपभुज्य २ मुञ्चति च, तत्पश्चात् एवं क्रमेणावशिष्टान् तैजसादिवर्गणायोग्यानपि सर्वान् पुद्गलान् स्पृशति, परिणमयति, उपभुज्य२ मुञ्चति स सूक्ष्मद्रव्यपुद्गलपरावर्त्तः कथ्यते। अत्र औदारिकवर्गणायोग्यपुद्गलपरमाणोरेकस्यापि स्पर्शे सति तदभ्यन्तरे वैक्रियादिवर्गणायोग्यपुद्गलान् यदि स्पृशति स तु स्पर्शो न गण्यते।

। क्षेत्रपुद्गलपरावर्त्तः ।

यावन्तो लोककाशस्य प्रदेशाः सन्ति तेषां प्रत्येकप्रदेशस्य क्रमोत्क्रमाभ्यां

स्पर्श करना, परिणमन करना तथा वार वार उपभोग में लेकर छोड देना, इस प्रकार औदारिकवर्गणा योग्य सकल लोकव्याप्त समस्त पुद्गल द्रव्यों के उपभोग कर लेनेपर वैक्रिय शरीर से वैक्रिय वर्गणा योग्य समस्त पुद्गलों का स्पर्श करना, परिणमन करना, तथा उपभोग कर छोड देना, तत्पश्चात् इसी क्रमसे शेष तैजस आदि का अपनी वर्गणाओं के योग्य परमाणुओं को स्पर्श करना परिणमन करना तथा उपभोग में लेकर परित्याग कर देना ही सूक्ष्म द्रव्य पुद्गल परावर्त है। यहाँ इस बात को जान लेना आवश्यक है कि-औदारिक वर्गणा योग्य एक भी पुद्गलपरमाणु का स्पर्श करते हुए जीव यदि इस बीच में आये हुए वैक्रिय वर्गणा योग्य पुद्गलों का स्पर्श करे तो वह स्पर्श नहीं गिना जाता है।

क्षेत्रपुद्गलपरावर्त

लोकाकाश के जितने भी प्रदेश हैं उन में प्रत्येक प्रदेश का

વારંવાર ઉપભોગમાં લઈ છોડી દેવો. એ રીતે ઔદારિક–વર્ગણા–યોગ્ય સકલ–લોકવ્યાપી સમસ્ત–પુદ્ગલ–દ્રવ્યોના ઉપભોગ કર્યા પછી વૈક્રિય–શરીરથી વૈક્રિય–વર્ગણા–યોગ્ય સમસ્ત–પુદ્ગલોને સ્પર્શ કરવો, પરિણમન કરવો તથા ઉપભોગ કરી–કરી છોડી દેવો. ત્યાર પછી એજ ક્રમથી બાકીના તૈજસ આદિનું પોતાની વર્ગણાયોગ્ય પરમાણુઓને સ્પર્શ કરવો, પરિણમન કરવો તથા ઉપભોગમાં લઇને ત્યાગ કરવો સૂક્ષ્મદ્રવ્યપુદ્ગલ-પરાવર્ત છે અહિં એ વાતને જાણી લેવી આવશ્યક છે કેઃ– ઔદારિક–વર્ગણા–યોગ્ય એક પણ પુદ્ગલ પરમાણુઓનો સ્પર્શ કરતા જીવ જો એની વચમાં આવેલ વૈક્રિય–વર્ગણાયોગ્ય પુદ્ગલોને સ્પર્શે તો તે સ્પર્શ ગણી શકાતો નથી

ક્ષેત્રપુદ્ગલપરાવર્ત.

લોકાકાશના જેટલા પણ પ્રદેશ છે, તેમાં પ્રત્યેક પ્રદેશનો ક્રમ–ઉત્ક્રમ–પૂર્વક

मरणेन स्पर्शो भवति तदा बादरक्षेत्रपुद्गलपरावर्त्तो जायते। भवान्तरं भ्रमन् जीवः कालान्तरेण पुनरपि तत्रागत्य तस्मिन्नेव पूर्वावगाढे प्रदेशे यदि म्रियते तदा स प्रदेशो न गण्यते, किन्तु यस्मिन प्रदेशे पूर्वं न मृतः स क्रमेणोत्क्रमेण वा मरणेन स्पृष्टो भवति तदा गण्यते।

यदा तु पूर्वस्पृष्टलोकाकाशप्रदेशादव्यवधानेन क्रमशो लोकाकाशप्रदेशा मरणेन स्पृष्टा भवन्ति चेत्तदा सूक्ष्मक्षेत्रपुद्गलपरावर्त्तो भवति।

अत्रायं भावः-

यदा यस्मिन्नाकाशप्रदेशे पूर्वावगाढे मृतस्तस्मादव्यवधानेन वर्त्तमाने द्वितीये गगनप्रदेशेऽन्यदापि म्रियते, एवमव्यहिततृतीयचतुर्थपञ्चमादिष्वाकाशप्रदेशेषु म्रियते, एवं क्रमेण सर्वान् लोकाकाशप्रदेशान् मरणेन स्पृशति तदा

क्रम-उत्क्रम पूर्वक मरणसे स्पर्श होना ही बादर क्षेत्रपुद्गलपरावर्त है।

भव भ्रमण करता हुआ यदि जीव कालान्तर में पुनः वहां आकर उसी पूर्वावगाढ (पहले अवगाहे हुए) प्रदेश में मरता है तो वह प्रदेश नहीं गिना जाता है, किन्तु जिस प्रदेश में जीव पूर्वमें मृत्यु को प्राप्त नहीं हुआ वह प्रदेश यदि क्रम या उत्क्रम से मृत्यु के द्वारा स्पृष्ट होता हो तो गिना जाता है। यदि पूर्व स्पृष्ट लोकाकाश प्रदेश से विना किसी व्यवधान (अन्तर) के क्रमशः लोकाकाश प्रदेश, मृत्युसे स्पृष्ट होते हों तो सूक्ष्म क्षेत्र पुद्गलपरावर्त होता है।

सारांश—जिस पूर्वावगाढ आकाश प्रदेशमें जीव मरा है, उस आकाश प्रदेशसे विना किसी व्यवधान के रहे हुए द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ पञ्चम आदि आकाश प्रदेशों में किसी भी समय मरता है और इसी

મરણથી સ્પર્શ થવો તેજ બાદરક્ષેત્રપુદ્ગલપરાવર્ત છે ભવ-ભ્રમણ કરતા કરતાં જ્યારે જીવ કાલાન્તરમા ફરીથી ત્યા આવી તેજ પૂર્વાવગાઢ (પૂર્વે અવગાહેલા) પ્રદેશમાં મરે તો તે પ્રદેશ ગણી શકાતો નથી પરંતુ જે પ્રદેશમા જીવ પૂર્વે મૃત્યુને પ્રાપ્ત નથી થયો તે પ્રદેશ જો ક્રમ યા ઉત્ક્રમથી મૃત્યુ- દ્વારા સ્પૃષ્ટ થાય તો ગણી શકાય છે

જો પૂર્વ-સ્પૃષ્ટ લોકાકાશ - પ્રદેશથી કોઈ વ્યવધાન (અન્તર)* વિના ક્રમશ: લોકાકાશ-પ્રદેશ મૃત્યુથી સ્પર્શાય તો સૂક્ષ્મક્ષેત્ર-પુદ્ગલ-પરાવર્ત થાય છે

સારાંશ- જે પૂર્વાવગાઢ આકાશ-પ્રદેશમા જીવ મર્યો છે તે આકાશ-પ્રદેશથી કોઈ વ્યવધાન વિના રહેલા બીજા, ત્રીજા, ચોથા, પાંચમાં આદિ આકાશ-પ્રદેશોમા કોઈપણ સમયે મરે અને એજ ક્રમથી જો સમસ્ત લોકાકાશ-પ્રદેશોને મૃત્યુથી સ્પર્શે તો તે

सूक्ष्मक्षेत्रपुद्गलपरावर्त्तो भवति। परन्तु पूर्वावगाढे प्रदेशे व्यवहितप्रदेशे वा भवचक्रभ्रमणेन पुनः पुनरनन्तवारमपि म्रियते तदा स मरणस्पृष्टः प्रदेशो न गण्यते।

॥ कालपुद्गलपरावर्तः ॥

यदोत्सर्पिण्यवसर्पिण्योर्यावन्तः समया भवन्ति तान् सर्वान् क्रमोत्क्रमाभ्यां मरणैः स्पृशति तदा बादरकालपुद्गलपरावर्त्तो भवति।

यदा तु क्रमेण स्पृशति तदा सूक्ष्मपुद्गलपरावर्त्तः।

अत्रेदं तत्त्वम्—

यदा तूत्सर्पिण्या अवसर्पिण्या वा प्रथमसमये मृतः, ततः पुनरपि एकसमयोनविंशतिसागरोपमकोटीकोटीभिरतिक्रान्ताभिर्भूयोऽपि स एव जन्तुः काला-

---

क्रम से यदि वह समस्त लोकाकाश प्रदेशों को मृत्यु से स्पर्श करता है तो सूक्ष्म-क्षेत्र पुद्गल परावर्त होता है। परन्तु भवचक्र के भ्रमण से जीव यदि पूर्वावगाढ प्रदेश अथवा व्यवहित प्रदेश में बार २ अनन्तवार भी मरता है तो वह प्रदेश मृत्युस्पृष्ट नहीं गिना जा सकता है।

काल पुद्गलपरावर्त—

उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी के जितने समय होते हैं उन सब का क्रम या उत्क्रमसे बारबार मृत्युद्वारा स्पर्श करे तो बादरकाल पुद्गलपरावर्त होता है। यदि जीव क्रम पूर्वक एक के बाद दूसरे को स्पर्श करता है तो सूक्ष्मकाल पुद्गलपरावर्त होता है।

सारांश—कोई जीव उत्सर्पिणी या अवसर्पिणी काल के प्रथम समय में मरा वही जीव एक समय न्यून (कम) बीस कोडा कोडी

સૂક્ષ્મક્ષેત્ર–પુદ્ગલપરાવર્ત થાય છે પરન્તુ ભવચક્રનાં ભ્રમણથી જીવ જો પૂર્વાવગાઢ–પ્રદેશ અથવા વ્યવહિત–પ્રદેશમાં વાર વાર અનન્ત વાર પણ મરે તો તે પ્રદેશ મૃત્યુસ્પૃષ્ટ ગણી શકાતો નથી

કાળપુદ્ગલપરાવર્ત.

ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી કાળમાં જેટલા સમય હોય છે તે બધાયને ક્રમ યા ઉત્ક્રમથી વાર વાર મૃત્યુદ્વારા સ્પર્શ કરે તો તે બાદર–કાળ પુદ્ગળપરાવર્ત થાય છે.

જો જીવ ક્રમપૂર્વક એક પછી બીજાને સ્પર્શ કરે તો તે સૂક્ષ્મકાળપુદ્ગળ-પરાવર્ત થાય છે

સારાંશ– કોઇ જીવ ઉત્સર્પિણી અથવા અવસર્પિણી કાળના પ્રથમ સમયમાં મર્યો, તેજ જીવ એક સમય ન્યૂન વીસ કોડા–કોડી સાગરોપમ વીત્યા પછી કાલાન્તરે તેજ ઉત્સ-

न्तरेण तस्या एव द्वितीयसमये म्रियते, पुनरपि कदाचित्तथैव ताभिरति-क्रान्ताभिरतस्या एव तृतीयसमये म्रियते, एवं चतुर्थपञ्चमषष्ठादिसमयक्रमेणानन्तानन्तैर्भवैर्यावत्सर्वेऽपि उत्सर्पिण्यवसर्पिण्योर्विंशतिसागरोपमकोटीकोटीमानयोः समया मरणेन व्याप्ता भवन्ति तदा सूक्ष्मकालपुद्गलपरावर्तो भवति। ये तु प्रथमादिसमयक्रममुल्लङ्घ्य व्यवहितसमया, पूर्वस्पृष्टसमया वा मरणेन स्पृष्टा भवन्ति ते तु नात्र गृह्यन्ते।

। भावपुद्गलपरावर्तः ।

कषायवशेनाध्यवसाया भवन्ति, ततश्च कर्मबन्धः। तत्र बहुधा तारतम्यं कषायाणां मन्दतीव्रादिभेदाद् भवति, तत्कर्मविपाकरूपस्यानुभागबन्धस्याध्यवसाय-

---

सागरोपमके बीत जानेपर कालान्तर से उसी उत्सर्पिणी या अवसर्पिणी के दूसरे समय में मरता है तथा फिर भी उसी प्रकार कदाचित् तीसरे चौथे, पांचवे, छट्ठे, आदि समय में मरे, इस क्रमसे उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी के बीस कोडा कोडी सागरोपम में जितने भी समय हैं, उन सबों को अनन्तानन्त भवों को ग्रहण कर मृत्यु से स्पर्श करना ही सूक्ष्म कालपुद्गलपरावर्त है, जो व्यवहित या पूर्वस्पृष्ट समय इस क्रम से मृत्युद्वारा स्पृष्ट न होकर आगे पीछे स्पृष्ट होते हैं तो वे नहीं गिने जाते हैं।

भावपुद्गलपरावर्त-

कषाय के वशीभूत होने से अध्यवसाय होते हैं। अध्यवसायों से कर्मबन्ध होते हैं। उन में मन्द और तीव्र आदि भेदसे

र्पिणी अथवा अवसर्पिणीनां बीजा समयमां मरे तथा फरी पण तेज प्रकारे त्रीजा, चोथा, पांचमा, छट्ठा आदि समयमां मरे ए क्रमथी उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना वीस कोडाकोडी सागरोपममां जेटला पण समय छे ए बधायनु अनन्तानन्त भवोने ग्रहण करी मृत्युनो स्पर्श करवो तेज सूक्ष्मकाळ पुद्गलपरावर्त छे, जे व्यवहित (आतरे पडेल) अथवा पूर्वस्पृष्ट समय आ क्रमथी मृत्युद्वारा स्पर्शाया विना आगळ-पाछळ स्पर्श थाय तो तेनी गणत्री थती नथी.

भावपुद्गलपरावर्त

कषाय-वश थवाथी अध्यवसाय थाय छे, अध्यवसायथी कर्म-बन्धन थाय छे, तेमां मन्द अने तीव्र आदि भेदथी कषायोमां परस्पर घणुंखरुं अंतर होय छे

स्वरूपस्य स्थानानि मन्दतीव्रादिभेदेनासंख्यातानि वर्त्तन्ते । प्राणिनां यादृशी विभिन्नरूपा प्रवृत्तिस्तादृशा भिन्नभिन्नरूपा अध्यवसाया अपि भवन्ति, तस्मात्तेषां प्रत्येकं स्थानं भिन्नं भिन्नं भवति । तत्र–असंख्यातेषु अनुभागबन्धाऽध्यवसाय-स्थानेषु मध्ये कस्मिंश्चिदेकस्मिन् स्थाने तदनुरूपकषायोदये वर्त्तमानः कश्चिन्मृतः । एवं क्रमेण उत्क्रमेण च मरणेन सर्वाणि असंख्यातलोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि अनुभाग-बन्धाध्यवसायस्थानानि स्पृष्टानि भवन्ति तदा बादरभावपुद्गलपरावर्त्तो भवति ।

अत्रापि यदध्यवसायस्थान मरणेन स्पृष्टं तदेव पुनरन्यदापि मरणेन स्पृशति तदा तन्न गण्यते । यत्तु पूर्वं मरणेन न स्पृष्टं तद् दूरव्यवहितमपि स्पृष्टं भवति चेत्तदा गण्यत एव ।

कषायों में परस्पर बहुत सा अन्तर होता है । इस कारण मन्द और तीव्र आदि भेदसे कर्मों के विपाकरूप अनुभाग बन्ध के असंख्यात अध्यवसाय स्थान हैं । प्राणियों की जिस २ प्रकार की विभिन्न २ प्रवृत्तियां हैं उस २ प्रकार के भिन्न २ अध्यवसाय हैं, इस लिये उनका प्रत्येक स्थान भिन्न २ होता है । अनुभाग बन्ध के असंख्यात अध्यवसाय स्थानों में से किसी एक स्थान में उसके अनुरूप कषाय के उदय में रहा हुवा कोई जीव मृत्युप्राप्त हुआ हो, इसी प्रकार क्रम और उत्क्रमसे मृत्युद्वारा अनुभागबन्ध के असंख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमाणवाले समस्त अध्यवसाय स्थान स्पृष्ट हो तब बादर भाव पुद्गलपरावर्त होता है ।यहाँ भी जो अध्यवसाय स्थान यदि मृत्यु से स्पर्श कर लियागया है और वही फिर कभी मृत्युसे स्पृष्ट होता है तो

એટલે મન્દ અને તીવ્ર આદિ ભેદથી કર્મોના વિપાકરૂપ અનુભાગ–બન્ધના અસંખ્યાત અધ્યવસાય સ્થાન છે. પ્રાણિયોની જે જે પ્રકારની ભિન્ન ભિન્ન પ્રવૃત્તિઓ છે તે તે પ્રકારના ભિન્ન ભિન્ન અધ્યવસાયો છે. એથી તેનું પ્રત્યેક સ્થાન ભિન્ન ભિન્ન થાય છે અનુભાગ–બન્ધના અસંખ્યાત અધ્યવસાય સ્થાનોમાથી કોઇ એક સ્થાનમાં તેને અનુરૂપ કષાયના ઉદયમાં રહેલ કોઇ જીવ મૃત્યુ પ્રાપ્ત થયો હોય અને તેજ રીતે ક્રમ અને ઉત્ક્રમથી મૃત્યુદ્વારા અનુભાગ બન્ધનાં અસંખ્યાત લોકાકાશ પ્રદેશ પ્રમાણવાળા સર્વે અધ્યવસાય સ્થાન સ્પૃષ્ટ થાય ત્યારે બાદરભાવ પુદ્ગલ–પરાવર્ત થાય છે

અહીં પણ જો અધ્યવસાય–સ્થાન કદાચ મૃત્યુથી સ્પર્શ કરેલ હોય અને તેજ ફરી ક્યારેક મૃત્યુથી સ્પૃષ્ટ થાય તો તે ગણવામાં નથી આવતું; પરન્તુ જે સ્થાન

अनुभागबन्धाध्यवसायस्य यावन्ति स्थानानि सन्ति तानि सर्वाणि क्रमशो मरणेन यदि स्पृशति तदा स स्पर्शः सूक्ष्मभावपुद्गलपरावर्त्तो भवति ।

इदमत्र तत्त्वम्–सर्वजघन्ये कषायोदयरूपाध्यवसाये वर्त्तमानो मृतस्ततो यदि स एव पुनरनन्तेऽपि काले गते सति प्रथमादव्यवहिते द्वितीयेऽध्यवसायस्थाने वर्त्तमानो म्रियते तन्मरणं गण्यते, न तु तदवशिष्टानि व्युत्क्रमप्राप्तान्यनन्तान्यपि मरणानि, ततः कालान्तरे यदि पुनर्द्वितीयस्मादध्यवसायस्थानादव्यवहिते तृतीयेऽध्यवसायस्थाने वर्त्तमानो म्रियते तदा तृतीयं मरणं गण्यते,

---

वह नहीं गिना जाता है, परन्तु जो स्थान पहले मृत्युसे नहीं स्पृष्ट हुआ वह यदि बहुत अन्तर के बाद भी मृत्यु से स्पृष्ट हुआ हो तब गिना ही जाता है ।

अनुभागबन्धके जितने अध्यवसाय स्थान हैं उन सबको क्रमसे यदि जीवात्मा मृत्युद्वारा स्पर्श करता है तो वह सूक्ष्मभाव पुद्गलपरावर्त होता है ।

सारांश–कषाय के उदयरूप-सर्व जघन्य अध्यवसाय स्थान में रहा हुआ कोई जीव मृत्यु प्राप्त हुआ, तदनन्तर यदि वही जीव फिर अनन्तकाल के व्यतीत होनेपर भी उस से अव्यवहित अर्थात् अन्तररहित दूसरे स्थान में रहकर मरता है तो वह मरण गिना जाता है, परन्तु यदि वह जीव उससे लगे हुए दूसरे स्थान में मृत्यु प्राप्त न होकर अनन्तकाल पर्यन्त भी अन्यस्थानों में मरता रहा हो, तो वे स्थान नहीं गिने जाते हैं, चाहे वे अनन्त मरण भी क्यों न हुए हों । कालान्तर में यदि वही जीव द्वितीय अध्यवसाय स्थानसे

પહેલા મૃત્યુથી સ્પૃષ્ટ ન થયું હોય તો તે કદાચ ઘણા અન્તર પછી પણ મૃત્યુથી સ્પૃષ્ટ થયુ હોય ત્યારે ગણી શકાય છે

અનુભાગ–બન્ધના જેટલા અધ્યવસાયસ્થાન છે તે બધાયને ક્રમથી જો જીવાત્મા મૃત્યુદ્વારા સ્પર્શ કરે તો તે સૂક્ષ્મભાવ–પુદ્ગલ પરાવર્ત થાય છે

સારાંશ–કષાયનાં ઉદયરૂપ સર્વજઘન્ય-અધ્યવસાય–સ્થાનમાં રહેલ કોઈ જીવ મૃત્યુ પ્રાપ્ત થયો ત્યારબાદ જો તેજ જીવ ફરી અનન્તકાલ વીત્યા પછી પણ તેનાથી અવ્યવહિત અર્થાત્ અન્તરરહિત બીજા સ્થાનમા રહીને મરે તો તે મરણ ગણી શકાય છે પરન્તુ જો તે જીવ તેનાથી લાગેલ બીજા સ્થાનમા મૃત્યુ પ્રાપ્ત ન થઈને અનન્તકાળ સુધી પણ અન્ય સ્થાનોમા મરતો રહ્યો હોય તો તે સ્થાનો ગણવામા આવતાં નથી ભલે તે અનન્ત મરણ પણ થઈ ગયા હોય. કાળાન્તરમાં જો તેજ જીવ બીજા અધ્યવસાય

न तु तदवशिष्टानि तन्मध्यगतान्यनन्तान्यपि मरणानि । एवं क्रमेण यदि सर्वाण्यसंख्यातान्यनुभागबन्धाध्यवसायस्थानानि यदा स्पृष्टानि भवन्ति तदा सूक्ष्मभावपुद्गलपरावर्तो भवति ।

मिले हुए तृतीय अध्यवसाय स्थान में मरता है, तो वह तृतीय मरण गिना जाता है किन्तु उस के अन्तराल में आये हुए अन्य मरण नहीं । इसी क्रमसे यदि अनुभागबन्ध के समस्त असंख्यात अध्यवसाय स्थान मृत्यु से स्पृष्ट हों, तब सूक्ष्म भाव पुद्गलपरावर्त होता है।

भावार्थ—जैन दर्शनमें अत्यन्त सूक्ष्म से सूक्ष्म काल को समय कहते हैं, जिसका कोई विभाग न हो सके। ऐसे असंख्य समयों की एक आवलिका होती है। एक करोड सतसठ लाख सतहत्तर हजार दो सौ सोलह आवलिकाओं का एक मुहूर्त्त होता है। तीस मुहूर्त्त का एक 'दिन-रात' होता है। पन्द्रह दिवस का एक पक्ष, दो पक्ष का एक मास, बारह मास का एक वर्ष होता है। असंख्यात वर्षों का एक पल्योपम, दश कोडाकोडी पल्योपम का एक सागरोपम, दश कोडाकोडी सागरोपम की एक उत्सर्पिणी होती है। तथा अवसर्पिणी भी दश कोडाकोडी सागरोपमकी होती है। उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी मिलकर एक कालचक्र होता है। सांपकी पूंछसे मुख तक

સ્થાનથી મળેલ ત્રીજા અધ્યવસાય સ્થાનમાં મરે તો તે ત્રીજું મરણ ગણાય છે. પરન્તુ તેના વચમાં આવેલ અન્ય મરણ ગણાય નહીં. એજ ક્રમથી જો અનુભાગ-બન્ધના સમસ્ત અસંખ્યાત અધ્યવસાય સ્થાન મૃત્યુથી સ્પૃષ્ટ થાય ત્યારે સૂક્ષ્મભાવ-પુદ્ગલપરાવર્ત થાય છે.

ભાવાર્થ-જૈન-દર્શનમા અત્યન્ત સૂક્ષ્માતિસૂક્ષ્મ કાળને સમય કહે છે. જેનો કોઇ વિભાગ ન થઇ શકે એવા અસંખ્ય સમયોની એક આવળિકા થાય છે, એક કરોડ સડસઠ લાખ સીતોતેર હજાર બસો સોળ આવળિકાઓનુ એક મુહૂર્ત થાય છે. ત્રીસ મુહૂર્તના એક 'દિન-રાત' થાય છે. પંદર દિવસનું એક પક્ષ થાય છે. બે પક્ષનો એક મહિનો, બાર માસનું એક વર્ષ થાય છે. અસંખ્યાત વર્ષોનું એક પલ્યોપમ, દસ કોડાકોડી પલ્યોપમનુ એક સાગરોપમ, દસ કોડાકોડી સાગરોપમની એક ઉત્સર્પિણી થાય છે. તથા અવસર્પિણી પણ દસ કોડાકોડી સાગરોપમનીજ થાય છે. ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી મળીને એક કાળચક્ર થાય છે. સર્પની પુછડીથી મોઢા સુધીના શરીરની માફક

इत्थं चतुर्गतिभ्रमणशीलस्य जीवस्यानन्तानन्तपुद्गलपरावर्त्तान् भगवतः सकाशान्निशम्यापारसागरकल्पं संसारं परिज्ञाय जन्मजरामरणाधिव्याधिपरिगतस्य जीवस्य विविधं दुरन्तदुःखं धन्यकुमारस्य चित्तपथे समारुरोह, यथा-

अयं जीवः खलु गर्भगतमात्र एव मातुः स्वातन्त्र्यं छिन्दन् धमनी-

के शरीर के सदृश जिस काल में भरत ऐरवत आदि क्षेत्र के मनुष्यों का, शरीर आयुष्य बुद्धि और बल आदि बढते हों उसे उत्सर्पिणी काल कहते हैं। जिस काल में सांप के मुखसे पूंछ की तरफ के शरीरकी तरह क्रमशः आयुष्य, बल, बुद्धि आदि का ह्रास होना हो उसे अवसर्पिणी काल कहते हैं। प्रत्येक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी में छ छ आरे होते हैं। इस प्रकार अनन्त उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी के बीत जानेपर एक औदारिक पुद्गलपरावर्त होता है, इसी तरह सातो पुद्गलपरावर्तों में अनन्त-अनन्त कालचक्र व्यतीत हो जाते हैं।

इस प्रकार भगवान के समीप जीवके चतुर्गति-भ्रमणकारक अनन्त-पुद्गलपरावर्तो के स्वरूप को सुनकर तथा अपार महासागर के समान संसार को जानकर धन्यकुमार जन्म, जरा, मरण, और आधि – व्याधि – ग्रस्त जीव के महादुःखों को समझकर चित्त में सोचने लगा :—

संसार में सभी जीव दुःखी हैं, सुखी कोई भी जीव दृष्टि-गोचर नहीं होता है। माता के गर्भ में आते ही जीव माता की

જે કાળમા ભરત ઐરવત આદિ ક્ષેત્રના મનુષ્યોનું શરીર, આયુષ્ય, બુદ્ધિ, બલ, આદિ વૃદ્ધિ પામતાં હોય તેને ઉત્સર્પિણીકાળ કહે છે, અને જે કાળમા સાપના મુખથી પુંછડી સુધીના શરીરની જેમ ક્રમશઃ આયુષ્ય બલ બુદ્ધિ આદિનો હ્રાસ થતો હોય તેને અવસર્પિણીકાળ કહે છે પ્રત્યેક ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણીમા છ છ આરા હોય છે, એ પ્રકારે અનન્ત ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણીઓ પૂરી થાય ત્યારે એક ઔદારિક–પુદ્ગલ–પરાવર્ત થાય છે એજ રીતે સાતેય પુદ્ગલ–પરાવર્તમાં અનન્ત–અનન્ત કાળચક્ર વ્યતીત થઈ જાય છે

એ પ્રમાણે ભગવાન સમીપે જીવના ચતુર્ગતિભ્રમણકારક અનન્ત પુદ્ગલ–પરાવર્તોના સ્વરૂપને સાંભળી તથા અપાર મહાસાગર સમાન સંસારને જાણી ધન્યકુમાર જન્મ, જરા, મરણ અને આધિવ્યાધિ–ગ્રસ્ત જીવનાં મહાદુઃખોને સમજી તે હૃદયમાં વિચારવા લાગ્યા.—

સંસારમાં સર્વે જીવ દુઃખી છે, કોઈ પણ સુખી દૃષ્ટિગોચર થાતુ નથી માતાના

जालेन परिबद्धं जरायुपरिवेष्टितं बद्धभुजद्वयं बद्धजानुद्वयातिपीडितग्रीवमशुचि-स्थाने महान्धकारे पतितं सर्वथा परतन्त्रमेवात्मानं पश्यति ।

तत्रैव च मातुः प्रतिकूलोत्थानगमनादिषु नितरां क्लिश्यति । तीक्ष्णं तिक्तं कटुं क्षारं शीतमुष्णं वा मातृभुक्तान्नादिरसं प्राप्य चिरं ताप्यते ।

एवं तीव्रतरकष्टेन कथं-कथमपि नियतकालं तत्र स्थित्वा प्रसूतिपवनैः परिपीड्यमानो मूर्च्छामुपगतो म्रियमाण इव निपतति गर्भात् । ततस्तु बाल्ये जन्मदुस्सहवेदनानुभवाद्विस्मृतसकलपूर्वचरितः कठोरतरभूभागघर्षणस्य शर्कराद्विद्ध-नस्य पिपीलिकादिदंशस्य क्षणे क्षणे पतनस्य च नवां नवां वेदनां सहते ।

स्वतन्त्रता को हरण कर लेता है, स्वयं भी धमनियों के जाल से बद्ध, जरायु से परिवेष्टित, हाथों और पावों से बंधा हुआ तथा औंधा लटकता हुआ गर्दन की पीडासे अत्यन्त दुःखित हो महान्धकारयुक्त अशुचि स्थान में पडा हुआ सर्वथा परतन्त्रताका अनुभव करता है ।

वहां माता के, नियमविरुद्ध उठने-बैठने तथा चलने फिरने से अत्यन्त दुःखी होता है । गर्भ में माता के द्वारा खाये हुए अन्नादि के तीखे, कडवे, कषायले, खारे ठंडे तथा गर्म रसरूप उच्छिष्ट से क्लेश पाता है ।

इस प्रकार तीव्र कष्ट भोगता हुआ किसी भी तरह नौ मास साढे सात दिन के नियतकाल पर्यन्त गर्भ की महान् वेदना को सहन कर जब जन्म लेता है तब प्रसूतिकालीन पवनसे अत्यन्त पीडित हो तथा उस दुस्सह दुःख से मूर्च्छित हो मरे हुए के समान गर्भ से गिर पडता है ।

ગર્ભમાં આવતાજ જીવ માતાની સ્વતન્ત્રતાનું અપહરણ કરી લે છે, પોતે પણ ધમણી-ઓની જાળથી બંધાએલ, જરાયુથી પરિવેષ્ટિત (વીંટાએલું), હાથ-પગથી બંધાએલ તથા ઉંધા લટકવાથી ગર્દનની પીડાને લીધે અત્યન્ત દુઃખિત થઇ મહાન્ધકાર-યુક્ત અશુચિ-સ્થાનમાં રહી સર્વ પ્રકારે પરતન્ત્રતાનો અનુભવ કરે છે

ત્યાં માતાના નિયમ-વિરુદ્ધ ઉઠવા-બેસવા તથા હરવા-ફરવાથી અત્યન્ત દુઃખિત થાય છે. ગર્ભમાં માતાથી ખવાતા અન્નાદિના તીખા, કડવા, કષાયલા, ખારા, ઠંડા તથા ગરમ રસરૂપ ઉચ્છિષ્ટ પદાર્થોથી ક્લેશ પામે છે એ પ્રમાણે તીવ્ર કષ્ટ ભોગવતા કોઇપણ રીતે નવ માસ સાડાસાત દિવસના નિયતકાળ પર્યન્ત ગર્ભની મહાન વેદના સહન કરી જ્યારે જન્મ લે છે ત્યારે પ્રસૂતિ કાળના પવનથી અત્યન્ત પીડિત હોઇ તથા એ દુઃસહ દુઃખોથી મૂર્ચ્છિત થઇ મરેલાની માફક ગર્ભથી પડી જાય છે

मध्ये-मध्ये कासश्वासकफज्वरविषमविषमयस्फोटकशिरःशूलादिभिरतीव्ररोगैरुपद्रुतो दुःखमनुभवति, यदवलोकनेन परस्यापि हृदयं विदीर्णमिव भवति।

अथ युवत्वं प्राप्यार्त्तरौद्रध्यानमुपगत इष्टवियोगानिष्टसंयोगादिना विविधं तापमनुभवति। इत्थमेव वृद्धत्वे च प्रखरप्राणादिवायुभिः कण्ठनालिकां कर्त्तयद्भिरिव ऊर्ध्वैः श्वासप्रश्वासैः, घुर्घुरायितैः कफैर्व्याकुलीकृतचित्तः, शुष्कतां गतैर्मांसरुधिरैः शिथिलितसर्वाङ्गोपाङ्गः परां मूर्च्छामुपयाति।

फिर बाल्यावस्था में, जन्मसमय की असह्य पीडा के कारण वह अपनी पूर्व आत्मकथा को भूल जाता है, और अत्यन्त कठोर भूमि की तथा कंकर आदि की रगड से, चींटी आदि के काट लेने से, तथा वार वार जमीन पर गिरने से नये २ दुःखों को सहन करता है।

बीच बीच में खांसी, श्वास, कफ, ज्वर, विषम जहरीले फोडे तथा मस्तकशूल आदि अनेक भयङ्कर रोगों के उपद्रव से दुःख का अनुभव करता है, जिन दुःखों को देख कर दूसरे मनुष्यों का भी हृदय विदीर्ण एवं द्रवित हो जाता है।

यौवन-अवस्था में इष्ट वस्तु के वियोग तथा अनिष्ट वस्तु के संयोग से आर्त एवं रौद्र ध्यान ध्याता हुआ अनेक प्रकार के संताप का अनुभव करता है।

इसी प्रकार वृद्धावस्था में भी कण्ठनली को काट रही हो वैसी अत्यन्त तेज प्राण आदि वायु से, ऊर्ध्व श्वास-प्रश्वासों के द्वारा

વળી બાલ્યાવસ્થામાં જન્મ-સમયની અસહનીય પીડાને કારણે તે પોતાની પૂર્વ આત્મકથાને ભૂલી જાય છે અત્યન્ત કઠોર ભૂમિ તથા પાણા આદિના ઘસારાથી કીડિયો આદિના કરડવાથી તથા વારવાર જમીન પર પટકાવાથી નવા નવા દુખોને સહન કરે છે

વચ્ચે વચ્ચે ખાંસી, શ્વાસ, કફ, જ્વર, વિષમ ઝેરીલા ફોડકા તથા મસ્તકશૂલ આદિ અનેક ભયંકર રોગોના ઉપદ્રવથી દુખોનો અનુભવ કરે છે જે દુખોને જોઇ બીજા મનુષ્યોનાં હૃદય પણ વિદીર્ણ અને દ્રવિત થઇ જાય છે

યૌવન-અવસ્થામા ઇષ્ટ વસ્તુના વિયોગ તથા અનિષ્ટ વસ્તુના સંયોગથી આર્ત તેમજ રૌદ્ર ધ્યાન ધ્યાતા અનેક પ્રકારના સંતાપોનો અનુભવ કરે છે એવી રીતે વૃદ્ધાવસ્થામાં પણ કંઠનલીને કાપવા જેવા અત્યન્ત તીવ્ર પ્રાણ આદિ વાયુથી, ઉર્ધ્વ શ્વાસ-પ્રશ્વાસદ્વારા ઘર્ઘરાતા કફથી અતિવ્યાકુલ-ચિત્ત થઇ તથા રૂધિર અને માંસથી રહિત

शरीरं चेदमशुचिसंभूतत्वादशुचिप्रस्रवणाच्च नितान्तमपवित्रम् ।

कामोपभोगाः–वान्तास्रव–पित्तास्रव–खेलास्रव–शुक्रास्रव–शोणितास्रवाऽशनतुल्याः, क्षणमात्रसुखदाः, अनन्तकालदुःखदा दुरन्ताश्च सन्ति ।

आत्मनः परलोकगमनकाले न कोऽपि कस्यापि त्राणाय वा शरणाय वा भवति, यथा—

सर्वाणि धनानि–अत्रैव भूमौ तिष्ठन्ति, पशवः स्वबन्धनशालायाम् । गृहद्वारपर्यन्तं भार्या, स्वजनाः श्मशानान्तं मृतशरीरमनुगच्छन्ति । स्वशरीरमपि

घुर्घुराते हुए कफसे अतीव व्याकुलचित्त हो, तथा रुधिर मांस से रहित शिथिल अंगोपाङ्ग हो, दारुण (भयंकर) व्यथा के कारण मूर्च्छित हो जाता है ।

यह औदारिक शरीर तो अशुचि पदार्थों से उत्पन्न होने तथा प्रतिक्षण अशुचि पदार्थों के झरने से अशुचि ही है ।

कामभोग–

कामभोगों का सेवन करना, वान्त (कै) पित्त, कफ, वीर्य तथा रक्त का प्राशन करना है । ये कामभोग क्षणमात्र के लिये सुखदायी तथा अनन्त काल के लिये दुःखदायक हैं, और ये दुस्त्यज (छोडने में मुश्किल) होते हैं ।

आत्मा के परलोकगमन करते समय कोई उसे बचाने वाला अथवा उसे शरण देने वाला नहीं होता है । यह सारा भौतिक वैभव यहाँ भूतल पर ही रह जाता है । पशु अपने वाडों में ही बंधे रहे जाते हैं । घर के दरवाजे तक पत्नी तथा श्मशान तक भाई-

---

શિથિલ અંગોપાંગ થઈ દારૂણ (ભયંકર) દુઃખોને કારણે મૂર્છિત થઈ જાય છે.

આ ઔદારિક શરીર તો અશુચિ પદાર્થોથી ઉત્પન્ન હોવાને લીધે તથા પ્રતિક્ષણ અશુચિ પદાર્થોના ઝરવાથી અશુચિજ છે.

કામભોગ

કામભોગોનુ સેવન કરવું વાન્ત (વમિટ), પિત્ત, કફ, વીર્ય તથા રક્તનું પ્રાશન કરવા બરોબર છે એ કામભોગ ક્ષણમાત્ર માટે સુખરૂપ તથા અનન્ત કાલ માટે દુઃખદાયક છે અને એ દુસ્ત્યજ (છોડવામાં મુશ્કેલ) હોય છે.

આત્માને પરલોક ગમન કરતી સમયે કોઇ તેને બચાવવાવાળું અથવા શરણ દેવાવાળું થાતુ નથી આ બધા ભૌતિક વૈભવ અહિં ભૂતળ પરજ રહી જાય છે. પશુ પોતાના વાડામાંજ બાંધેલા રહી જાય છે. ઘરના દરવાજા સુધી પત્ની તથા શ્મશાન

न स्वेन सार्द्धं व्रजति, किन्तु चितायामेव भस्मसाद्भवति, एकाकी निस्सहाय एव जीवः परलोकं प्रयाति। तस्माज्जन्मजरामरणदुःखमोचकमव्याबाधसुखदायकं चारित्रमेव स्वात्मकल्याणाय शरणीकरणीयम् ।

इत्यवधार्य परमवैराग्यरागरञ्जितान्तःकरणो धर्मैकशरणो धन्यकुमारः श्रमणं भगवन्तं श्रीमहावीरं सविनयमेवमवादीत्—

श्रद्दधामि भगवन् ! निर्ग्रन्थं प्रवचनं, प्रत्येमि भगवन् ! निर्ग्रन्थं प्रवचनं, रोचये भगवन् ! निर्ग्रन्थं प्रवचनम् , अभ्युत्ति वन् ! निर्ग्रन्थं प्रवचनम् । एवमेतद् भगवन् ! निर्ग्रन्थं प्रवचनं, तथ्यमेतद्भगवन् ! निर्ग्रन्थं प्रवचनम् ,

---

बन्धु मृत शरीर के साथ २ जाते हैं, अपना शरीर भी अपने साथ नहीं आकर चिता में भस्म हो जाता है। अकेला निःसहाय होकर ही जीव परलोक को प्रयाण करता है । इस लिये मुझे जन्म जरा और मरण के दुःखों से छुडाने वाले और वास्तविक अक्षय सुख को देने वाले चारित्र धर्म को ही अपने आत्मकल्याण के लिये ग्रहण करना चाहिये ।

इस प्रकार अन्तःकरण से विचार कर अत्यन्त वैराग्यवान् हो, तथा एक धर्म को ही शरणस्थान मानकर वह धन्यकुमार श्रमण भगवान् महावीर से इस प्रकार बोले—

हे भगवन् ! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन में श्रद्धा करता हूं, विश्वास करता हूं । हे भगवन् ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन मुझे रुचता है । मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन ग्रहण करने को उद्यत हुआ हूं। हे भगवन् ! आप

सुधी भाई–बन्धु मृत–शरीरनी साथे साथे आवे छे पोतानु शरीर पण पोतानी साथे न आवता अहि चितामाज बळीने भस्म थई जाय छे एकलो नि.सहाय थईनेज जीव परलोक प्रयाण करे छे ए माटे मारे जन्म, जरा, मरणना दुखोने दूर करवावाळा वास्तविक अक्षय सुखने देवावाळा चारित्रधर्मनेज पोताना आत्म–कल्याण माटे ग्रहण करवो जोईए

आ प्रमाणे अन्त करणथी विचारी अत्यन्त वैराग्यवान् थई तथा एक धर्मनेज शरणस्थान मानीने ते धन्यकुमार श्रमण भगवान महावीरने आ प्रमाणे कहेवा लाग्या

हे भगवन् ! निर्ग्रन्थ प्रवचननी हुं श्रद्धा करु छुं विश्वास करु छु हे प्रभु ! आ निर्ग्रन्थ प्रवचन मने रुचे छे हु निर्ग्रन्थ प्रवचन ग्रहण करवामा उद्यमवन्त थयो

अवितथमेतद् भगवन ! निर्ग्रन्थं प्रवचनम्, असंदिग्धमेतद् भगवन ! निर्ग्रन्थं प्रवचनं यथैतद् वदन्ति तत्सर्वथा सर्वांशपूर्णं, न किमपि वक्तव्यतावशेषं, नवरं=किन्तु मम कर्तव्यमेतावदेवावशिष्यते यद् अम्बां=जननीं भद्रां सार्थवाहीमापृच्छामि। ततः=मातरं पृष्ट्वा खल्वहं देवानुप्रियाणां भवताम् अन्तिके=समीपे समागत्य यावत्प्रव्रजामि=सपदि प्रव्रज्यां गृह्णामि।

अथ भगवान् जगाद-यथासुखं देवानुप्रिय ! मा प्रतिबन्धं कुरु=हे देवानुप्रिय ! धन्यकुमार ! त्वं यथासुखं यथेष्टं कुरु, प्रतिबन्धं=विलम्बं मा कुरु ॥ सू० ५ ॥

मूलम्-तए णं से धन्ने दारए जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ, मुच्छिया, वुत्तपडिवुत्तिया जहा महब्बले जाव जाहे नो संचाएति, जहा थावच्चापुत्तो, जियसत्तुं आपुच्छइ, छत्तचामराओ० सयमेव जियसत्तू निक्खमणं करेइ, जहा थावच्चापुत्त-

का यह उपदेश सत्य है, सर्वांग सत्य है, और सर्वथा सत्य है। हे भगवन् ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन असन्दिग्ध (सन्देहरहित) है, जो आप फरमा रहे हैं वह सर्वथा पूर्ण है, उस में किसी भी प्रकार की त्रुटि नहीं है, इस के विषय में मुझे अब कोई शङ्का नहीं है, परन्तु हे भगवन् ! इस समय मात्र एक कर्तव्य शेष है, वह यह कि माता भद्राको पूछना। इसलिये हे भगवन् ! मैं माता भद्रा सार्थवाही से पूछकर आप के समीप दीक्षा ग्रहण करूंगा। भगवान् ने कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम्हें जैसा सुख हो वैसा करो, परन्तु शुभ कार्य में विलम्ब न करो ॥ सू० ५ ॥

છું હે પ્રભુ ! આપનો આ ઉપદેશ સત્ય છે સર્વાંગ-સત્ય છે, અને સર્વથા સત્ય છે હે પ્રભુ ! આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન અસન્દિગ્ધ (સન્દેહ-રહિત) છે જે આપ ફરમાવી રહ્યા છો તે સર્વથા પૂર્ણ છે, તેમાં કોઈ પણ પ્રકારની ત્રુટિ નથી, એ વિષે હવે મને જરા પણ શંકા નથી. પરન્તુ હે ભગવન્ ! અત્યારે માત્ર એક વાત બાકી છે, અને તે એજ કે-માતા ભદ્રાને પુછવાનુ, એટલે હે પ્રભુ ! હું માતા ભદ્રા સાર્થવાહીને પૂછી આપની પાસે દીક્ષા ગ્રહણ કરીશ

ભગવાને કહ્યુ-હે દેવાનુપ્રિય ! તમને જેમ સુખ થાય તેમ કરો, પરન્તુ શુભ કાર્યમાં વિલંબ ન કરો. (સૂ૦ ૫)

स्स कण्हो, जाव पव्वइए अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी ॥ ६ ॥

छाया– ततः खलु स धन्यो दारकः, यावत्–यथा जमालिस्तथा आपृच्छति, मूर्छिता, उक्तमत्युक्ता यथा महाबलो यावत्–यदा नो शक्नोति यथा स्थापत्यापुत्रः, जिनशत्रुमापृच्छति, छत्रचामराणि०, स्वयमेव जितशत्रु-निष्क्रमणं करोति यथा स्थापत्यापुत्रस्य कृष्णः, यावत् मव्रजितोऽनगारो जात ईर्यासमितो यावत् गुप्तब्रह्मचारी ॥ सू० ६ ॥

टीका–'तए णं से' इत्यादि। ततोऽसौ धन्यकुमारः स्वगृहं गत्वा अम्बां=स्वमातरं भद्रां सार्थवाहीम् आपृच्छति यथा जामालिर्मातापितरौ पृष्टवान्।

धन्यकुमारस्याश्रुतपूर्वं वैराग्यपरिपूर्णं वचनं श्रुत्वा माता भद्रा सार्थवाही मूर्च्छिता=मूर्छां प्राप्ता। उक्तमत्युक्ता=शीताद्युपचारेण लब्धचेतनायास्तस्याः स्वपुत्रेण धन्यकुमारेण सह मव्रज्याग्रहण–तत्मतिषेधविषयकवचनमतिवचनरूपा =उक्तिमत्युक्तिर्बभूवेत्यर्थः। यथा महाबलः=महाबलवत् यावत् यदा न शक्नोति पुत्र गृहे स्थापयितुं भद्रा सार्थवाही, तदा साऽनिच्छयैव तस्य निष्क्रमणमनु-

'तए णं से' इत्यादि। तदनन्तर वह धन्यकुमार अपने घर जाकर अपनी माता भद्रा सार्थवाही से पूछता है, जिस प्रकार जमालिने अपने मातापिता को पूछा था।

पूर्व कभी नहीं सुने हुए ऐसे, धन्यकुमार के वैराग्यपूर्ण वचन सुनकर माता भद्रा सार्थवाही मूर्च्छित हो गई। शीतादि अनेक प्रकार के उपचारों से मूर्च्छा दूर होनेपर उसके तथा धन्यकुमार के दीक्षा विषयक उक्ति-प्रत्युक्तिरूप संवाद (उत्तर-प्रत्युत्तर) हुआ। जब वह महाबल के समान धन्यकुमार को घरमें रखने के लिए समर्थ नहीं हुई, तब वह भद्रा सार्थवाही विवश होकर उसको ससार

'तए णं से' ઇત્યાદિ ત્યારબાદ તે ધન્યકુમાર પોતાને ઘેર જઇને પોતાની માતા ભદ્રા સાર્થવાહીને પૂછે છે જેવી રીતે જમાલીએ પોતાના માતાપિતાને પૂછ્યુ હતુ

પૂર્વે ક્યારે પણ નહિ સાંભળેલ એવા ધન્યકુમારના વૈરાગ્યપૂર્ણ વચન સાંભળી માતા ભદ્રા–સાર્થવાહી મૂર્છિત થઇ ગઇ શીતળ આદિ અનેક પ્રકારના ઉપચારોથી મૂર્છા દૂર થયા પછી તેને તથા ધન્યકુમારને દીક્ષા વિષયે ઉક્તિ–પ્રત્યુક્તિરૂપ સંવાદ (ઉત્તર–પ્રત્યુત્તર) થયો જ્યારે તે મહાબલની માફક ધન્યકુમારને ઘરમા રાખવા સમર્થ ન થઇ ત્યારે તે ભદ્રા–સાર્થવાહી વિવશ થઇને સંસારનિષ્ક્રમણ (દીક્ષા) ની આજ્ઞા આપે

मन्यते । यथा स्थापत्यापुत्रस्य माता कृष्णवासुदेवं पृष्टवती तथैवेयं भद्रा सार्थवाही जितशत्रुं भूपतिमापृच्छति, छत्रचामराणि याचते । राजा जितशत्रुः स्वयमेव धन्यकुमारस्य निष्क्रमणं=दीक्षोत्सवं करोति=कृतवान्, यथा स्थापत्यापुत्रस्य निष्क्रमणोत्सवं कृष्णवासुदेवश्चकार । यावत्-धन्यकुमारो भगवतः समीपे प्रव्रजितोऽनगारो जातः, इर्यासमितो, यावत्-गुप्तब्रह्मचारी बभूव ॥ सू० ६ ॥

मूलम्-तए णं से धण्णे अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए तं चेव दिवसं समणं भगवं महावीरं वंदइनमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे जावज्जीवाए छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरित्तए । छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि कप्पइ आयंबिलं पडिगाहित्तए, नो चेव णं अणायंबिलं, तंपि य संसट्ठं, नो चेव णं असंसट्ठं, तंपि य णं उज्झियधम्मियं नो चेव णं अणुज्झियधम्मियं, तं पि य जं अण्णे बहवे समण-माहण-

---

निष्क्रमण की आज्ञा प्रदान करती है । जिस प्रकार थावच्चापुत्र की माता कृष्ण वासुदेव से दीक्षा महोत्सव के लिये पूछती है उसी प्रकार माता भद्रा सार्थवाहीने भी राजा जितशत्रु को पूछा, और छत्र चामर आदि की याचना की । जिस प्रकार श्री कृष्ण वासुदेवने थावच्चापुत्र का दीक्षा महोत्सव किया । उसी प्रकार राजा जितशत्रुने भी स्वयं धन्यकुमार का दीक्षामहोत्सव किया। इस प्रकार धन्यकुमार, भगवान के समीप प्रव्रजित होकर ईर्यादिसमितियुक्त अनगार होकर गुप्त ब्रह्मचारी हुए ॥ सू० ६ ॥

છે જેવી રીતે થાવચ્ચાપુત્રની માતા કૃષ્ણ વાસુદેવને દીક્ષામહોત્સવ માટે પૂછે છે, તેવીજ રીતે માતા ભદ્રા-સાર્થવાહીએ પણ રાજા જિતશત્રુને પૂછયું, અને છત્ર-ચામરાદિની માંગણી કરી જેવી રીતે શ્રીકૃષ્ણ વાસુદેવે થાવચ્ચાપુત્રનો દીક્ષામહોત્સવ કર્યો હતો. તેવીજ રીતે રાજા જિતશત્રુએ પણ ધન્યકુમારનો દીક્ષામહોત્સવ કર્યો એ રીતે ધન્યકુમાર ભગવાન પાસે પ્રવ્રજિત થઇ ઇર્યાદિસમિતિયુક્ત અણગાર થઇ ગુપ્તબ્રહ્મચારી થયા. (સૂ૦ ૬)

अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह ॥ ७ ॥

छाया-ततः खलु स धन्योऽनगारो यस्मिन्नेव दिवसे मुण्डो भूत्वा यावत्प्रव्रजितस्तस्मिन्नेव दिवसे श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-एवं खलु इच्छामि भदन्त! युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् यावज्जीवं षष्ठ-षष्ठेनानिक्षिप्तेन आचामाम्लपरिगृहीतेन तपःकर्मणा आत्मानं भावयन् विहर्तुम्। षष्ठस्यापि च खलु पारणके कल्पते आचामाम्लं प्रतिग्रहीतुं, नो चैव खलु अनाचामाम्लं, तदपि च संसृष्टं, नो चैव खलु असंसृष्टम्, तदपि च खलु उज्झितधर्मिकं, नो चैव अनुज्झितधर्मिकम्, तदपि च यद् अन्ये बहवः श्रमणब्राह्मणातिथिकृपणवनीपका नावकाङ्क्षन्ते। यथासुखं देवानुप्रिय! मा प्रतिबन्धं कुरु ॥ सू० ७ ॥

टीका-तए णं से' इत्यादि। स धन्यनामाऽनगारो यस्मिन्नेव दिवसे प्रव्रज्यां गृहीतवान् तस्मिन्नेव दिवसे भगवन्तं श्रीमहावीरं वन्दित्वा नमस्कृत्य एवमवादीत्-भदन्त!=भगवन्! युष्माभिरभ्यनुज्ञातः सन् यावज्जीवं नैरन्तर्येण आचामाम्लं प्रतिग्रहीतुम्=आचामाम्लप्रत्याख्यानसहितं षष्ठ-षष्ठं तपःकर्म कुर्वन् विहर्तुमिच्छामि। पारणदिवसे विकृतिरहितस्य रूक्षान्नस्य अचित्तजले निक्षिप्तस्यैकासनस्थेन सकृद्भोजनरूपमाचामाम्लं प्रतिग्रहीतुं कल्पते नैवानाचामाम्लम्। आचामाम्लविधिश्चोपासकदशाङ्गसूत्रस्य मत्कृतटीकायामगारधर्मसञ्जीवन्यां निगदितः

'तए णं' इत्यादि धन्य नामक अनगारने जिस दिन दीक्षा ग्रहण की उसी दिन श्रमण भगवान महावीर को वन्दन नमस्कार कर के इस प्रकार बोले-हे भगवन्! यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं जीवनपर्यन्त निरन्तर आयम्बिल के पच्चक्खाण से छट्ट-छट्ठ (बेले-बेले पारणा) तपकर्म करता हुआ अपनी आत्मा को विशुद्ध बनाकर विचरूं। बेले के पारणे के दिन विकृति रहित रूक्षान्न अचित्त जलमें

'तए णं' ઇત્યાદિ ધન્યકુમાર અણગારે જે દિવસે દીક્ષા ગ્રહણ કરી તેજ દિવસે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વન્દન-નમસ્કાર કરી આ પ્રમાણે બોલ્યા-

હે ભગવન્! જો આપની આજ્ઞા હોય તો હું જીવન-પર્યન્ત નિરન્તર છઠ-છઠના પારણા કરૂ, પારણામાં પણ આયંબિલ કરૂ એવી રીતે છઠ-છઠને પારણે આયંબિલ કરતા તપસંયમથી પોતાની આત્માને વિશુદ્ધ કરી વિચરૂં. છઠના પારણાને

" विगइरहियस्स ओयण,-भज्जियचणागाइलुक्ख-अन्नस्स ।
खित्ता जले अचित्ते, खाणं आयंबिलं जाण ॥१॥" इति ।

तदपि च रूक्षान्नं संसृष्टमेव=तच्च खरण्टितहस्तादिना दीयमानमेव, न त्वसंसृष्टम्, तदप्युज्झितधर्मिकम्=अतिनीरसत्वात्परित्यागार्हं, न त्वनुज्झितधर्मिकं, तदपि च यदि बहवः श्रमणब्राह्मणातिथिकृपणवनीपका न वाञ्छन्ति, तत्र-श्रमणाः=शाक्यादयः, ब्राह्मणाः=याचकविशेषाः, अतिथयः=भोजनकाले याचितुमकस्मादुपस्थिताः, कृपणाः=स्वभावतो दरिद्राः, वनीपकाः=भिक्षाजीविनः सकरुणवाक्यैः स्वदैन्यावस्थाप्रकाशकाः, एतैरप्यवाञ्छितं प्रतिगृह्य पारणं मया विधेयम् ।

डालकर एक ही आसन पर स्थित होकर आयंबिल वाला आहार करूं । परन्तु बिना आयम्बिल के नहीं ।

आयम्बिल की विधि 'उपासकदशाङ्ग सूत्र' की 'अगारधर्म संजीवनी' नामक टीका में इस प्रकार दी गई है:-

"विगय-घी, दूध, दही, तेल, गुड आदि सरस पदार्थ रहित, चावल, सेके हुए चने, आदि लूखा अन्न, अचित्त जल में डालकर एक वक्त खाना ही 'आयम्बिल' है" ॥

वह रूक्षान्न भी खरडे (आटा आदिसे भरे) हुए हाथों द्वारा दिया हो तो कल्पे परन्तु मेरे लिये हाथभर के दे तो नहीं कल्पे । वह आहार भी अति निरस होनेसे गिराने योग्य हो परन्तु खाने के उपयोग का न हो, उस आहार को दूसरे श्रमण-शाक्यादिक, ब्राह्मण-याचक, अतिथि-भिखारी, कृपण-दरिद्री, वनीपक-करुणाभरी

દિવસે વિકૃતિરહિત રુક્ષ અન્ન અચેત પાણીમાં નાખી એકજ આસને બેસી આયંબિલનો આહાર કરૂં, પણ આયંબિલ વિનાનો નહિ આયંબિલની વિધિ ઉપાસકદશાંગસૂત્રની "અગારધર્મસંજીવની" ટીકામાં આ પ્રમાણે આપી છેઃ—

"વિગય-ઘી, દૂધ, દહી, તેલ, ગોળ આદિ સરસ પદાર્થ-રહિત, ચોખા, શેકેલા ચણા આદિ લુખ્ખા-સૂકા અન્નને અચેત પાણીમાં નાખી એક વખત ખાવું તે આયંબિલ છે."

તે રૂક્ષ અન્ન પણ ખરડેલ (લોટ આદિથી ભરેલ) હાથથી દીધું હોય તો કલ્પે, પરન્તુ મારે માટે હાથ ખરડીને (ભરીને) આપે તો નહીં કલ્પે તે આહાર પણ નીરસ હોવાથી નાખી દેવા જેવુ હોય પણ ખાવાનાં ઉપયોગમાં આવવા જેવું ન હોય. તે આહારને બીજા કોઇ શ્રમણ-શાકયાદિક, બ્રાહ્મણ-યાચક, અતિથિ-ભિખારી, કૃપણ-દરિદ્રી-

एवं धन्यनाम्नाऽनगारेण प्रार्थितो भगवान् प्राह-यथासुखं देवानुप्रिय ! मा प्रतिबन्धं कुरु, इति ॥सू०७॥

मूलम्-तए णं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ० जावज्जीवाए छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ सू० ८ ॥

छाया-ततः खलु स धन्यः अनगारः श्रमणेन भगवता महावीरेणाभ्यनुज्ञातः सन् हृष्ट० यावज्जीवं षष्ठ-षष्ठेनानिक्षिप्तेन तपःकर्मणाऽऽत्मानं भावयन विहरति ॥सू० ८॥

टीका-'तए णं से इत्यादि। तदनन्तरं धन्यनामानगारो भगवताऽऽभ्यनुज्ञातो हृष्टतुष्टो यावज्जीवं षष्ठ-षष्ठेन नैरन्तर्येण तपःकर्मणाऽऽत्मानं भावयन् विहरति ॥ सू० ८ ॥

आवाज से भोजन माँगते हुए अत्यन्त भूखे मनुष्य-भी लेने की अभिलाषा न करे, ऐसा आहार ही मुझे पारणे के लिये आयम्बिल में ग्रहण करना कल्पे।

इस प्रकार धन्यकुमार अनगार के निवेदन करने पर भगवान् इस प्रकार बोले-'जैसा तुम्हें सुख हो वैसा करो, शुभ कार्य में विलम्ब न करो।' ॥ सू० ७ ॥

तए णं इत्यादि। धन्यकुमार अनगार श्रमण भगवान् महावीर की आज्ञा पाकर अत्यन्त प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हुए, और प्रतिज्ञानुसार जीवन पर्यन्त अन्तररहित बेले २ पारणे में आयम्बिल तपस्या से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे ॥ सू० ८ ॥

वनीपक-करुणाभर्या अवाजथी भोजन मागता अत्यन्त भूख्या मनुष्य पण लेवानी ईच्छा न करे एवोज आहार मारे पारणाना आयंबिल माटे ग्रहण करवो कल्पे

ए रीते धन्यकुमार अणगारना निवेदन करवाथी भगवान आ प्रमाणे बोल्या-'जेम तमने सुख उपजे तेम करो. शुभ कार्यमा विलम्ब न करो' (सू० ७)

तए णं इत्यादि धन्यकुमार अणगार श्रमण भगवान महावीरनी आज्ञा प्राप्त करी अत्यन्त प्रसन्न एव संतुष्ट थया, अने प्रतिज्ञानुसारे जीवन-पर्यन्त अन्तररहित छठ-छठना पारणामा आयंबिलनी तपस्याथी आत्माने भावित करता थका विचरवा लाग्या (सू० ८)

मूलम्—तए णं से धण्णे अणगारे पढमछट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ, जाव जेणेव काकंदी नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता काकंदीए नयरीए उच्चनीच० जाव अडमाणे आयंबिलं नो अणायंबिलं जाव नावकंखति ॥ सू० ९ ॥

छाया—ततः खलु स धन्यः अनगारः प्रथमषष्ठक्षपणपारणके प्रथमायां पौरुष्यां स्वाध्यायं करोति, यथा गौतमस्वामी तथैवापृच्छति, यावत् यत्रैव काकन्दी नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य काकन्द्यां नगर्यामुच्चनीच० यावदटन आचामाम्लं नो अनाचामाम्लं यावन्नावकाङ्क्षते ॥ सू० ९ ॥

टीका—ततः स धन्यनामाऽनगारः प्रथमषष्ठतपसः पारणादिवसे प्रथमपौरुष्यां स्वाध्यायं कृत्वा गौतमस्वामिवद् भिक्षाचरणार्थं भगवन्तं पृच्छति, भगवतः श्रीमहावीरस्याज्ञां समादाय भिक्षार्थं काकन्दीं नगरीं जगाम । तत्रोच्चनीचमध्यमकुले भिक्षार्थं पर्यटन् केवलमाचामाम्लं भिक्षां काङ्क्षते नत्वनाचामाम्लभिक्षाम् ॥सू० ९॥

मूलम्—तए णं से धण्णे अणगारे ताए अब्भुज्जयाए पययाए पयत्ताए पग्गहियाए एसणाए एसमाणे, जइ णं भत्तं

तए णं से इत्यादि । धन्यकुमार अनगार बेले २ तप के, पहिले पारने के दिन प्रथम प्रहर में स्वाध्याय कर श्री गौतम स्वामी के समान भिक्षार्थ जाने के लिये भगवान से पूछा और भगवान् महावीर की आज्ञा प्राप्तकर वे काकन्दी नगरी में पधारे । वहाँ ऊंचे नीचे तथा मध्यम कुलों में भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए आयम्बिल के लिये लूखा आहार की गवेषणा करते हैं परन्तु सरस आहार लेने की अभिलाषा नहीं करते ॥ सू० ९ ॥

'तए णं से' ઈત્યાદિ ધન્યકુમાર અણુગાર છઠ છઠ તપના પ્રથમ પારણાના દિવસે, પ્રથમ પ્રહરમા સ્વાધ્યાય કરી શ્રી ગૌતમ સ્વામીની માફક ગોચરી જવા માટે ભગવાનને પૂછે છે, ભગવાન મહાવીરની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરી તે કાકન્દી નગરીમા પધાર્યા, ત્યા ઉચ્ચ નીચા તથા મધ્યમ કુળોમાં ભિક્ષાર્થ ભ્રમણ કરતા આયબિલ માટે લુખા આહારની ગવેષણા કરે છે પરન્તુ સરસ આહાર લેવાની જરા પણ ઈચ્છા કરતા નથી. (સૂ૦ ૯)

लभइ तो पाणं न लभइ,अह पाणं लभइ तो भत्तं न लभइ ॥सू०१०॥

छाया-ततः खलु स धन्यः अनगारस्तयाऽभ्युद्यतया प्रयततया प्रदत्तया प्रगृहीतया एषणया एषमाणः, यदि खलु भक्तं लभते तर्हि पानं न लभते, अथ पानं लभते तर्हि भक्तं न लभते ॥सू० १०॥

टीका-'तए णं से' इत्यादि ततोऽसौ धन्यनामाऽनगारः अभ्युद्यतया=शास्त्रविहितया, प्रयततया=प्रकृष्टयत्नवत्या, प्रदत्तया=दातृप्रदत्तवस्तुसम्बन्धिन्या, प्रगृहीतया=प्रकर्षभावेन अनासक्त्या स्वीकृतया एषणया एषमाणः-यदि भक्तं लभते तदा न पानम्, अथ पानं लभते तदा न भक्तम् ॥सू० १०॥

मूलम्-तए णं से धण्णे अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अविसाई अपरितंतजोगी जयणघडणजोगचरित्ते अहापजत्तं समुदाणं पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता काकंदीओ नयरीओ पडिनिक्खमइ, जहा गोयमो जाव पडिदंसेइ ॥ सू० ११ ॥

छाया-ततः खलु स धन्यनामानगारः- अदीनः, अविमनाः, अकलुषः, अविषादी, अपरितान्तयोगी, यतनघटनयोगचरित्रो यथाप्राप्तं समुदानं प्रतिगृह्णाति, प्रतिगृह्य काकन्दीतो नगरीतः प्रतिनिष्क्रामति, यथा गौतमो यावत्प्रतिदर्शयति ॥ सू० ११ ॥

टीका-तए णं इत्यादि ततः=तथापि खलु स धन्यनामानगारः अविमनाः=प्रसन्नमानसः, अकलुषः=क्रोधाद्यावेशरहितः, अविषादी=म्लानरहितः, अपरितान्तयोगी=तनतनाटशब्दरहितः स्थिरचित्तः, यतनघटनयोगचरित्रः-यतनं=प्राप्तसंयमस्य

'तए णं से' इत्यादि । शास्त्रविहित-यतनावाली, दाताद्वारा दी गई वस्तु-सम्बन्धी तथा उत्कृष्ट भाव से आसक्ति-रहित स्वीकारी हुई, ऐसी एषणासे आहार की गवेषणा करते हुए धन्य अनगार को भिक्षा में आहार मिलता है तो पानी नहीं और पानी मिलता है तो आहार नहीं ॥ सू० १० ॥

'तए णं से' ઇત્યાદિ શાસ્ત્ર-વિહિત યતનાવાળી દાતા દ્વારા દીધેલ વસ્તુ-સમ્બન્ધી, તથા ઉત્કૃષ્ટ ભાવથી આસક્તિરહિત સ્વીકારેલી એષણાથી આહારની ગવેષણા કરતા થકા ધન્ય અણુગારને ભિક્ષામાં આહાર મળે તો પાણી નહીં, અને પાણી મળે તો આહાર નહીં (સૂ૦ ૧૦)

विशुद्ध्यर्थमुद्योगः, घटनम्=अप्राप्तविशुद्धकसंयमश्रेणिप्राप्त्यर्थं यत्नः, यतनघटनलक्षणाःयोगाः=मनोवाक्कायव्यापारा यत्र तत्, एवम्भूतं चरित्रं यस्य स यतनघटनयोगचरित्रः=संयमनिष्ठासंपन्नः । यथाप्राप्तं=यावन्मात्रं लब्धं तावदेव पर्याप्तं, समुदानं=उच्चावचकुलादुपलब्धं भक्तं वा पानं वा गृहीत्वा काकन्दीनगरीतो निष्क्रम्य गौतमस्वामिवद् भगवन्तं यावत् प्रतिदर्शयति ॥ सू० ११ ॥

मूलम्—तए णं से धण्णे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए जाव अणज्झोववण्णे बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं आहारं आहारेइ, आहारित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ सू० १२ ॥

छाया—ततः खलु स धन्यनामानगारः श्रमणेन भगवता महावीरेणाभ्यनुज्ञातः सन् अमूर्च्छितो यावद् अनध्युपपन्नो बिलमिव पन्नगभूतेन आत्मना आहारं आहारयति, आहारयित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरति ॥सू० १२॥

'तए णं से' इत्यादि फिर भी वे धन्यकुमार अनगार प्रसन्न मन, कलुष–भाव रहित अर्थात् क्रोधादि आवेश रहित, विषाद भाव विना, तनतनाट शब्दको छोडकर, स्थिर चित्त होकर, प्राप्त संयम की विशुद्धि के लिये उद्योग तथा अप्राप्त संयम की श्रेणी प्राप्त करने के लिये यत्न करते हुए तथा मन वचन काया के संयम में अतीव दृढ हो ऊंचे नीचे तथा मध्यम घरों से जितना मिला उतना ही आहार पानी ग्रहण कर काकन्दी नगरी से बाहर निकले। वहाँ से वे जहाँ भगवान् विराजमान थे वहाँ आये और श्री गौतमस्वामी की तरह भगवान् को आहार पानी दिखलाया ॥सू० ११॥

'तए णं से' ઇત્યાદિ ફરી પણ તે ધન્યકુમાર અણગાર પ્રસન્ન મન, કલુષ-ભાવ રહિત અર્થાત્ ક્રોધાદિ–આવેશ–રહિત, વિષાદભાવ વિના, તનતનાટ શબ્દને છોડી, સ્થિરચિત્ત થઇ, પ્રાપ્ત સંયમની વિશુદ્ધિ માટે ઉદ્યોગ, તથા અપ્રાપ્ત-સંયમની શ્રેણી પ્રાપ્ત કરવા માટે યત્ન કરતા તથા મન, વચન, કાયાના સંયમમાં અતિદૃઢ થઇ ઉચ્ચ, નીચ તથા મધ્યમ ઘરોથી જેટલો મળ્યો તેટલો આહાર–પાણી આવશ્યકતાનુસારે ગ્રહણ કરી કાકન્દી નગરીથી બહાર નિકળ્યા ત્યાંથી તે જ્યાં ભગવાન વિરાજમાન હતા ત્યાં આવ્યા અને શ્રીગૌતમસ્વામીની માફક ભગવાનને આહાર પાણી દેખાડ્યો. (સૂ૦ ૧૧)

टीका-'तए णं से' इत्यादि तदनु स धन्यनामानगारो भगवताऽभ्यनुज्ञातः सन् अमूर्च्छितः=रसवर्णादिषु गृद्धिभावरहितः तीव्रवैराग्यभावनया पूर्वसेवितमनोज्ञरसादिस्मरणाभावात् यावत् अनध्युपपन्नः=रागद्वेषरहितः, मध्यस्थभावयुक्तत्वात्। तदप्येकविंशतिवारमुदकेन प्रक्षाल्य पूर्णतया निःसत्त्वं विधाय रसमनास्वादयन् आहारमाहारयति। तत्र दृष्टान्तमाह-'बिलमिव पन्नगभूतेन आत्मने'ति, यथा भुजङ्गो बिलस्य पार्श्वभागद्वयमसंस्पृशन् मध्यभागत एवात्मानं बिले प्रवेशयति तथा मुखस्य पार्श्वद्वयस्पर्शरहितमाहारं कण्ठनालाभिमुखं प्रवेश्याऽऽहारयति। एवं संयमेन तपसा चात्मानं भावयन्नसौ विहरति ॥ सू० १२ ॥

'तए णं से' इत्यादि। तदनन्तर वे धन्यकुमार अनगार श्रमण भगवान् महावीर से आज्ञा प्राप्त कर, तीव्र वैराग्य भावना से आहार में अमूर्च्छित, वर्ण रस, आदि में गृद्ध न हो, पूर्वभूक्त सुन्दर तथा सरस आहारों का स्मरण नहीं करते हुए मध्यस्थ भाव से अर्थात् राग-द्वेष रहित विना किसी स्वाद के आहार करते थे। उस आहार को भी इक्कीस वार पानी से धो कर नीरस एवं सत्वहीन करके आहार करते थे।

वे विना स्वाद लिये किस प्रकार आहार करते थे वह दृष्टान्तद्वारा कहते हैं-

जिस प्रकार सर्प विल में प्रवेश करते समय विल के दोनों पार्श्व भागों को स्पर्श नहीं करता हुआ मध्य भाग से ही उसमें प्रवेश करता है। उसी प्रकार धन्यकुमार अनगार भी मुखके दोनों पार्श्व भागों से आहार को विना स्पर्श कराए स्वादरहित आहार करते थे। इस प्रकार तप-संयम-पूर्वक आत्मचिन्तवन करते हुए रहते थे ॥ सू० १२ ॥

'तए णं से' ઇત્યાદિ ત્યારબાદ તે ધન્યકુમાર અણગાર શ્રમણ ભગવાન મહાવીર પાસેથી આજ્ઞા લઈ આહારમા અમૂર્ચ્છિત-વર્ણ રસ આદિમાં ગૃદ્ધ ન થતા, મધ્યસ્થભાવે તીવ્ર-વૈરાગ્ય-ભાવનાથી પૂર્વે કરેલ સુન્દર તથા સરસ આહારોનુ સ્મરણ ન કરતા રાગદ્વેષ રહિત કોઈ પણ સ્વાદ-વિના આહાર કરતા હતા તે આહારને પણ (૨૧) એકવીસ વાર પાણીથી ધોઈ નીરસ તેમજ સત્વહીન કરીને આહાર કરતા હતા તેઓ સ્વાદ વિના કઈ રીતે આહાર કરતા હતા તે દૃષ્ટાન્તદ્વારા બતાવે છે—

જેવી રીતે સર્પ બિલમા પ્રવેશ કરતી વખતે બિલના બન્ને-આજુબાજુના ભાગને સ્પર્શ્યા વગર મધ્યભાગથીજ તેમા પ્રવેશ કરે છે તેવીજ રીતે ધન્યકુમાર અણગાર પણ મુખના બન્ને ભાગોથી આહારને સ્પર્શાયા વગર સ્વાદરહિત આહાર કરતા હતા એ પ્રકારે તપ-સંયમ-પૂર્વક આત્મા-ચિન્તન કરતા થકા રહેતા હતા (સૂ૦ ૧૨)

मूलम्—तए णं से समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइं काकंदीओ नयरीओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू० १३ ॥

छाया-ततः खलु स श्रमणो भगवान् महावीरोऽन्यदा कदाचित्काकन्दीतो नगरीतः सहस्राम्रवनादुद्यानात्प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य बहिर्जनपदविहारं विहरति ॥ सू० १३ ॥

टीका-'तए णं' इत्यादि अन्यदा कदाचिद् धन्यनाम्नोऽनगारस्य कतिपयपारणानन्तरं श्रमणो भगवन् महावीरः काकन्दीनगरीतः सहस्राम्रवननामकादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामति प्रतिनिष्क्रम्य बहिर्देशविहारार्थं विहरति ॥सू० १३॥

मूलम्—तए णं से धण्णे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ सू० १४ ॥

छाया-ततः खलु स धन्यः अनगारः श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य तथारूपाणां स्थविराणामन्तिके सामायिकादीन्येकादशाङ्गान्यधीते, अधीत्य संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति ॥ सू० १४ ॥

टीका-'तए णं' इत्यादि । ततः स धन्यनामाऽनगारः श्रीमहावीरस्य भगवतस्तथारूपस्थविराणां समीपे सामायिकादीन्येकादशाङ्गान्यधीतवान्, ततः संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति ॥ सू० १४ ॥

'तए णं से' इत्यादि । तत्पश्चात् एक समय श्रमण भगवान् महावीर काकन्दी नगरी के सहस्राम्रवन नामक उद्यान से निकले और निकलकर अन्यत्र देशों में विहार किया ॥सू० १३॥

'तए णं से' इत्यादि । फिर धन्यकुमार अनगारने श्री श्रमण भगवान् महावीर के तथारूप-बहुश्रुत स्थविरों के समीप सामायिक

'तए णं से' ઇત્યાદિ. તે પછી એક સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કાકન્દી નગરીના સહસ્રામ્રવન નામના ઉદ્યાનથી નિકળી બીજા દેશોમાં વિહાર કર્યો (સૂ૦ ૧૩)

'तए णं' ઇત્યાદિ તે પછી ધન્યકુમાર અણગારે શ્રીશ્રમણ-ભગવાન મહાવીરના તથારૂપબહુશ્રુત સ્થવિરોની પાસે સામાયિક આદિ અગ્યાર અંગોનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત

मूलम्-तए णं से धण्णे अणगारे तेणं ओरालेणं जहा खंदओ जाव सुहुय० जाव उवसोभेमाणे२ चिट्ठइ ॥सू०१५॥

छाया-ततः खलु स धन्यः अनगारस्तेनोदारेण० यथा स्कन्दको यावत् सुहुत० यावद् उपशोभमान उपशोभमानस्तिष्ठति ॥सू० १५॥

'तए णं से' इत्यादि। तदनु स धन्यनामाऽनगारस्तेनोदारेण 'विपुलेन' इत्यादिविशेषणविशिष्टेन तपःकर्मणा शुष्को रूक्षः, यथास्कन्दकः=स्कंदकवत् यावत्-भस्मराशिप्रतिच्छन्नः सुहुतहुताशन इव बहिस्तेजोरहितोऽप्यन्तस्तपसा तेजसा तपस्तेजः-श्रियाऽतीवातीव उपशोभमानः२=अतिशयेन देदीप्यमानो जातः ॥ सू० १५॥

अथ धन्यनाम्नोऽनगारस्य तीव्रतपःप्रभावभास्वरं शरीरं वर्णयति-'धण्णस्स णं'-मित्यादि।

मूलम्-धण्णस्स णं अणगारस्स पादाणं अयमेयारूवे तवरूवलावण्णे होत्था, से जहानामए-सुक्कछल्लीति वा, कट्ठपाउयातिवा, जरग्गउवाहणाति वा, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स पाया सुक्का लुक्खा निम्मंसा अट्ठिचम्मछिरत्ताए पण्णायंति नो चेव णं मंससोणियत्ताए ॥सू० १६॥

आदि ग्यारह अङ्गोंका अध्ययन किया, और तप-संयमद्वारा आत्मचिंतन करते हुए रहने लगे ॥ सू० १४॥

'तए णं से' इत्यादि। वे धन्यकुमार अनगार इस उदार-प्रधान तप से सर्वथा सूख गये तथा रूक्ष हो गये। फिर भी वे भस्म से ढकी हुई हवन की अग्नि के समान बाहर से तेज रहित होते हुए भी स्कन्दकमुनि की तरह आत्मतप तेज से अधिकाधिक देदीप्यमान हुए ॥ सू० १५॥

કર્યું, અને તપ-સંયમ-પૂર્વક આત્મ-ચિન્તન કરતા થકા રહેવા લાગ્યા (સૂ૦ ૧૪)

'तए णं से' ઇત્યાદિ તે ધન્યકુમાર અણગાર આ ઉદાર-પ્રધાન તપથી સર્વથા સુકાઈ ગયા, તથા રૂક્ષ થઈ ગયા તો પણ તેઓ રાખથી ઢંકાએલી હવનની અગ્નિ સમાન બહારથી તેજ-રહિત હોવા છતાં પણ ખંધક ઋષિની માફક આત્મ-તપ-તેજથી અધિક-અધિક દેદીપ્યમાન થયા (સૂ૦ ૧૫)

छाया-धन्यस्य खलु अनगारस्य पादयोरिदमेतद्रूपं तपोरूपलावण्यमभवत्, तद्यथानामकम्-शुष्कछल्लीति वा, काष्ठपादुकेति वा, जरत्कोपानदिति वा, एवमेव धन्यस्यानगारस्य पादौ शुष्कौ, रूक्षौ, निर्मांसौ अस्थिचर्मशिरातया प्रज्ञायेते नो चैव खलु मांसशोणिततया ॥सू० १६॥

टीका-'धण्णस्स णं' इत्यादि। धन्यनाम्नोऽनगारस्य चरणयोरेवं रूपलावण्यं, रूपम्=आकारः, लावण्यं=चाकचिक्ययुक्तः कान्तिविशेषः तपःप्रभावात्संजातं, यथा-शुष्कछल्ली=शुष्कवृक्षत्वक्, यथा वा काष्ठपादुका, जीर्णोपानद् वा, एवमेव धन्यनामानगारस्य पादौ शुष्कौ रूक्षौ मांसरहितौ केवलमस्थिचर्मशिराभिः प्रज्ञायमानौ, नैव मांसशोणिताभ्यां तस्य पादौ विज्ञायेते ॥सू०१६॥

मूलम्-धण्णस्स णं अणगारस्स पायंगुलियाणं अयमेयारूवे० से जहाणामए कलसंगलियाइ वा, मुग्गसंगलियाइ वा, माससंगलियाइ वा तरूणिया छिण्णा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी मिलायमाणी२ चिट्ठति, एवामेव धण्णस्स पायंगुलियाओ सुक्काओ जाव सोणियत्ताए ॥सू० १७॥

छाया-धन्यस्य खलु अनगारस्य पादाङ्गुलिकानामिदमेतद्रूपं०, तद्यथा-

---

अब धन्यकुमार अनगार के तीव्र तप के प्रभाव से देदीप्यमान-कान्तियुक्त-शरीर का वर्णन किया जाता है-'धण्णस्स णं' इत्यादि।

धन्यकुमार अनगार के चरण (पाँव) तप के कारण सूखे वृक्ष की छाल, काष्ठपादुका अथवा जर्जरित उपानह (जूते) के समान शुष्क, रूक्ष एवं मांसरहित हो गये थे, केवल हड्डी, चमडा तथा नसों की जाल से ही उनके चरण दृष्टिगोचर होते थे, परन्तु उनमें मांस तथा रक्त बिल्कुल नहीं थे ॥ सू० १६ ॥

હવે ધન્યકુમાર અણગારના તીવ્ર તપના પ્રભાવે દેદીપ્યમાન કાન્તિયુક્ત-શરીરનું વર્ણન કરાય છે— 'धण्णस्स णं' ઇત્યાદિ.

ધન્યકુમાર અણગારના ચરણ (પગ) તપને કારણે સુકાઈ ગએલા વૃક્ષની છાલ, કાષ્ટપાદુકા અથવા જર્જરિત પગરખાં સમાન શુષ્ક, રૂક્ષ અને માંસરહિત થઇ ગયા હતા, કેવળ હાડકા ને ચાંમડા તથા નસોનાં જાળથીજ તેઓનાં ચરણ (પગ) દેખાતા હતા. પણ તેમાં માંસ તથા લોહી જરાપણ દેખાતા ન્હોતા (સૂ० ૧૬)

नामकम्–कलसंगलिकेति वा, मुद्गसंगलिकेति वा, मापसंगलिकेति वा, तरुणिका छिन्ना उष्णे दत्ता शुष्का सती म्लायन्ती२ तिष्ठति, एवमेव धन्यस्य पादाङ्गुलिकाः शुष्का यावत् शोणिततया ॥ सू० १७॥

टीका–'धण्णस्स णं' इत्यादि। तस्य तपः प्रभावाच्चरणाङ्गुलीनामेवं रूपलावण्यं संजातं, यथा–कलसंगलिका, कल इति कलायो=वर्तुलचणकस्तस्य संगलिका=फलिका 'वटाणाफली' 'वटलाफली' इति च भाषायाम्, मुद्गफलिका, मापसंगलिका वा=मापफलिका 'उडिदफली' इति च भाषायाम्, सा तरुणा=अपरिपक्वा छिन्ना=त्रोटिता उष्णे=आतपे दत्ता शुष्का सती यथा परिम्लाना तिष्ठति=भवति, एवमेव तस्य धन्यनामानगारस्य चरणाङ्गुलिकाः शुष्काः, रूक्षाः, निर्मांसा जाताः, केवलमस्थिचर्मशिराभिः प्रज्ञायन्ते, नैव मांसशोणिताभ्याम् ॥ सू० १७ ॥

मूलम्-धण्णस्स जंघाणं अयमेयारूवे० से जहा० काकजंघाइ वा, कंकजंघाइ वा, ढेणियालियाजंघाइ वा, जाव सोणियत्ताए ॥सू०१८॥

छाया–धन्यस्य जङ्घयोरिदमेतद्रूपं०, तद्यथा० काकजङ्घेति वा, कङ्कजङ्घेति वा, ढेणिकालिकाजङ्घेति वा यावत् शोणिततया ॥ सू० १८ ॥

टीका–'धण्णस्स' इत्यादि। तस्य जङ्घयोः, जानुगुल्फयोर्मध्यभागो जङ्घा, तयोरेवं रूपलावण्यं तपः- प्रभावात्संजातं यथा–काकजङ्घा, कङ्कजङ्घा कङ्कः=

'धण्णस्स' इत्यादि अतिशय तप के कारण धन्ना अनगार के पाँवोंकी ऊँगलियाँ, अपरिपक्व अवस्था में तोडी हुई तथा तेज धूपमें सुखाई हुई शुष्क, म्लान–मुरझाई हुई हुई–मटरकी फलियाँ। मूँग की फलियाँ तथा उडद की फलियों के समान शुष्क, रूक्ष एवं मांस रक्त रहित हो गई थीं। वे केवल हड्डी चमडा एवं नसों से ही दिखाई देती थीं ॥ सू० १७ ॥

'धण्णस्स' इत्यादि. अतीव उग्र तप के कारण धन्ना अनगार की जङ्घा (पिण्डी–घूटने के नीचेका भाग), कौएकी जंघा, कंक (पक्षि-विशेष) की जंघा, अथवा ढेणिकालिका (पक्षिविशेष) की जंघा के समान

'धण्णस्स' ઇત્યાદિ અતિશય તપના કારણે અણગારના પગની આંગળીઓ અપરિપક્વ અવસ્થામા તોડેલ તથા તેજ ધૂપમા સુકાએલ શુષ્ક, મ્લાન–કરમાએલ, વટાણાની શીંગો, મગની શીંગો અથવા અડદની શીંગો સમાન શુષ્ક, રૂક્ષ તેમજ માસ રક્ત–રહિત થઈ ગઈ હતી તે કેવળ હાડ, ચામ અને નસોથીજ દેખાતી હતી (સૂ ૧૭)

'ધણ્ણસ્સ' ઇત્યાદિ. અતિ ઉગ્ર તપને કારણે ધન્ના અણગારની જંઘા (ઢીંચણના નીચેનો ભાગ), કાગડાની જંઘા, કંક (પક્ષિવિશેષ) ની જંઘા અથવા ઢેણિકાલિકા

पक्षिविशेषस्तस्य जङ्घा, ढेणिकालिकाजङ्घा= ढेणिकालिका—पक्षिविशेषस्तस्या जङ्घा, इमाः स्वभावतो निर्मांसशोणिता भवन्ति, अतस्तत्सादृश्यमुक्तम् । एवं तस्य जङ्घे शुष्के रूक्षे निर्मांसे संजाते इत्यर्थः ॥ सू० १८ ॥

मूलम्—धण्णस्स जाणूणं अयमेयारूवे० से जहा० कालिपोरेइ वा, मयूरपोरेइ वा, ढेणियालियापोरेइ वा, एवं जाव शोणिततया ॥ सू० १९ ॥

छाया—धन्यस्य जान्वोरिदमेतद्रूपं०, तद्यथा०कालिपर्वेति वा, मयूरपर्वेति वा, ढेणिकालिकापर्वेति वा, एवं यावत् शोणिततया ॥सू० १९॥

टीका—'धण्णस' इत्यादि। कालिनामा वनस्पतिविशेषः,तस्य पर्व=सन्धिस्थानम्। मयूरस्य, ढेणिकालिकापक्षिविशेषस्य च पर्व=जानुरूपसन्धिस्थानं शुष्कं रूक्षं निर्मांसं शोणितरहितं भवति तद्वत्तस्य जानुद्वयं संजातम् ॥ सू० १९ ॥

शुष्क, रूक्ष एवं मांस रक्त रहित होगई थी। इन पक्षियों की जंघाएँ स्वभाव से ही निर्मांस एवं रक्तरहित होती हैं, अतः उनकी इन से उपमा दी गई है। धन्यकुमार अनगार की भी जंघाएँ उनके समान पतली हो गईथीं ॥ सू० १८ ॥

'धण्णस्स' इत्यादि. जिस प्रकार काली नामक वनस्पति विशेष के सन्धि स्थान (जोड), मयूर एवं ढेणिकालिका 'पक्षिविशेष' के घुटनों के सन्धिस्थान शुष्क, रूक्ष, मांस, एवं रक्त से रहित होते हैं, उसी प्रकार धन्य अनगार के दोनों घुटने शुष्क, रूक्ष, एवं मांस रक्त रहित हो गये थे सू० १९ ॥

(પક્ષિવિશેષ)ની જંઘા સમાન શુષ્ક, રૂક્ષ અને માંસ-રકત-રહિત થઇ ગઇ હતી આ પક્ષીઓની જંઘાઓ સ્વભાવથી જ નિર્માંસ તેમજ રકત-રહિત હોય છે એટલે અહીં એની ઉપમા આપવામા આવી છે. ધન્યકુમાર અણગારની જંઘાઓ પણ તેના જેવી પાતળી થઇ ગઇ હતી. (સૂ૦ ૧૮)

'धण्णस्स' ઈત્યાદિ જેવી રીતે કાલી નામે વનસ્પતિ વિશેષનું સન્ધિસ્થાન (જોડ), મોર તેમજ ઢેણિકાલિકા (પક્ષિવિશેષ) નાં ઢીંચણનુ સન્ધિસ્થાન શુષ્ક, રૂક્ષ, માંસ તેમજ રકત-રહિત હોય છે. એવી રીતે ધન્ય અણગારના બન્ને ઢીંચણ શુષ્ક, રૂક્ષ, તેમજ માંસ-રકતથી રહિત થઇ ગયા હતા (સૂ૦ ૧૯)

मूलम्—धण्णस्स ऊरुस्स० से जहाणामए-सामकरिल्लेइ वा, बोरीकरिल्लेइ वा, सल्लई०, सामली०, तरुणए छिन्ने उण्हे जाव चिट्ठइ, एवामेव धण्णस्स ऊरू जाव सोणियत्ताए ॥ सू०२० ॥

छाया—धन्यस्य ऊर्वोः०, तद्यथानामकम्-श्यामकरीरमिति वा, बदरीकरीरमिति वा, सल्लकीकरीरमिति वा, शाल्मलीकरीरमिति वा, तरुणकं छिन्नं उष्णे यावत्तिष्ठति, एवमेव धन्यस्योरू यावत् शोणिततया ॥ सू० २० ॥

टीका-'धण्णस्स' इत्यादि तस्य ऊर्वोः, जानुन ऊर्ध्वभाग ऊरूतयोः, तपःप्रभावादेवं रूपलावण्य संजातं यथा-श्यामकरीरं, श्यामस्य=प्रियङ्गुवृक्षस्य करीरं=अङ्कुरः, बदरीकरीरं, सल्लकीकरीरं, सल्लकी=वनस्पतिविशेषः, तस्य करीरम् = अङ्कुरः । शाल्मली= 'सेमल' इति भाषाप्रसिद्धो वृक्षविशेषस्तस्य करीरम्=अङ्कुरः । तदेतत्तरुणकम्=अपक्वं त्रोटितम्, आतपे स्थापितं सत् यथा परिम्लानं भवति तथैव धन्यनामानगारस्योरू बभूवतु ॥सू० २०॥

मूलम्—धण्णस्स कडिपत्तस्स इमेयारूवे० से जहा०-उट्ट-पादेति वा जाव सोणियत्ताए ॥ सू० २१ ॥

छाया—धन्यस्य कटिपत्रस्येदमेतद्रूपं० तद्यथा०-उष्ट्रपाद इति वा, जरग्दवपाद इति वा यावत् शोणितवत्तया ॥ सू० २१ ॥

टीका-'धण्णस्स' इत्यादि । तस्य धन्यनामानगारस्य कटिपत्रस्य=कटिप्रदेशस्य एवं रूपलावण्यं तपश्चरणेन संजातं, यथा-उष्ट्रडिम्भस्य वा वृद्धवली-

---

'धण्णस्स' इत्यादि. जिस प्रकार श्याम-(प्रियंगु) वृक्षका अङ्कुर, बदरी (बेर) वृक्षका अङ्कुर, सल्लकी (वृक्षविशेष) का अङ्कुर, शाल्मली (सेमल) वृक्ष का अङ्कुर, अपरिपक्व अवस्थामें ही तोड के धूप में सुखा देने पर म्लान एवं रूक्ष हो जाते हैं, उसी प्रकार अत्यन्त उग्र तपके कारण धन्यकुमार अनगार के ऊरु-घुटनों का ऊपरी प्रदेश (सांथल), रक्त मांस के नहीं होने से शुष्क एवं रूक्ष हो गया था ॥सू०२०॥

'धण्णस्स' ઇત્યાદિ જેમ શ્યામ (પ્રિયંગુ) વૃક્ષના અંકુર, બદરી [બોર] વૃક્ષના અંકુર, સલ્લકી [વૃક્ષવિશેષ]ના અંકુર, શાલ્મલી [સેમલ] વૃક્ષના અંકુર અપરિપક્વ અવસ્થામાંજ તોડીને તડકામાં સુકાવી દેવાથી મ્લાન તેમજ રૂક્ષ થઇ જાય છે. એવી રીતે અત્યન્ત ઉગ્ર તપને કારણે ધન્યકુમાર અણગારના ઉરૂ-ઢીંચણના ઉપરનો ભાગ [સાથલ], રક્ત માંસ નહિ હોવાથી શુષ્ક તેમજ રુક્ષ થઇ ગયો હતો. (સૂ૦ ૨૦)

र्दस्य वा चरणः=खुरद्वयात्मकः ऊर्ध्वभागे समुन्नतोऽधस्तादनुन्नतः शुष्को रूक्षश्च भवति तद्वत्तस्य कटिप्रदेशः संजातः ॥ सू० २१ ॥

मूलम्—धण्णस्स उदरभायणस्स इमेयारूवे० से जहा०—सुक्कदतिएइ वा, भज्जणयकभल्लेइ वा, कट्ठकोलंबएइ वा, एवामेव उदरं सुक्कं लुक्खं निम्मंसं ॥ सू० २२ ॥

छाया—धन्यस्योदरभाजनस्येदमेतद्रूपं०, तद्यथा०—शुष्कदतिरिति वा, भर्जनककभल्लमिति वा, काष्ठकोलम्ब इति वा, एवमेवोदरं शुष्कं रूक्षं निर्मांसम् ॥ सू० २२ ॥

टीका—'धण्णस्स' इत्यादि तस्य धन्यनामानगारस्योदरभाजनस्य तपःप्रभावान्मध्यभागे कृशतया तथाविधं रूपलावण्यं संजातं, यथा—शुष्कदतिः=आतपशुष्कं चर्ममयजलभाजनं 'मसक'—नाम्ना प्रसिद्धं, यथा वा भर्जनकभल्लं=चणकादिभर्जनपात्रं घटादिकर्परं वा, यथा वा काष्ठकोलम्बः=पिष्टमर्दनपात्रं 'कठौती' इति प्रसिद्धम्। शुष्कदत्यादिकं यथा निम्नं गम्भीरं शुष्कं रूक्षं भवति, तद्वत्तस्योदरं शुष्कं रूक्षं निर्मांसमतिगम्भीरं कृशं निम्नं सजातम् ॥ सू० २२ ॥

'धण्णस्स' इत्यादि। जिस प्रकार ऊंट के बच्चे का पांव, वृद्ध बैल का दो खुरवाला पांव, ऊपर से उन्नत (ऊंचा) और नीचे से अवनत (खड्डावाला) तथा रक्त मांस रहित होता है, उसी प्रकार धन्यकुमार अनगार का कटिप्रदेश भी अतिशय तप के कारण रक्त, मांस रहित अत्यन्त क्षीण शुष्क एवं रूक्ष हो गया था ॥ सू० २१ ॥

'धण्णस्स' इत्यादि। जिस प्रकार धूप में सूखी हुई चमडें की मसक, चने आदि की रोटी पकानेका तवा, अथवा आटा गूंदने की कठौती, शुष्क, रूक्ष एवं अन्दरसे गहरी होती है, उसी प्रकार अतिशय उग्र तप के कारण धन्यकुमार अनगार का पेट भी रक्त एवं

'धण्णस्स' ઇત્યાદિ. જેવી રીતે ઊંટના બચ્ચાના પગ, વૃદ્ધ, બળદના બે ખરીવાલા પગ, ઉપરથી ઊંચા અને નીચે ખાડાવાળા તથા રક્ત-માંસ-રહિત હોય છે, એવી રીતે ધન્યકુમાર અણગારનો કટિ-પ્રદેશ પણ અતિશય તપને કારણે રક્ત-માંસ રહિત, અત્યન્ત ક્ષીણ, શુષ્ક તેમજ રૂક્ષ થઇ ગયો હતો [સૂ૦ ૨૧]

'धण्णस्स' ઇત્યાદિ. જેમ તડકામા સુકાએલી ચાંમડાની મસક, ચણા આદિની રોટલી સેકવાની લોઢી [તવો] અથવા લોટ બાંધવાની કથરોટ, શુષ્ક રૂક્ષ તેમજ અંદરથી ઉંડી [ગહરી] હોય છે, તેવી રીતે અતિશય ઉગ્ર તપના કારણે ધન્યકુમાર અણગારનું

मूलम्—धण्णस्स पांसुलियकडयाणं इमेयारूवे० से जहा०—थासयावलीति वा,पाणावलीति वा,मुंडावलीति वा,एवा० ॥सू०२३॥

छाया—धन्यस्य पांशुलिकाकटकयोरिदमेतद्रूपं०, तद्यथा०—स्थासकावलीति वा, पानावलीति वा, मुण्डावलीति वा, एवमेव० ॥ सू० २३ ॥

टीका—'धण्णस्स' इत्यादि तस्य पांशुलिकाकटकयोः—पांशुलिकाः= पार्श्वास्थीनि तासां कटकौ=कटौ समूहौ, तयोरेवं रूपलावण्यं तपश्चरणेन संजातं यथा—स्थासकावली, स्थासका=दर्पणाकृतयः पात्रविशेषाः, दर्पणा वा, तेषामुपर्युपरिस्थितानामावली=पङ्क्तिः, तद्वत् स्फुटतया वामदक्षिणपार्श्वद्वये तस्यास्थिश्रेणिरेकैकतया दृश्यते । यथा वा पानावली, अत्र पान—शब्देन पानपात्रं गृह्यते 'गिलास' इति भाषायाम् , तेषामावली, यद्वा पानं=जलं, तेषामावली जलतरङ्गावलीत्यर्थः, तद्वत् , यथा वा मुण्डावली, मुण्डाः=पशुबन्धनकीलविशेषाः, तेषामावली=पङ्क्तिः, तद्वत् ॥सू० २३॥

मांस के अभाव से कृश, शुष्क, रूक्ष एवं गहरा हो गया था, अर्थात् तप के कारण पेट पीठ से चिपक गया था ॥ सू० २२ ॥

'धण्णस्स' इत्यादि । जैसे स्थासकावली—दर्पण की आकृतिवाले पात्रविशेष की, अथवा दर्पणकी एक के ऊपर एक रक्खी हुई पंक्ति, पाणावली पानपात्र (गिलास) की पंक्ति, अथवा मुण्डावली, स्थाणु विशेष—पशु बाँधने के कीलों (खूंटो) की क्रमशः एक के ऊपर एक रक्खी हुई पंक्ति । जिस प्रकार ये सब भिन्न २ गिने जा सकते हैं, उसी प्रकार अतिशय उग्र तप के कारण धन्य नामक अनगार की दोनों ओर की पसलियां रक्त एवं मांस के अभावसे पृथक् पृथक् गिनी जा सकती थीं ॥सू० २३॥

પેટ પણ રક્ત તેમજ માંસના અભાવથી કૃશ, શુષ્ક, રૂક્ષ તેમજ ઉંડું થઈ ગયું હતું. અર્થાત્ તપના કારણે પેટ પીઠને ચોટી ગયું હતું (સૂ૦ ૨૨)

'ધણ્ણસ્સ' જેવી રીતે સ્થાસકાવલી—અરીસા [દર્પણ] ની આકૃતિવાળા પાત્ર વિશેષની અથવા દર્પણની એક ઉપર રાખેલી પંક્તિ પાણાવલી—પાન પાત્ર, [ગ્લાસ] ની પંક્તિ અથવા મુંડાવલી સ્થાણુ વિશેષ-પશુ બાંધવાના ખીલાની ક્રમશઃ એક ઉપર એક રાખેલી પંક્તિ જે રીતે એ અલગ અલગ ગણી શકાય છે એવી રીતે અતિશય ઉગ્ર તપના કારણે ધન્યકુમાર અણગારની બન્ને બાજુની પાંસળીઓ રક્ત તેમજ માંસના અભાવથી જુદી જુદી ગણી શકાતી હતી [સૂ૦ ૨૩]

मूलम्-धण्णस्स पिट्ठकरंडयाणं अयमेयारूवे० से जहा०-कण्णावलीति वा, गोलावलीति वा, वट्टयावलीति वा, एवमेव ॥ सू० २४ ॥

छाया-धन्यस्य पृष्ठकरण्डकानामिदमेतद्रूपं०, तद्यथा-कर्णावलीति वा, गोलावलीति वा, वर्त्तकावलीति वा, एवमेव० ॥सू० २४॥

टीका-'धण्णस्स' इत्यादि। तस्य पृष्ठकरण्डकानाम्=पृष्ठप्रदेशानां तादृशं रूपलावण्यं संजातं यथा कर्णावली=कर्णभूषणं 'वाली' इति भाषायाम्, यथा वा गोलावली=वर्तुलाकार-पाषाणमयपात्रं 'कुण्डी' इति भाषायाम्, यथा वा वर्त्तकावली=लाक्षामयबालक्रीडनकवस्तुविशेषः, तद्वत् ॥सू० २४॥

मूलम्-धण्णस्स उरकडयस्स अयमेयारूवे० से जहा०-चित्तकट्टरेइ वा, वीयणपत्तेइ वा, तालियंटपत्तेइ वा, एवामेव ॥सू०२५॥

छाया-धन्यस्योरःकटकस्येदमेतद्रूपं०, तद्यथा०-चित्तकट्टरमिति वा, व्यजनपत्रमिति वा, तालवृन्तपत्रमिति वा, एवमेव० ॥सू० २५॥

टीका-'धण्णस्स' इत्यादि। तस्य धन्यनाम्नोऽनगारस्य उरःकटकस्य=वक्षःस्थलस्य रूपं तपश्चरणेनैवंविधं संजातं यथा-चित्तकट्टरम्, इह चित्तशब्देन किलिञ्जादिकं वस्तु किञ्चिद् उच्यते, तस्य कट्टरं=अधोभागः, वंशनिर्मितपात्रं 'टोकरी' 'ओडी' इति भाषायाम्, तस्याधोभागः, तद्वत्, यथा वा व्यजनपत्रं-

---

'धण्णस्स' इत्यादि। श्री धन्यकुमार अनगारका पृष्ठप्रदेश (पीठ), निर्मांस एवं रक्तहीन होनेसे कर्णफूल (वाली), पत्थर की कुंडी, अथवा बच्चों के खेलने का एक प्रकारका लाखसे बना हुआ खिलौना के समान शुष्क, रूक्ष हो गया था ॥ सू० २४ ॥

'धण्णस्स' इत्यादि। बांस-निर्मित टोकरी (छबडा) के नीचे का भाग, बांस आदि के खापटियों का बना हुआ पंखा अथवा ताल

'धण्णस्स' ઇત્યાદિ શ્રી ધન્ના અણુગારનો પૃષ્ટ-પ્રદેશ [વાંસો] નિર્માંસ તેમજ રક્તહીન હોવાથી કર્ણફૂલ [બુટીઆ], પત્થરની કુંડી, અથવા બાળકોને રમવાના લાખથી બનેલ એક પ્રકારના રમકડાની સમાન શુષ્ક રૂક્ષ થઇ ગયો હતો. [સૂ૦ ૨૪]

'धण्णस्स' શ્રી ધન્યકુમાર અણુગારનું વક્ષસ્થલ મહાન્ તપશ્ચર્યાને કારણે નિર્માંસ તેમજ રક્તહીન હોવાથી તે, વાંસથી બનાવેલ ટોપલીનો નીચેનો ભાગ, વાંસ

वंशादिदलमयं वायूत्पादकं व्यजनम्, यथा वा तालवृन्तपत्रम्=तालपत्रनिर्मितो व्यजनविशेषः, तद्वत् ॥ सू० २५ ॥

मूलम्--धण्णस्स बाहाणं अयमेयारूवे० से जहानामए-समिसंगलियाइ वा, बाहायासंगलियाइ वा, अगत्थिसंगलियाइ वा, एवामेव० ॥ सू० २६ ॥

छाया-धन्यस्य बाह्वोरिदमेतद्रूप०, तद् यथानामकम्-शमीसंगलिकेति वा, बाहायासंगलिकेति वा, अगस्तिसंगलिकेति वा, एवमेव ॥ सू० २६ ॥

टीका-'धण्णस्स' इत्यादि। धन्यनाम्नोऽनगारस्य बाह्वोरेवं रूपलावण्यं तपसा संजातं यथा शमीसंगलिका-शमीनाम्नो वृक्षस्य 'खेजडी' इति भाषाप्रसिद्धस्य संगलिका=फलिका, यथा वा बाहायसंगलिका-बाहाया='अमलतास' 'करमाला' इति प्रसिद्धो वृक्षविशेषः, तस्याः संगलिका=फलिका, यथा वा-अगस्तिकसंगलिका,-अगस्तिको=वकवृक्षविशेषस्तस्य संगलिका=फलिका, तद्वत्। इमाः फलिकाः शुष्काः सत्यो यथा भवन्ति तथा धन्यनाम्नोऽनगारस्य बाहू मांसशोणिताभावेन शुष्कौ संजातौ ॥ सू० २६ ॥

मूलम्--धण्णस्स हत्थाणं अय० से जहा०--सुक्कछगणियाइ वा, वडपत्तेइ वा, पलासपत्तेइ वा, एवमेव० ॥ सू० २७ ॥

पत्र का बना हुआ पंखा के समान धन्यकुमार अनगार का वक्षस्थल महान तपश्चर्या के कारण मांस एवं रक्त के सूख जाने से शुष्क, रूक्ष हो गया था ॥ सू० २५ ॥

'धण्णस्स' इत्यादि। इस घोर तपश्चर्या से धन्ना अनगार की भुजायें, शमी (खेजडी) नामक वृक्ष की फलियां, बाहाया (अमलतास, करमाला) वृक्ष की फलियां अथवा अगथिया-वकवृक्षविशेष की फलियां के समान रक्त एवं मांस के अभाव से शुष्क, रूक्ष हो गई थीं ॥सू०२६॥

આદિની ચીપોથી બનાવેલ પંખા અથવા તાડપત્રના બનાવેલ પંખાના જેવું, શુષ્ક, રૂક્ષ થઈ ગયુ હતુ [સૂ૦ ૨૫]

'धण्णस्स' આવી મહાન્ તપશ્ચર્યાના પ્રભાવથી ધન્ના અણગારની ભુજાઓ, લોહી અને માંસના અભાવે શમી નામના વૃક્ષની શીંગો, વાહાયા [ગરમાળો] વૃક્ષની શીંગો, અથવા અગથિયા-બકવૃક્ષવિશેષની શીંગો જેવી, શુષ્ક-રૂક્ષ થઈ ગઈ હતી (સૂ૦ ૨૬)

छाया-धन्यस्य हस्तयोरिदं०, तद् यथा०-शुष्कछगणिकेति वा, वट-पत्रमिति वा, पलासपत्रमिति वा, एवमेव० ॥सू० २७॥

टीका-'धण्णस्स' इत्यादि। तस्य हस्तयोरेवं रूपलावण्यं तपश्चरणेन संजातं, यथा शुष्कछगणिका=शुष्कगोमयं 'छाणा' 'कंडा' इति प्रसिद्धम्, यथा वा वटपत्रम्=वटवृक्षस्य शुष्कं पत्रम्, यथा वा पलाशपत्रम्=पलाशवृक्षस्य शुष्कं पत्रम्, एवमेव तस्य हस्तौ मांसशोणितयोः शुष्कतया संजातौ ॥सू०२७॥

सूलम्-धण्णस्स हत्थंगुलियाणं अय० से जहा०-कलाय-संगिलाइ वा, मुग्गसंगलियाइ वा, माससंगलियाइ वा तरुणिया छिण्णा आयवे दिण्णा सुक्का समाणी० एवमेव० ॥ सू० २८॥

छाया-धन्यस्य हस्ताङ्गुलिकानामिद०, तद्यथा०-कलासंगलिकेति वा, मुद्गसंगलिकेति वा, माषसंगलिकेति वा तरुणिका छिन्ना आतपे दत्ता शुष्का सती०, एवमेव० ॥ सू० २८ ॥

टीका-'धण्णस्स' इत्यादि। तस्य हस्ताङ्गुलिकानां रूपलावण्यं तपश्चरणेन तथाविधं संजातं यथा कलायसंगलिका, कलायो=वृत्तचणकः, तस्य संगलिका=फलिका, मुद्गसंगलिका=मुद्गलिका, माषसंगलिका=माषफलिका तरुणिका

'धण्णस्स' इत्यादि। जिस प्रकार गोबर का सूखा हुआ छाणा (कंडा), वट-वृक्ष का सूखा हुआ पत्ता अथवा पलाश (खाखरा, ढाक) वृक्ष का सूखा हुआ पत्ता होता है, उसी प्रकार धन्यकुमार अनगार के दोनो हाथ अतिशय घोर तप के कारण मांस एवं शोणित से विहीन होकर शुष्क, रूक्ष हो गये थे ॥ सू० २७ ॥

'धण्णस्स' इत्यादि। जिस प्रकार मटरकी फलियां, मूंग की फलियां, उड़द की फलियां, अर्द्धपरिपक्व अवस्था में ही तोडकर धूप में सूखा देने से म्लान एवं शुष्क हो जाती हैं, उसी प्रकार धन्य-

'धण्णस्स' ઇત્યાદિ જેમ સુકાઇ ગયેલ છાણાં, વડનાં સુકાં પાંદડા, અથવા પલાસ [ખાખરા-ઢાક] વૃક્ષના સુકાઇ ગયેલ પાંદડા હોય છે, તેવીજ રીતે ધન્યકુમાર અનગારના બન્ને હાથ અતિશય ઉગ્રતપના કારણે માંસ અને લોહીના અભાવે શુષ્ક રૂક્ષ થઇ ગયા હતા (સૂ૦ ૨૭)

'धण्णस्स' ઇત્યાદિ જેવી રીતે વટાણાની શીંગો. મગની શીંગો, અને અડદની શીંગો, અધીં પાકેલ અવસ્થામાં તોડીને તડકામાં સુકવવાથી મ્લાન અને

अपक्का, छिन्ना=त्रोटिता आतपे दत्ता=निक्षिप्ता शुष्का सती यथा परिम्लाना, एवमेव तस्य हस्ताङ्गुलयः शुष्काः निर्मांसशोणिताः संजाताः ॥ सू० २८॥

मूलम्-धण्णस्स गीवाए° से जहा°-करगगीवाइ वा, कुंडियागीवाइ वा, उच्चत्थवणएइ वा, एवामेव° ॥ सू० २९ ॥

छाया-धन्यस्य ग्रीवायाः०, तद्यथा०-करकग्रीवेति वा, कुण्डिकाग्रीवेति वा, उच्चस्थापनकमिति वा, एवमेव० ॥ सू० २९ ॥

टीका-'धण्णस्स' इत्यादि। तस्य ग्रीवायास्तपःप्रभावादेवं रूपलावण्यं संजातं, यथा-करकग्रीवा, करकः=कमण्डलुस्तस्य ग्रीवा, कुण्डिकाग्रीवा, कुण्डिका लघुकलशी, तस्या ग्रीवा, उच्चस्थापनकग्रीवा, उच्चस्थापनकं नाम 'कूंजा' 'सुराही'-इति भाषाप्रसिद्धं मृण्मयपात्रं, तस्य ग्रीवा, अतिकृशा शुष्का रूक्षा निर्मांसाऽभवत् ॥सू० २९॥

मूलम्-धण्णस्स हणुयाए° से जहा०-लाउयफलेति वा हकुवफलेति वा, अंबगट्ठियाइ वा, एवामेव° ॥ सू. ३० ॥

छाया-धन्यस्य खलु हनुकस्य०, तद्यथा०-अलाबुफलमिति वा, हकुवफलमिति वा, आम्रास्थिरिति वा एवमेव० ॥ सू० ३० ॥

कुमार अनगार के दोनों हाथों की ऊंगलिया अतिशय तप के कारण रक्त एवं मांसके अभावसे शुष्क, रूक्ष हो गई थीं ॥ सू० २८ ॥

'धण्णस्स' इत्यादि। जिस प्रकार कमण्डलुकी गर्दन, छोटी कलशी की गर्दन अथवा सुराही-कूँजा-की गर्दन अत्यन्त सकडी एवं पतली होती हैं, उसी प्रकार धन्यकुमार अनगार की गर्दन भी अतिशय तप के कारण मांस एवं रक्त के अभाव से कृश तथा शुष्क रूक्ष हो गई थीं ॥ सू० २९ ॥

શુષ્ક થઇ જાય છે. તેવીજ રીતે ધન્યકુમાર અણગારના બન્ને હાથની આંગળીઓ અતિશય તપના કારણે રક્ત અને માંસના અભાવે શુષ્ક-રૂક્ષ થઇ ગઇ હતી. (સૂ૦ ૨૮)

'ધણ્ણસ્સ' ઇત્યાદિ જેવી રીતે કમંડળની ગરદન, નાના કળશીયાથી ગરદન, અથવા કુંજાની ગરદન અત્યન્ત સાંકડી તેમજ પાતળી હોય છે, તેવી રીતે ધન્યકુમા૦ અણગારની ગરદન પણ અતિશય તપના કારણે માસ અને રક્તના અભાવે કૃશ તેમજ શુષ્ક-રૂક્ષ થઇ ગઇ હતી (સૂ૦ ૨૯)

टीका–'धण्णस्स' इत्यादि। तस्य धन्यनामानगारस्य हनुकं=चिबुकं तपोमाहात्म्यादेवं विधं संजातं यथा–अलाबुफलं=सद्योजाततुम्बीफलं, हकुवफलं-'हिंगोटा' इति भाषाप्रसिद्धफलं, आम्राष्टिका=आम्रगुटिका 'आमगुठली' इति भाषायाम्, तद्वत् शुष्कं रूक्षं निर्मांसं चिबुकमभवत् ॥ सू० ३० ॥

मूलम्--धण्णस्स उट्ठाणं०, से जहा०--सुक्कजलोयाइ वा, सिलेसगुलियाइ वा, अलत्तगुलियाइ वा, एवामेव० ॥ सू०३१॥

छाया–धन्यस्यौष्ठयोः, तद्यथा०–शुष्कजलौकेति वा, श्लेपगुटिकेति वा, अलक्तकगुटिकेति वा, एवमेव० ॥ सू० ३१ ॥

टीका–'धण्णस्स' इत्यादि। तस्योष्ठयोस्तपःप्रभावादेवं रूपलावण्यं संजातं, यथा--शुष्कजलौका 'जोंक' इति भाषायाम्, श्लेषगुटिका श्लेषः= लेपविशेषस्तस्य गुटिका, अलक्तकगुटिका, अलक्तक=लाक्षारसस्तस्य गुटिका, जलौकादीनां शुष्कत्वे सति कान्तिराहित्यं कार्श्यं च भवति तद्वद्भावोष्ठौ शुष्कौ रूक्षौ निर्मांसौ बभूवतुः ॥ सू० ३१ ॥

'धण्णस्स' इत्यादि। तत्काल का उत्पन्न हुआ तुम्बी का फल, हकुब (हिंगोटे) का फल अथवा आम की गुठली जिस प्रकार की होती है, उसी प्रकार धन्यकुमार अनगार की दाढी – ठुड्डी भी अत्यन्त घोर तप के कारण रक्त एवं मांस के अभाव से शुष्क एवं रूक्ष हो गई थीं ॥ सू० ३० ॥

'धण्णस्स' इत्यादि। जिस प्रकार सूखी हुई जोंक, श्लेष (एक प्रकार का लेप) की गोली अथवा लाख की गोली होती है उसी प्रकार अत्यन्त घोर तप के कारण धन्यकुमार अनगार के दोनों ओठ (होठ) शुष्क, रूक्ष एवं निर्मांस हो गये थे ॥ सू० ३१ ॥

'धण्णस्स' ઇત્યાદિ તરતનુ ઉત્પન્ન થયેલુ તુમ્બડીનું ફળ, હકુબ (હિંગોટા)નું ફળ અથવા કેરીની ગોટલી જેવા પ્રકારની હોય છે, તેવીજ રીતે ધન્યકુમાર અણગારની દાઢી પણ અત્યન્ત ઘોર તપના કારણે રકત અને માંસના અભાવથી શુષ્ક અને રૂક્ષ થઇ ગઇ હતી (સૂ૦ ૩૦)

'धण्णस्स' ઇત્યાદિ. જેવી રીતે સુકાય ગયેલ જળો, શ્લેષ (એક જાતનો લેપ)ની ગોળી, અથવા લાખની ગોળી હોય છે, તેવી રીતે અત્યંત ઘોરતપના કારણે ધન્યકુમાર અણગારના બન્ને હોઠ શુષ્ક, રૂક્ષ અને નિર્માસ થઇ ગયા હતા (સૂ૦ ૩૧)

मूलम्--धण्णस्स जिब्भाए अय०, से जहानामए,वडपत्तेइ वा,पलासपत्तेइ वा,उंबरपत्तेइ वा, सागपत्तेइ वा, एवामेव०॥सू०३२॥

छाया-धन्यस्य जिह्वाया इद०, तद्यथानामकम्-वटपत्रमिति वा, पलासपत्रमिति वा, उदुम्बरपत्रमिति वा, शाकपत्रमिति वा, एवमेव० ॥ सू० ३२ ॥

टीका-'धण्णस्स' इत्यादि । तस्य जिह्वायास्तपश्चरणेनैवंविधं रूपलावण्यं संजातं, यथा-वटपत्रं, पलाशपत्रम् , उदुम्बरपत्रं, शाकपत्रं वा, एवमेव निर्मांसशोणिता चर्मधमनीमात्रावशेषा जिह्वा संजाता ॥ सू० ३२ ॥

मूलम्--धण्णस्स नासाए अय०, से जहानामए-अंबगपेसियाइ वा, अंबाडगपेसियाइ वा, माउलिङ्ग पेसियाइ वा, तरुणिया० एवामेव० ॥ सू० ३३ ॥

छाया-धन्यस्य नासाया इद०, तद्यथानामकम्-आम्रपेशिकेति वा, आम्रातकपेशिकेति वा, मातुलिङ्गपेशिकेति वा, तरुणिका० एवमेव० ॥सू० ३३॥

टीका-'धण्णस्स' इत्यादि । तस्य नासिकाया एवं रूपलावण्यं संजातं यथा-आम्र=प्रसिद्धं, आम्रातकम्='आमडा' इति वङ्गदेशप्रसिद्धं फल, मातुलिङ्ग='बिजोरा'-इति प्रसिद्धं फलम्, तेषां पेशी=अस्थित्वग्वर्जितो घनीभूतो भागः 'गूदा' 'गिर' इति भाषायाम्, सा चापरिपक्वैव छिन्ना, आतपे दत्ता सती

'धण्णस्स' इत्यादि । जिस प्रकार वटवृक्ष का पत्ता, पलाश (खाखरा) वृक्ष का पत्ता, उम्बर का पत्ता, अथवा शाक (सागवान) का पत्ता होता है, उसी प्रकार घोर तप के कारण धन्यकुमार अनगार की जिह्वा भी रक्त मांस रहित हो केवल चमड़े एवं नसों का जाल रूप ही रह गई थी ॥ सू० ३२ ॥

'धण्णस्स' इत्यादि । गुठली और छिलके रहित आम की चीर-फांक, आमडे (बंगाल का प्रसिद्ध फल) की फांक, बिजौरेकी फांक, धूप में सुखा दी जायें और सुख जाने पर वे जिस प्रकार

'धण्णस्स' ઇત્યાદિ. જેમ સુકા વડના પાંદડાં, પલાશ (ખાખરા) વૃક્ષના પાંદડાં ઉમ્બરાના પાદડાં અથવા સાગના પાદડાં હોય છે, તે પ્રકારે ઘોરતપના કારણે ધન્યકુમાર અણગારની જીભ પણ રક્ત માંસ રહિત થઈ, ફક્ત ચામડા અને નસોની જાળ રૂપજ રહી ગઈ હતી (સૂ૦ ૩૨)

'धण्णस्स' ઇત્યાદિ ગોઠલી અને છોતરા વિનાની કેરીની ચીર, આમડા (બંગાલાનું પ્રસિદ્ધ ફળ) ની ચીર, બિજોરાની ચીર, તડકામાં સુકાયા પછી જેમ કર-

परिम्लाना भवति तथा तस्य नासिका शुष्का रूक्षा निर्मांसा च संजाता ॥सू०३३॥

मूलम्--धण्णस्स अच्छीणं, से जहा० वीणाछिड्डेति वा, वद्धीसगछिड्डेति वा, पाभाइयतारगाइ वा, एवामेव० ॥सू० ३४॥

छाया-धन्यस्याक्ष्णोः०, तद्यथा०-वीणाछिद्रमिति वा, वद्धीसकच्छिद्रमिति वा, प्राभातिकतारकेति वा, एवमेव० ॥ सू० ३४ ॥

टीका-'धण्णस्स' इत्यादि । यथा वीणाछिद्रं, वद्धीसकछिद्रं-वद्धीसको=वाद्यविशेषस्तस्य छिद्रं, प्राभातिकतारका वा, तत्सदृशे तस्याक्षिणी निम्ने गभीरे शुष्के रूक्षे निर्मांसे च संजाते ॥ सू० ३४ ॥

मूलम्-धण्णस्स कण्णाणं अयमे०,से जहा० मूलछल्लियाइ वा, वालुंकछल्लियाइ वा, कारेल्लकछल्लिकेति वा, एवमेव० ॥सू० ३५॥

छाया-धन्यस्य कर्णयोरिदं०, तद्यथा०-मूलछल्लिकेति वा, वालुङ्कछल्लिकेति वा, कारेल्लकछल्लिकेति वा, एवमेव० ॥ सू० ३५ ॥

टीका-तस्य कर्णयोरेवं रूपलावण्यं संजातं, यथा-मूलकछल्ली, वालुङ्क-

म्लान हो जाती हैं उसी प्रकार उग्र तप के कारण धन्यकुमार की नासिका शुष्क, रूक्ष एवं निर्मांस हो गई थी ॥ सू० ३३ ॥

'धण्णस्स' इत्यादि । जिस प्रकार वीणा के छिद्र, वद्धीसक एक प्रकार के बाजे के छिद्र, अथवा प्रातःकालीन तारे होते हैं उसी प्रकार उग्र तप के कारण धन्यकुमार की आंखे ऊंडी (गहरी), तथा शुष्क, रूक्ष हो गई थी । उनकी आंखे इतनी अन्दर घुस गई थीं, कि उन दबे हुए गहरे छोटे २ छिद्रों में चमक (कीकी) मात्र ही दिख पडती थीं ॥ सू० ३४ ॥

'धण्णस्स' इत्यादि । जैसे-मूले की छाल, ककडी की छाल अथवा

માઈ જાય છે, તેમ ઉગ્રતપના કારણે ધન્યકુમાર અણગારની નાસિકા શુષ્ક, રૂક્ષ અને નિર્માંસ થઈ ગઈ હતી. (સૂ૦ ૩૩)

'धण्णस्स' ઇત્યાદિ જેમ વીણાના છિદ્ર, બદ્ધીસક-એક પ્રકારના બીજાના છિદ્ર, અથવા પ્રાતઃકાળના તારા દેખાય છે. તેવી રીતે ઉગ્રતપના કારણે ધન્યકુમારની આંખો ઉંડી તથા શુષ્ક, રૂક્ષ થઈ ગઈ હતી. તેમજ તેમની આંખો એટલી અંદર ઘુસી ગઈ હતી કે તે દબેલા ઉંડા નાના નાના છિદ્રમાં ચમક (કીકી) માત્રજ દેખાતી હતી. (સૂ૦ ૩૪)

'धण्णस्स' ઇત્યાદિ. જેમ મૂળાની છાલ, કાકડીની છાલ અથવા કારેલાની

छल्ली, कारवेल्लछल्ली। तत्र मूलकः=स्वनामप्रसिद्धः कन्दविशेषः 'मूला' इति भाषायाम्। वालुङ्कं=चिर्भिटं 'ककडी' इति भाषायाम्। कारवेल्लं=लताफलं 'करेला' इति भाषायाम्। तेषां छल्ली=त्वक्, सा यथाऽतिम्लाना भवति तद्वत्कर्णौ संजातौ ॥ सू० ३५ ॥

मूलम्--धण्णस्स सीसस्स०, से जहा०-तरुणगलाउएइ वा, तरुणगएलालुएइ वा, सिण्हालएइवा तरुणए० जाव चिट्ठइ, एवामेव धण्णस्स अणगारस्स सीसं सुक्कं लुक्खं निम्मंसं अट्ठि-चम्मच्छिरत्ताए पण्णायइ, नो चेव णं मंससोणियत्ताए ॥सू० ३६॥

छाया-धन्यस्य शीर्षस्य तद्यथा०-तरुणकालाबुकमिति वा तरुणकै-लालुकमिति वा, सिण्हालकमिति वा, तरुणकं०, यावत्तिष्ठति, एवमेव धन्य-स्यानगारस्य शीर्षं शुष्कं रूक्षं निर्मांसमस्थिचर्मशिरावत्तया प्रज्ञायते, नो चैव खलु मांसशोणितवत्तया ॥ सू० ३६ ॥

टीका-'धण्णस्स' इत्यादि। तस्य खलु धन्यनामानगारस्य तपःप्रभा-वाच्छीर्षकस्यैवंविधं रूपलावण्यं संजातं, यथा-तरुणालाबु=अपक्वतुम्बीफलं, तरुणैलालुकम्=अपक्वो वर्तुलाकारः कन्दविशेषः, 'सुरण' इति भाषाप्रसिद्धः, सिण्हालकम्='तरबूज' इति प्रसिद्धं फलं, तच्च तरुणकम्=अपक्वं त्रोटितम् आतपे निक्षिप्तं शुष्कं सत् परिम्लानं तिष्ठति=भवति, एवमेव धन्यनाम्नोऽनगारस्य

करेले की छाल होती है उसी प्रकार उग्र तप के कारण धन्यकुमार अनगार के कान, मांस एवं रक्त से रहित हो कर सूख गये थे॥सू०३५॥

'धण्णस्स' इत्यादि। जैसे – अपक्व तुम्बीफल, अपक्व एलालुक (गोल सूरण कन्द) अथवा अपक्व तरबूज, अपरिपक्व अवस्था में ही तोडकर सूर्य की प्रचण्ड धूप में दे देने पर शुष्क, रूक्ष एवं म्लान हो जाते हैं, उसी प्रकार उग्र तप से धन्य अनगार का मस्तक भी

છાલ હોય છે, તેવી રીતે ઉગ્રતપના કારણે ધન્યકુમાર અણગારના કાન, માંસ અને રક્તના અભાવે સુકાઈ ગયા હતા. (સૂ૦ ૩૫)

'ધણ્ણસ્સ' ઇત્યાદિ. જેમ અપકવ તુંબડાનું ફળ, અપકવ એલાલુક (ગોળ સૂરણ કંદ) અથવા અપકવ તરબૂચ, અપરિપકવ અવસ્થામાંજ તોડીને સૂર્યના સખ્ત તાપમાં રાખવાથી, શુષ્ક, રૂક્ષ તેમજ મ્લાન થઈ જાય છે તેવી રીતે ઉગ્ર તપથી

शीर्षकं शुष्कं रूक्षं निर्मांसं केवलमस्थिचर्मधमनीनां दर्शनात् प्रज्ञायते नैव मांसशोणितसद्भावेन ॥ सू० ३६ ॥

मूलम्-एवं सव्वत्थ, नवरं उदरभायण-कण्ण-जीहा-उट्ठा, एएसिं अट्ठी न भण्णति, चम्मछिरत्ताए पण्णायइति भण्णइ ॥सू. ३७॥

छाया--एवं सर्वत्र, नवरम्-उदरभाजनं कर्णौ, जिह्वोष्ठौ, एतेषां (वर्णके) अस्थि न भण्यते, चर्मशिरात्वेन प्रज्ञायते, इति भण्यते ॥सू० ३७॥

टीका-'एवं सव्वत्थ' इत्यादि। एवं सर्वत्र सर्वाङ्गेषु समानतया वर्णनं विज्ञेयं, नवरं=विशेषस्तु-उदरं, कर्णौ, जिह्वा, ओष्ठौ, एतेषां वर्णने 'अस्थि' इति न भण्यते=न कथ्यते। तत्र केवलं चर्मशिरादर्शनादेवोदरादीनां स्वरूपं विज्ञायते, इति भण्यते ॥ सू० ३७ ॥

उक्तरीत्या धन्यनाम्नोऽनगारस्य चरणाभ्यामारभ्य शिरःपर्यन्तं सोपमानं पृथक् पृथग् वर्णितम्। पुनरेकेनैव सूत्रेण समग्रशरीरं वर्णयति-'धण्णेणं' इत्यादि।

बिना रक्त एवं मांस के शुष्क, रूक्ष हो गया था। वह मात्र हड्डी, चर्म तथा नसों का समूह मात्र ही ज्ञात होता था ॥ सू० ३६ ॥

'एवं सव्वत्थ' इत्यादि। उपरोक्त सभी अङ्गोपाङ्गो का वर्णन समान प्रकार से समझना चाहिये, परन्तु पेट, कान, जिह्वा तथा ओठ (होठ) में हड्डियां नहीं होती हैं, केवल ये चर्म तथा नसों द्वारा ही दीखते हैं, इस कारण इनके वर्णन में दूसरे अङ्गों की तरह हड्डियों का वर्णन नहीं समझना चाहिये। धन्यकुमार अनगार के पेट, कान जिह्वा तथा ओठ, रक्त एवं मांस के अभाव से केवल चमडा और नसों जाल से ही दिखाई देते थे ॥ सू० ३७ ॥

ધન્ય અણુગારનું મસ્તક પણ રકત માસના અભાવે શુષ્ક, રૂક્ષ થઇ ગયું હતું. તે માત્ર હાડ, ચર્મ તથા નસોના સમૂહ-માત્રથીજ દેખાતું હતું. (સૂ૦ ૩૬)

'एवं सव्वत्थे' ઇત્યાદિ ઉપર કહેલ બધાં અંગ અને ઉપાંગનું વર્ણન સમાન પ્રકારથી સમજી લેવું, પરન્તુ પેટ, કાન, જીભ તથા હોઠમાં હાડકાં નથી હોતા. ફકત ચર્મ તથા નસો દ્વારાજ એ દેખાય છે. એટલા માટે એનું વર્ણન કરતી વખતે બીજા અંગોની માફક હાડકાનું વર્ણન સમજવું નહિ. ધન્યકુમાર અણુગારનું પેટ, કાન, જીભ તથા હોઠ રકત તેમજ માંસના અભાવથી ફકત ચર્મ અને નસાજાલથીજ દેખાતાં હતાં. (સૂ૦ ૩૭)

मूलम्—धण्णे णं अणगारे णं सुक्केणं भुक्खेणं पायजंघोरुणा, विगयतडिकरालेणं कडिकडाहेणं, पिट्ठमणुस्सिएणं उदरभायणेणं, जोइज्जमाणेहिं पांसुलिकडएहिं, अक्खसुत्तमाला विव गणिज्जमाणेहिं पिट्ठकरंडगसंधीहिं, गंगातरंगभूएणं उरकडगदेसभाएणं, सुक्कसप्पसमाणाहिं बाहाहिं, सिढिलकडाली विव लंबंतेहि य अग्गहत्थेहिं, कंपणवाइओ विव वेवमाणीए सीसघडीए, पम्हाणवदणकमले, उब्भडघडामुहे, उव्बुड्डनयणकोसे, जीवंजीवेण गच्छइ, जीवंजीवेण चिट्ठइ, भासं भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामित्ति गिलाइ । से जहानामए-इंगालसगडिआइ वा, जहा खंदओ तहा जाव हुतासणे इव भासरासिपलिच्छण्णे तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए उवसोभेमाणे उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥ सू० ३८ ॥

छाया—धन्यः खलु अनगारः शुष्केण बुभुक्षेण पादजङ्घोरुणा, विकततटीकरालेन कटिकटाहेन, पृष्ठमनुश्रितेन उदरभाजनेन, दृश्यमानैः पांशुलिकटकैः, अक्षसूत्रमालाभिरिव गण्यमानैः पृष्ठकरण्डकसन्धिभिः, गङ्गातरङ्गभूतेन उरःकटकदेशभागेन, शुष्कसर्पसमानाभ्यां बाहुभ्यां, शिथिलकटालिकाभ्यामिव लम्बमानाभ्यां चाग्रहस्ताभ्यां, कम्पनवातिके इव वेपमानया शीर्षघटया, मम्लानवदनकमलः, उद्भटघटमुखः उदब्रूडितनयनकोशो जीवजीवेन गच्छति, जीवजीवेन तिष्ठति भाषां भाषित्वा ग्लायति भाषां भाषमाणो ग्लायति, 'भाषां भाषिष्ये' इति ग्लायति । तद्यथानामकम्—अङ्गारशकटिकेती वा, यथा स्कन्दकस्तथा यावत् हुताशन इव भस्मराशि प्रतिच्छन्नतपसा तेजसा तपस्तेजःश्रिया उपशोभमानः २ तिष्ठति ॥ सू० ३८ ॥

टीका—'धन्नेणं अणगारेणं' इत्यत्र 'णं' इति पदद्वयं वाक्यालङ्कारार्थकम् । धन्योनामाऽनगारस्तीव्रतरतपश्चरणात् शुष्केण मांसशोणितरहितेन, बुभुक्षेण= बुभुक्षायोगाद्दुर्बलेन पादजङ्घोरुणा=चरणाद्यङ्गत्रयेणोपलक्षितो भवति । तस्य चरणौ, जङ्घे, ऊरू च, एतान्यङ्गानि तीव्रतपःसमाराधनेन मांसशोणितरहितान्यतिदुर्बलानि संजातानीत्यर्थः । तथा विकततटीकरालेण, विकृतं=विरूपं तत् तटयां=पार्श्वे करालम्=उन्नतं तेन, कटिकटाहेन, कटाह इव=कच्छपपृष्ठमिव,

यद्वा भाजनविशेष इव कटिः कटिकटाहः, तेन लक्षितो भवति। तस्य कटिप्रदेशः मांसशोणितोपक्षयादस्थ्नामुन्नततया च पार्श्वभागे विकृतः कटाहवत्संजात इत्यर्थः। तथा पृष्ठमनुश्रितेन उदरभाजनेन लक्षितो भवति। तस्योदरं मांसशोणितक्षयात्पृष्ठभागावस्थितास्थिसंलग्नयकृत्प्लीहान्त्रादीनामप्यतिशुष्कतया पृष्ठमाश्रित्य मध्यभागे कृशत्वाद् गम्भीरपात्रमिव संजातमित्यर्थः, अग्रतश्चर्ममात्रावृतपृष्ठभागावशेषमुदरं बभूवेति भावः।

धन्यकुमार अनगार के पांव से लेकर समस्त अङ्गोपाङ्गों का पृथक् पृथक् वर्णन भिन्न २ उपमाओं के साथ ऊपर किया गया है। अब यहाँ एक ही सूत्र में समस्त अङ्गों का वर्णन किया जाता है- 'धण्णे णं' इत्यादि।

धन्यकुमार अनगार के पाँव, जङ्घा (पिण्डी), तथा साथल, ये तीनों, अत्यन्त तीव्र तप के कारण मांस एवं रक्त के सूख जाने से शुष्क, रूक्ष तथा क्षुधासे अत्यन्त निर्बल एवं शिथिल हो गये थे। उनका कटिप्रदेश, कछुए की पीठ के समान अथवा कटाह(कढाई) के समान मांस रक्त के अभावसे हड्डियों के ऊँचेपनसे अत्यन्त विकृत हो गया था। उनका पेट, मांस एवं शोणित के अभाव से तथा यकृत् (लीवर) प्लीहा (तिल्ली) आंतें आदि के अत्यन्त सूख जाने से पीठ की हड्डियों के साथ चिपक गया था, और मध्य में कृश हो जाने से ऊंडे पात्र के समान हो गया था, अर्थात् केवल पीठसे चिपका हुआ पेट का चमडा-मात्र ही रह गया था।

ધન્યકુમાર અણગારના પગથી લઈને બધાં અંગઉપાંગનું જુદું જુદું વર્ણન જુદી જુદી ઉપમાઓથી ઉપર કરવામાં આવ્યું છે. હવે અહીં એકજ સૂત્રમાં બધાં અંગોનું વર્ણન કરવામાં આવે છે.— 'धण्णे णं' ઇત્યાદિ—

અત્યન્ત તીવ્ર તપને કારણે ધન્યકુમાર અણગાર નાં પગ જાંઘા (પિન્ડી) અને સાથલ. એ ત્રણે માંસ અને રકતના અભાવે શુષ્ક, રૂક્ષ તથા ક્ષુધાથી અત્યન્ત નિર્બલ અને શિથિલ થઇ ગયા હતા તેમનો કટિ (કેડ) પ્રદેશ કાચબાની પીઠ માફક અથવા કઢાઈ માફક માંસ, રકતના અભાવે હાડકા ઉંચા થઇ જવાથી ઘણોજ વિકૃત દેખાતો હતો. તેમનું પેટ, માંસ અને રકતના અભાવે તથા યકૃત (લીવર) પ્લીહા (બરોળ), આંતરડા આદિ સુકાઇ જવાથી વાંસાનાં હાડકા સાથે ચોંટી ગયેલ હતું તેમજ પેટ મધ્યમાં કૃશ થઇ જવાથી ઉંડા પાત્રની માફક થઇ ગયું હતું. અર્થાત પીઠથી ચોંટેલું પેટનું ચામડું માત્રજ રહી ગયું હતું.

तथा दृश्यमानैः पार्श्वास्थिकटकैः=पार्श्वभागास्थिसमूहैर्लक्षितः। तस्य पार्श्वभागावस्थितास्थीनि मांसावरणरहितत्वेन पृथक् पृथक् सुव्यक्तं दृश्यमानानि भवन्तीत्यर्थः। तथा अक्षसूत्रमालाभिरिव=रुद्राक्षमालाभिरिव गण्यमानैः=संख्यायमानैः पृष्ठकरण्डकसन्धिभिः-करण्डकं =वंशदलिकानिर्मितं टोकरीपात्रं तदिव पृष्ठं पृष्ठकरण्डकं, तस्य सन्धयः=अस्थ्नां बन्धनस्थानानि, तैरुपलक्षितः। तस्य पृष्ठभागसंलग्नास्थिबन्धनस्थानानि, रुद्राक्षमालाप्रतिबद्धप्रत्येकमणकवद् गण्यमानान्यभूवन्नित्यर्थः। अत्र करण्डकशब्देन वंशदलीकानिर्मितटोकरीपात्रसम्बन्धिवंशदलिका यथा प्रत्येकं गणयितुं शक्यन्ते तथैवास्य मुनेः पृष्ठगतास्थीनि सर्वाणि प्रत्येकं गणयितुं योग्यानि बभूवुरिति बोधितम्। तथा गङ्गातरङ्गभूतेन=गङ्गातरङ्गरूपेण उरःकटकदेशभागेन-उरःकटकस्य=वक्षःस्थलसम्बन्ध्यस्थिपञ्जरस्य देशभागः=विभागः, तेनोपलक्षितः। तत्रत्यमांसशोणितयोरतिशुष्कतया श्वासोच्छ्वाससञ्चाराद् गङ्गातरङ्गवन्निम्नोन्नतभावेन तस्य वक्षःस्थलास्थीनि सुव्यक्तदृश्यमानान्यभूवन्।

तथा शुष्कसर्पसमानाभ्यां बाहुभ्यामुपलक्षितः। बाहुगतमांसशोणितयो-

उन की पसलियां मांस, रक्त के सूख जाने से जुदी-जुदी स्पष्ट दीख पडती थी। उनकी पीठ की हड्डियों का जुडाव तथा अस्थियां, मांस एवं शोणित के अभाव से रुद्राक्षकी माला के मणके की तरह, अथवा बांस की टोकरी की प्रत्येक शलाका-खापटी की तरह, अलग-अलग गिनी जा सकती थीं। उनका वक्षस्थल-छाती-की हड्डियां, मांस, रक्त के अभाव से श्वास लेने तथा छोडने से गङ्गा की तरङ्गों के समान ऊंची-नीची होती हुई स्पष्ट दिखाई देती थीं।

उनकी भुजाएं मांस एवं शोणित के अभाव से अत्यन्त शुष्क हो जाने के कारण केवल हड्डियॉ, चर्म तथा नसों की जालवाली, सूखे

તેમની પાસળીયો માસ અને રકતના સુકાઇ જવાથી જુદી જુદી સ્પષ્ટ દેખાતી હતી તેમના વાસાના (પીઠના) હાડકાઓના સધિ અને હાડકાં જે પ્રકારે રૂદ્રાક્ષની માળાના મણકા જુદા જુદા ગણી શકાય છે અથવા વાસની ટોપલીની પ્રત્યેક ચીર જુદી જુદી ગણી શકાય છે તે જ પ્રકારે માંસ અને શોણિતના અભાવે જુદા જુદા ગણાઇ શકાતા હતા. તેમના વક્ષસ્થલ-છાતી-ના હાડકા માસ તેમ જ રકતના અભાવથી શ્વાસ લેતી વખતે તથા છોડતી વખતે ગંગાના તરંગની માફક ઉંચા નીચા થતા સ્પષ્ટ દેખાતા હતા. તેમની ભુજાઓ માંસ અને રકતના અભાવે અત્યન્ત શુષ્ક થઇ જવાથી કેવળ

रतिशुष्कत्वात्केवलमस्थिचर्मधमनीभिस्तस्य बाहू शुष्कसर्पसमानौ जातौः ।

तथा शिथिलकटालिकाभ्यामिव-शिथिला=श्लथबन्धना कटालिका=अश्वारोहणसाधनपदालम्बनोपकरणं 'पागडा' इति भाषायां, तद्वत् लम्बमानाभ्याम्, अग्रहस्ताभ्यां=बाह्वोरग्रभूताभ्यां कराभ्यां लक्षितः। तस्य करौ तुरङ्गपृष्ठादधोभागे पार्श्वद्वये लम्बमानौ अश्वारोहणसाधनपदालम्बनोपकरणभूताविव जातौ।

तथा कम्पनवातिक इव=कम्पनवातव्याधिसंयुक्त इव वेपमानया=कम्पमानया शीर्षघटया-घटीव शीर्षं शीर्षघटी, तयोपलक्षितः । तीव्रतरतपश्चरणेन मांसशोणितयोः शुष्कतया तस्य शीर्षं लघुघटीसदृशं कम्पनवातव्याधियुक्तपुरुषस्य मस्तकमिव सततं कम्पमानं जातम् । तथा-प्रम्लानवदनकमलः=शुष्कमुखकमलः, तस्य मुखं शुष्ककमलमिव रूक्षं संजातमित्यर्थः । उद्भटघटमुखः-उद्भटं=स्फुटितं घटस्य मुखमिव मुखं यस्य स उद्भटघटमुखः । घटस्योपरि प्रान्तभागमात्रे त्रुटिते सति यथा घटस्य मुखं विरूपं भवति तद्वद् ओष्ठयोर्नितरां शुष्कतया धन्यमुनेर्मुखं विलक्षणं संजातम् ।

हुए सांपों के समान दिखाई देती थीं । उनके हाथों के दोनों पंजे, ढीले बन्धनवाले, दोनों तरफ लटकते हुए घोडे के पागडो के समान दिखाई देते थे । उनका मस्तक तीव्र तपस्या के कारण शोणित एवं मांस के सुख जाने से मिट्टीकी छोटी कलशी के समान हो गया था, एवं कम्पन वातरोगवाले मनुष्य के मस्तक की तरह प्रतिक्षण हिलता- डग डग करता-रहता था ।

उनका मुख-चेहरा, सुखे हुए कमल के समान रूक्ष हो गया था । उनका मुंह, ओंठों के सुखजाने से टूटे हुए मुखवाले घडे के समान विलक्षण हो गया था । उनके दांतों और नेत्र ऊंडे बैठ जाने से गहरी (ऊंडी) कुप्पी के समान हो गये थे ।

હાડકા, ચામડા તથા નસોની જાળ વાળી, સુકેલા સાપોની માફક દેખાતી હતી. તેમના હાથોના બન્ને પંજા, ઢીલા બન્ધનવાળા બન્ને બાજુ લટકતા ઘોડાના પાગડાની માફક દેખાતા હતા તેમનું મસ્તક ઉગ્ર તપશ્ચર્યા ને કારણે શોણિત અને માંસ સુકાઈ જવાથી માટીની ન્હાની લોટિની માફક થઇ ગયુ હતું તેમજ કમ્પવા રોગ વાળા મનુષ્યના મસ્તકની માફક પ્રતિક્ષણ હાલતું ડગ ડગ કરતું-રહેતું હતું.

તેમનું મોઢું સુકેલ કમળની માફક રૂક્ષ થઇ ગયું હતું. તેમનું મોઢું હોઠના સુકાઈ જવાથી તુટેલ મોઢા વાળા ઘડાની માફક વિચિત્ર થઈ ગયેલ હતું તેમનાં બન્ને નેત્રો ઉંડા બેસી જવાથી ઉંડી કુપ્પીની માફક થઇ ગયા હતાં.

तथा उद्बुडितनयनकोश:=अन्तर्निमग्ननेत्रकोश:, गम्भीरकूपिकावत्तस्य नेत्रद्वयं संजातमित्यर्थः ।

स धन्यनामानगारः शरीरदौर्बल्याद् जीवजीवेन=आत्मशक्त्यैव गच्छति=गमनक्रियां करोति नतु शरीरबलेन, जीवजीवेन=आत्मशक्त्यैव तिष्ठति नतु शरीरबलेन। भाषां भाषित्वा ग्लायति=भाषणानन्तरं ग्लानिमाप्नोति। भाषां भाषमाणः सन् ग्लायति=भाषणसमये क्लान्तो भवति। तथा 'भाषां भाषिष्ये' इति ग्लायति='मया भाषितव्यम्' इति कृत्वा कष्टमनुभवति, असौ सर्वामपि क्रियामात्मबलेनैव करोति नतु शरीरबलेनेति भावः एवंरूपोऽसौ धन्यमुनिस्तीव्रतरतपश्चरणेन, शरीरे मांसशोणितयोः परिशुष्कतया, कृशतया, दुर्बलतया, शारीरिक-वाचिक-कार्यकरणाक्षमतया च विहरण-गोचराग्रपर्यटन-प्रतिलेखन-प्रतिक्रमण-वन्दन-स्वाध्याय-ध्यान-कायोत्सर्गादिकं सर्वं कार्यं केवलमात्मनो वीर्यगुणसाहाय्येन सम्पादयति नतु शरीरबलेनेति भावः

इस प्रकारकी शारीरिक अवस्थावाले धन्यकुमार अनगार जीव-मात्र-आत्मबल-सेही चलते, फिरते और खडे रहेते थे; परन्तु शरीर बल से नही वे बोलने के परिश्रम से थक जाते थे, बोलते हुए खेद पाते थे इतना ही नहीं; परन्तु बोलने के विचार मात्रसे कष्ट का अनुभव करते थे अर्थात् उनकी सब क्रियाएं शारीरिक बल के अभाव में आत्मबलपर ही निर्भर थीं। इस पकार उग्र तपसे धन्यकुमार अनगार का शरीर रक्त एवं मांस के अभाव में सर्वथा सूख गया था. उनमें शारीरिक शक्ति सर्वथा नष्ट होगई थी। गोचरी के लिए जाना, वस्त्रों की प्रतिलेखना करना, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, एवं ध्यान, कायोत्सर्ग आदि समस्त कार्य वे केवलआत्मा के वीर्यगुणकी सहायता से ही करते थे।

આ પ્રકારની શારીરિક અવસ્થાવાળા ધન્યકુમાર અણુગાર જીવ માત્ર-આત્મબલથીજ ચાલતા, ફરતા અને ઉભા રહેતા હતા પણ શરીર બલથી નહીં તેઓ બોલવાના પરીશ્રમથી થાકી જતા હતા, બોલતાથકા ખેદ પામતા હતા એટલુંજ નહીં પરન્તુ બોલવાના વિચાર માત્રથી કષ્ટનો અનુભવ કરતા હતા અર્થાત્ તેમની સર્વે ક્રિયાઓ શારીરિક બલના અભાવે આત્મબલ ઉપરજ નિર્ભર હતી. આ પ્રકારે ઉગ્ર તપથી ધન્યકુમાર અણુગારનું શરીર રક્ત, માસના અભાવે સર્વથા સુકાઈ ગયું હતું, તેમનામા શારીરિક શક્તિ જરાય નહતી ગોચરી માટે જવુ, વસ્ત્રોની પડિલેહણા કરવી પ્રતિક્રમણ, અને સ્વાધ્યાય, ધ્યાન, કાયોત્સર્ગ આદિ સર્વે કાર્ય તેઓ કેવળ આત્માના વીર્ય ગુણની સહાયતાથીજ કરતા હતા.

अथास्य शरीरदशां वर्णयति–तद्यथानामकम् – यथा–अङ्गारशकटिका अङ्गारः 'कोयला' इति भाषायां, तैः संभृता शकटिका, शुष्ककाष्ठसंभृतशकटिका, शुष्कपत्रसंभृतशकटिका, शुष्कतिलफलीसंभृतशकटिका, मृण्मयभाण्डसंभृतशकटिका, शुष्कैरण्डकाष्ठसंभृतशकटिका वा गच्छन्ती शब्दायमाना भवति तथैव धन्यमुनेर्गमनागमनोपवेशनादिक्रियायां शरीरे मांसशोणिताभावात्परस्परास्थिसंघर्षणोद्भूतः कटकटेति शब्दः संजायते । यथा स्कन्दकस्तथा=यदा तपश्चरणेन स्कन्दकस्य शरीरं शुष्कं रूक्षं निर्मांसमभूत् । यथा वा–अङ्गारशकटिका–शुष्ककाष्ठशकटिकादिवद्गमनागमनादिक्रियासु शब्दायमानं जातम् तथा धन्यनामानगारस्यापि शरीरमुग्रतपश्चरणेन संजातमित्यर्थः॥

धन्यकुमार अनगार के शरीर का वर्णन दृष्टान्तद्वारा करते हैं–जिस प्रकार कोयलेसे भरी हुई, सूखे काठ से भरी हुई, सूखे हुए पत्तों से भरी हुई, सूखी हुई तिलकी फलियोंसे भरी हुई, मिट्टी के वर्तनोंसे भरी हुई, अथवा सुखी हुई एरण्ड की लकडियों से भरी हुई गाडी को चलते समय आवाज होती है, उसी प्रकार मांस एवं रक्त के सुख जाने से धन्यकुमार अनगार के शरीर में उठते–बैठते, तथा चलते–फिरते समय अस्थियों के संघर्षसे कट कट आवाज होती थी । जिस प्रकार तपश्चर्या से स्कन्दकऋषिका शरीर शुष्क, रूक्ष एवं निर्मांस होने से उनके चलने-फिरने में, कोयला, सूखा काष्ठ अथवा मिट्टीके वर्तनों से भरी हुई गाडी के समान आवाज उत्पन्न होती थी उसी प्रकार धन्यकुमार अनगार के चलने–फिरने में भी कट–कट आवाज होती थीं । जिस प्रकार निर्धूम अग्नि

ધન્યકુમાર અણગારના શરીરનું વર્ણન દૃષ્ટાંતદ્વારા કરે છે—કોલસાથી ભરેલી સુકા લાકડાથી ભરેલી, સુકા પાંદડાથી ભરેલી, સુકા તલસરાથી ભરેલી, માટીના વાસણોથી ભરેલી અથવા સુકા એરંડાના લાકડાથી ભરેલી ગાડી, જેવી રીતે ચાલતાં ચાલતાં અવાજ કરે છે એવી રીતે માંસ તેમજ લોહી સુકાઇ જવાથી ધન્યકુમાર અણગારના શરીરમા ઉઠતાં–બેઠતાં તથા ચાલતાં ફરતાં સમયે હાડકાંના સંઘર્ષથી કટ કટ અવાજ થતો હતો. જેવી રીતે ખંદક ઋષિનું શરીર તપશ્ચર્યાથી શુષ્ક રૂક્ષ તેમજ નિર્માંસ થઇ જવાથી તેઓના ચાલવા ફરવામા કોલસા, સુકા કાષ્ઠ અથવા માટીનાં વાસણોથી ભરેલી ગાડી સમાન અવાજ ઉત્પન્ન થતો હતો તેવી રીતે ધન્યકુમાર અણગારને પણ ચાલતા ફરવામાં કટ–કટ અવાજ થતો હતો. જેવીરીતે નિર્ધૂમ

'यावत्-भस्मराशिप्रतिच्छन्नो हुताशन इवे'-ति, यथा निर्धूमो वह्निरुपरि भागे भस्मना समाच्छादितः सन्नन्तर्देदीप्यमानो भवति तथोपरिभागतः शरीरे शुष्को रूक्षः कान्तिरहितोऽपि धन्यनामानगारः तपसा=तपःप्रभावेण, तेजसा= आत्मनो वीर्यगुणसमुत्कर्षेण, तपस्तेजःश्रिया=तपस्तेजोभ्यां जनितया दीप्त्या उपशोभमानः२=पुनः पुनरन्तर्देदीप्यमानस्तिष्ठति=विराजते ॥ सू० ३८ ॥

संप्रति सर्वमुनिषु धन्यमुनेः प्राधान्यं दर्शयति—'तेणं कालेणं' इत्यादि।

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, परिसा निग्गया, सेणिओ निग्गओ, धम्मकहा, परिसा पडिगया। तए णं से सेणिए राया समणस्स० अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-

इमेसि णं भंते! इंदभूइपामोक्खाणं चोद्दसण्हं समणसाहस्सीणं कयरे अणगारे महादुक्करकारए चेव महानिज्जराए चेव? एवं खलु सेणिया! इमेसिं इंदभूइपामोक्खाणं चोद्दसण्हं समणसाहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्करकारए चेव महानिज्जराए चेव। से केणट्ठे णं भंते! एवं वुच्चइ-इमेसिं जाव साहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्करकारए चेव? महानिज्जराए चेव? एवं खलु सेणिया! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदी नामं

राखसे ढक जाने पर भी अन्दर से देदीप्यमान होती है, उसी प्रकार उग्र तपश्चर्या से उनका शरीर शुष्क रूक्ष एवं कान्ति रहित हो जानेपर भी तप से उत्पन्न आत्मवीर्य गुणों की उत्कर्षता तथा तप-तेज की कान्ति से अपूर्व देदीप्यमान हो गया था ॥ सू० ३८ ॥

અગ્નિ રાખથી ઢંકાઈ જવા છતા અન્દરથી દેદીપ્યમાન હોય છે તેવી રીતે ઉગ્ર તપશ્ચર્યાથી તેમનું શરીર શુષ્ક-રૂક્ષ તેમજ કાન્તિ રહિત થઈ જવા છતાં પણ તપથી ઉત્પન્ન આત્મ વીર્ય ગુણોથી ઉત્કર્ષતા તથા તપ તેજથી અપૂર્વ શોભા યુક્ત દેખાતું હતું (સૂ૦ ૩૮)

नयरी होत्था, उप्पिं पासायवडिंसए विहरइ। तए णं अहं अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्वीए चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव काकंदी नयरी जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागए, अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं जाव विहरामि, परिसा निग्गया, तहेव जाव पव्वइए जाव बिलमिव जाव आहारेइ, धण्णस्स णं अणगारस्स पायाणं सरीरवण्णओ सव्वो जाव उवसोभेमाणे२ चिट्ठइ, से तेणट्ठेणं सेणिया! एवं वुच्चइ इमेसिं चोद्दसण्हं समणसाहस्सीणं धण्णे अणगारे महादुक्करकारए चेव महानिज्जराए चेव।

तए णं से सेणिए राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महा; वीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव धण्णे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिणं-पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी- धण्णे सि णं तुमं देवाणुप्पिया! सुपुण्णे सुकयत्थे सुकयलक्खणे, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले-त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥ सू० ३९ ॥

छाया-तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरं, गुणशिलकं चैत्यं, श्रेणिको राजा। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः

समवसृतः। परिपन्निर्गता। श्रेणिको निर्गतः। धर्मकथा। परिषत् प्रतिगता ततः खलु स श्रेणिको राजा श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा, एवमवादीत्–

एषां भदन्त! इन्द्रभूतिप्रमुखानां चतुर्दशानां श्रमणसाहस्रीणां कतमोऽनगारो महादुष्करकारकश्चैव महानिर्जराकश्चैव। एवं खलु श्रेणिक! एषामिन्द्रभूतिप्रमुखानां चतुर्दशानां श्रमणसाहस्रीणां धन्योऽनगारो महादुष्करकारकश्चैव महानिर्जराकश्चैव। तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते–एषां यावत्साहस्रीणां धन्योऽनगारो महादुष्करकारकश्चैव महानिर्जराकश्चैव। एवं खलु श्रेणिक! तस्मिन् काले तस्मिन् समये काकन्दी नाम नगर्यभवत्, उपरि प्रासादावतंसके विहरति। ततोऽहमन्यदा कदाचित् पूर्वानुपूर्व्या चरन्, ग्रामानुग्रामं द्रवन् यत्रैव काकन्दी नगरी, यत्रैव सहस्राम्रवणमुद्यानं तत्रैवोपागतः, यथा प्रतिरूपमवग्रहमवगृह्य संयमेन यावद् विहरामि। परिपन्निर्गता, तथैव यावत् उपशोभमान उपशोभमानस्तिष्ठति, तत्तेनार्थेन श्रेणिक! एवमुच्यते - एषां चतुर्दशानां श्रमणसाहस्रीणां धन्योऽनगारो महादुष्करकारकश्चैव महानिर्जराकश्चैव।

ततः श्रेणिको राजा श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट० श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिःकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणां करोति, कृत्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा यत्रैव धन्योऽनगारस्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य धन्यमनगारं त्रिःकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणां करोति, कृत्वा वन्दते नमस्करोति, वन्दित्वा नमस्कृत्य एवमवादीत्–धन्योऽसि त्वं देवानुप्रिय! सुपुण्यः, सुकृतार्थः, सुकृतलक्षणः, सुलब्धो देवानुप्रिय! त्वया मानुष्यकं जन्मजीवितफलम्, इति कृत्वा वन्दते नमस्करोति, वन्दित्वा नमस्कृत्य यत्रैव श्रमणो भगवान् महावीरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिःकृत्वो वन्दते नमस्करोति, वन्दित्वा नमस्कृत्य यस्या दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः ॥सू० ३९॥

टीका–'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये राज-

अब यहाँ समस्त मुनियोंमें धन्यमुनिकी मुख्यता बताई जाती है–' तेणं कालेणं ' इत्यादि।

उस काल उस समय में राजगृह नामक नगर और गुण-

હવે અહિં સર્વે મુનિઓમા ધન્ય મુનિની મુખ્યતા બતાવવામા આવે છે– 'तेणं कालेणं' ઇત્યાદિ.

તે કાળ તે સમયમા રાજગૃહ નામે નગર અને ગુણશિલક નામે ચૈત્ય (ઉદ્યાન)

गृहं नगरं, गुणशिलं चैत्यं, श्रेणिको राजा प्राज्यं राज्यं कुर्वन्नासीत् । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरः काकन्दीनगरीतः प्रतिनिष्क्रम्य ग्रामानुग्रामं विहरन् तत्र गुणशिलकचैत्ये समवसृतः । तत्रेन्द्रभूत्यादिगणधरः सह धन्यनामानगारोऽपि घोरं तपश्चरन्नग्लानः पादचारेण विहरन् समागतः । भगवन्तं वन्दितुं परिषद् राजगृहनगरतो निर्गता । श्री महावीरस्य भगवतः समीपमागत्य सविधि वन्दनं विधाय समुपस्थिता ।

श्रेणिको राजापि चतुरङ्गसेनासमन्वितः स्वपरिवारपरिवृतो निर्गतः । पञ्चाभिगमपुरस्सरं भगवतः समीपमागत्य सविधिवन्दनं विधाय नातिदूरे नातिसमीपे समुपविष्टः । भगवता धर्मकथा कथिता । प्रसन्नचेतसा परिषत् प्रतिगतान्स्वस्थानं प्रतिजगाम ।

शिलक नामक चैत्य था । वहाँ श्रेणिक राजा राज्य करता था । उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर काकन्दी नगरी से विहार कर ग्रामानुग्राम विचरते हुए राजगृह नगर के गुणशिल-नामक उद्यान में पधारे । वहाँ इन्द्रभूति (गौतम) आदि ग्यारह गणधर के साथ धन्य नामक अनगार भी घोर तपश्चर्या करते हुए ग्लान - भाव - विना पैदल विहार करते हुए आये । भगवान को वन्दन तथा नमस्कार करने के लिए राजगृह से परिषद् निकली और भगवान् के समीप आकर विधि-युक्त वन्दन-नमस्कार कर अपने २ स्थान पर बैठ गई ।

सम्राट् श्रेणिक भी चतुरङ्गिणी सेना तथा समस्त राज परिवार के साथ भगवान् को वन्दन करने के लिए निकला, और जहां भगवान्

હતુ શ્રેણિક રાજા રાજ્ય કરતા હતા તે કાળ તે સમયમાં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર કાકન્દી નગરીથી વિહાર કરી એક ગામથી બીજે ગામ એમ ગ્રામાનુગ્રામ વિચરતા રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ઉદ્યાનમા પધાર્યા ત્યાં ગૌતમ આદિ અગ્યાર ગણધરોની સાથે ધન્ય-નામે અણગાર પણ ઉગ્ર તપશ્ચર્યા કરતા થકા ગ્લાન-ભાવ વિના, પગે વિહાર કરતા આવ્યા ભગવાનને વન્દન તથા નમસ્કાર કરવા રાજગૃહથી પરિષદ નિકળી અને ભગવાનની સેવામા ઉપસ્થિત થઇ, વિધિયુકત વન્દન-નમસ્કાર કરી પોત-પોતાના સ્થળે બેસી ગઇ.

સમ્રાટ શ્રેણિક પણ ચતુરંગિણી સેના તથા સમસ્ત રાજપરિવાર સાથે ભગવાનને

श्रेणिको राजा भगवतः सकाशाद्धर्मकथां श्रुत्वा निशम्य=हृदि निधाय पुनः पुनरचिन्तयत्-साधूनां वायुकायजीवसंपातिमजीवरक्षणार्थं मुनिवेषरूपं मुखोपरि सदोरकमुखवस्त्रिकाबन्धनं, पञ्चमहाव्रतपालनं, षड्जीवनिकायरक्षणं, कृपाणधारोपमं नवविधब्रह्मचर्यगुप्तिधारणं, सप्तदशविधसंयमपरिपालनं, द्वाविंशतिपरीषहसहनं, विशुद्धाहारेण संयमयात्रानिर्वहणं, द्विपञ्चाशदनाचीर्णवर्जनं, समितिगुप्तिसमाराधनम्, उग्रविहरणं, नानाविधान्तप्रान्ताहारग्रहणम्, अभिग्रहपूर्वकघोरतरतपश्चरणं, दुष्करचारित्रचरणं च सर्वमेवेदं भगवत्कथितं दुष्करमिति ।

विराजते थे वहाँ पांच-अभिगमपूर्वक आया तथा वन्दन-नमस्कार कर यथास्थान मर्यादानुसार बैठा। भगवान् ने धर्म-कथा कही। धर्म-कथा सुनकर प्रसन्न चित्तसे सारी जनता अपने२ स्थान पर चली गई ।

राजा श्रेणिक भगवान् से धर्म कथा सुनकर, तथा हृदय में धारण कर इस प्रकार बार २ विचार करने लगा—

वायुकायिक और सम्पातिम जीवों की रक्षा के लिए तथा मुनित्व के चिह्नस्वरूप डोरे सहित मुखवस्त्रिका का मुखपर बांधना पॅाच महाव्रतोंका पालन करना, छः जीवनिकाय के जीवों की रक्षा करना, तलवार की तीक्ष्ण धारपर चलने के समान नववाड सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन करना, सत्रह प्रकार के संयमका पालन करना, बाईस परीषहों का सहन करना, विशुद्ध आहार लेकर संयमयात्रा का निर्वाह करना, बावन अनाचीर्णों का निवारण करना, पांच समिति तथा तीन गुप्ति की आराधना करना, उग्र विहार करना, नानाविध

वन्दन કરવા નિકળ્યા અને જ્યા ભગવાન વિરાજમાન હતા ત્યા પચાભિગમપૂર્વક આવ્યા તથા વન્દન નમસ્કાર કરી યથાસ્થાન મર્યાદાપૂર્વક બેઠા ભગવાને ધર્મકથા કહી. ધર્મકથા સાભળી પ્રસન્નચિત્તે સમસ્ત જનતા પોતપોતાને સ્થાને ચાલી ગઇ રાજા શ્રેણિક ભગવાનથી ધર્મ-કથા સાભળી તથા સાચા હૃદયથી ધારણ કરી આ પ્રમાણે વારવાર વિચાર કરવા લાગ્યા

વાયુ-કાયિક જીવ તથા સપાતિમજીવોની રક્ષા માટે, અને મુનિ-પણાના ચિન્હ સ્વરૂપ ડોરાસહિત મુખવસ્ત્રિકાનું મુખપર બાધવું પાંચ મહાવ્રતોનુ પાલન કરવું, છકાય જીવોની રક્ષા કરવી, તલવારની તીક્ષ્ણ ધાર પર ચાલવા માફક નવવાડ સહિત શુદ્ધ બ્રહ્મચર્યનુ પાલન કરવુ, સત્તર (૧૭) પ્રકારના સયમનુ પાલન કરવું, બાવીસ પરી-ષહોનું સહન કરવુ, વિશુદ્ધ આહાર-પાણી લઇ સયમ-યાત્રાનો નિર્વાહ કરવો, બાવન અનાચીર્ણોનુ નિવારણ કરવું, પાંચ-સમિતિ તથા ત્રણ ગુપ્તિની આરાધના કરવી, ઉગ્રથી

एवं श्रेणिको राजा स्वमनसि स्मारं-स्मारं भगवन्तं श्रीमहावीरं प्रणम्य एवं=वक्ष्यमाणमवादीत्-हे भगवन् ! इन्द्रभूत्यादीनां चतुर्दशसहस्रमुनिपुङ्गवानां मध्ये कतमोऽनगारो महादुष्करकारकः=उग्रतपःसंयमाराधकः, महानिर्जराकः= कर्मणां महानिर्जराकारको विद्यते ? ।

श्रेणिकस्य वचनं श्रुत्वा भगवान् जगाद-

हे श्रेणिक ! एषामिन्द्रभूत्यादीनां चतुर्दशसहस्राणां श्रमणानां मध्ये एक एव धन्यनामाऽनगारो महादुष्करतपःसंयमाराधकः कर्मणां महानिर्जराकारकोऽस्ति।

अन्त-प्रान्त आहार का करना तथा नाना प्रकार के अभिग्रहपूर्वक बाह्य-आभ्यन्तर उग्र तपका करना, दुष्कर चारित्र का पालन करना आदि समस्त कार्य भगवान् के द्वारा महा दुष्कर कहे गये हैं।

इस प्रकार बार २ इन कार्योंकी कठिनता को विचारता हुआ तथा सोचता हुआ श्रेणिक राजा भगवान् को वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार बोला-हे भगवन् ! गौतम आदि इन चौदह हजार अनगारो में कौन से अनगार संयम में महादुष्कर करणी करनेवाले तथा कर्मों की महा निर्जरा करनेवाले हैं ?

राजा श्रेणिकके प्रश्न को सुनकर भगवान् इस प्रकार बोले-

हे श्रेणिक ! इन गौतम आदि चौद हजार श्रमणों में एक धन्यकुमार अनगार ही महादुष्कर तप-संयम का आराधन करनेवाला तथा कर्मों की महानिर्जरा करनेवाला है ।

ચાલીને ઉગ્ર વિહાર કરવો, અનેક જાતના અંતપ્રાંત આહારનું સેવન કરવું, અનેક પ્રકારના અભિગ્રહપૂર્વક બાહ્ય આભ્યન્તર ઉગ્ર તપશ્ચર્યા કરવી, દુષ્કર ચારિત્રનું પાલન કરવુ આદિ સર્વે કાર્ય ભગવાને દુષ્કર કહ્યા છે

એ રીતે વારંવાર આ કાર્યોની કઠિનતાનો વિચાર અને મનન કરતા શ્રેણિકરાજા ભગવાનને વન્દન નમસ્કાર કરી આ પ્રમાણે બોલ્યા-હે ભગવન્ ! ગૌતમઆદિ આ ચૌદ હજાર અણગારોમા કયા અણગાર સંજમમાં મહાદુષ્કર કરણી કરવાવાળા તથા કર્મોની મહાનિર્જરા કરવાવાળા છે ?

રાજા શ્રેણિકના પ્રશ્નને સાભળી ભગવાન આ પ્રમાણે બોલ્યા-

હે શ્રેણિક ! આ ગૌતમ આદિ ચૌદ હજાર શ્રમણોમાં એક ધન્યકુમાર અણગારજ મહા દુષ્કર તપસંયમના આરાધન કરવાવાળા તથા કર્મોની મહાનિર્જરા કરવાવાળા છે.

श्रेणिकः पुनरुवाच—भदन्त !=हे भगवन् ! केनार्थेन=केन कारणेन एवमुच्यते—एतेषां चतुर्दशसहस्राणां श्रमणानां मध्ये एक एव धन्योऽनगारो महादुष्करकारको महानिर्जराकारकश्चेति ? ।

श्रीभगवान् महावीरः पुनः प्रोवाच—हे श्रेणिक ! एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण तस्मिन् काले तस्मिन् समये काकन्दी नाम नगरी आसीत् । तत्र धन्यकुमारः प्रासादावतंसके=राजभवनतुल्ये श्रेष्ठप्रासादे उपरिभागे विहरति स्म । ततः= तदाऽहं कदाचिदन्यस्मिन् समये पूर्वानुपूर्व्या=अनुक्रमेण ग्रामानुग्रामम्=एकस्माद्ग्रामाद्ग्रामान्तरं विहरन् काकन्दीनामनगर्याः सहस्राम्रवणनामकोद्याने उपागतः। यथाप्रतिरूपमवग्रहमुपादाय तपःसंयमाभ्यां स्वात्मानं भावयन् यावत् तत्र विहरामि, तदा परिषद् निर्गता=धर्मकथाश्रवणार्थं काकन्दीनगरीतो निर्गता सती

भगवान् द्वारा प्रश्न के प्रत्युत्तर को सुनकर राजा श्रेणिकने पुनः पूछाः— हे भगवन् ! किस कारण से आप धन्यकुमार अनगार को गौतम आदि समस्त चौदह हजार मुनियों में महादुष्कर करणी करनेवाले तथा कर्मोंकी महानिर्जरा करनेवाले कहते हैं ।

भगवान्ने कहा—हे श्रेणिक ! उस काल उस समय में काकन्दी नामक नगरी थी । वहाँ धन्यकुमार, राजमहल के समान – श्रेष्ठ भवन के ऊपरी भाग पर पांचों इन्द्रियों का विषयसुख भोगता हुआ रहता था । उस समय, मैं एक बार ग्रामानुग्राम विचरता हुआ काकन्दी नगरी के सहस्राम्र–वन नामक उद्यान में आया । वहाँ विधि अनुसार अवग्रह ग्रहण कर तप – संयम–पूर्वक आत्मचिन्तन करता हुआ रहने लगा । उस समय धर्मकथा सुनने के लिए काकन्दी–नगरी–निवासी परिषद् सहस्राम्रवन में उपस्थित हुई । उसी प्रकार

ભગવાન–દ્વારા પ્રશ્નનો પ્રત્યુત્તર સાંભળી રાજા શ્રેણિકે ફરીથી પૂછ્યુ –હે ભગવન ! શા કારણે આપ ધન્યકુમાર અણગારને ગૌતમ આદિ સમસ્ત ચૌદ હજાર મુનિયોમા મહાદુષ્કર-કરણી-કરવાવાળા તથા કર્મોની મહાનિર્જરા કરવાવાળા કહો છો ?

ભગવાને કહ્યુ હે શ્રેણિક ! તે કાળ તે સમયમા કાકન્દી નામની નગરી હતી ત્યાં ધન્યકુમાર રાજમહેલ સમાન શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદના ઉપરના ભાગ પર પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયસુખ ભોગવતા થકા રહેતા હતા તે સમયમા એકવાર ગ્રામાનુગ્રામ વિચરતો થકો હું કાકન્દી નગરીના સહસ્રામ્રવન નામના ઉદ્યાનમા આવ્યો ત્યા વિધિ–અનુસારે અવગ્રહ ગ્રહણ કરી તપ–સંયમ–પૂર્વક આત્મચિન્તન કરતો થકો રહેવા લાગ્યો તે સમયે ધર્મકથા સાભળવા કાકન્દી નગરી ની પરિષદ સહસ્રામ્ર વનમાં આવી તેજ રીતે ધન્ય-

सहस्राम्रवणनामकोद्याने समागता । तथैव धन्यकुमारोऽपि पादचारेण तत्र समागतः । मया धर्मकथा कथिता । धर्मकथाश्रवणेन धन्यकुमारस्तीव्रवैराग्यमुपगतः सपद्येव कामभोगान् परित्यज्य प्रव्रज्यां गृहीतवान् ।

तदारभ्य कठोरतपश्चर्याव्रतं दधार । केवलमाचामाम्लेनैव पारणं षष्ट-षष्ठतपसः कुर्वन् विहरति । घोरतरतपश्चरणेन धन्यनाम्नोऽनगारस्य चरणाभ्यां शिरःपर्यन्तं समग्रमेव शरीरं शुष्कं रूक्षं निर्मांसं भूत्र । भस्मच्छन्नवह्निरिव बहिः शुष्को रूक्षः कान्तिरहितोऽपि धन्यनामानगारस्तपस्तेजःश्रियाऽन्तर्देदीप्यमानो विराजते । हे श्रेणिक ! अनेनैव कारणेन मया कथितं-चतुर्दशसहस्रश्रमणेषु धन्य-नामानगार एव महातपस्वी महादुष्करकारकः कर्मणां महानिर्जराकारकश्च विद्यते इति ।

धन्यकुमार भी पैदल चल कर वहाँ आया । मैने धर्मकथा कही । धर्म-कथा सुनने से धन्यकुमार को संसार से तीव्र वैराग्य उत्पन्न हुआ । तदनन्तर उसने शीघ्रही समस्त काम-भोगों का परित्याग कर दीक्षा अङ्गीकार की, दीक्षा लेने के पश्चात् उसी दिन से उसने कठिन तपश्चर्या-व्रत धारण किया । वेले २ के पारणे में केवल आयंबिल करता है ।

घोर तपश्चर्या के कारण शिर से लेकर पाँव तक उनका सारा शरीर शुष्क, रूक्ष एवं निर्मांस हो गया, फिर भी राख से ढकी हुई अग्नि के समान वह तप-तेज द्वारा अन्तरात्मासे अत्यन्त देदी-प्यमान है । हे श्रेणिक ! इसी कारण से मैंने कहा कि इन गौतम आदि चौदह हजार श्रमणों में एक धन्यकुमार अनगार ही महा- तपस्वी महादुष्कर करणी करनेवाला तथा कर्मों की महानिर्जरा करने-वाला है ।

કુમાર પણ પગે ચાલી ત્યાં આવ્યા મે ધર્મકથા કહી. ધર્મકથા સાંભળવાથી ધન્યકુમારને સંસારથી તીવ્ર વૈરાગ્ય ઉત્પન્ન થયો તે પછી તેણે તરતજ સર્વે કામભોગને છોડી દીક્ષા ગ્રહણ કરી દીક્ષા લીધી તે દિવસથીજ તેણે કઠિન તપશ્ચર્યા ધારણ કરી, છઠ છઠના પારણામાં ફકત આયમ્બિલ કરે છે

ઉગ્ર તપશ્ચર્યાને કારણે માથાથી લઇ પગ સુધી તેમનું આખું શરીર શુષ્ક, રૂક્ષ તેમજ નિર્માંસ થઇ ગયું છતાં પણ તે તપ તેજદ્વારા અન્તરાત્માથી અત્યન્ત દેદીપ્યમાનછે.

હે શ્રેણિક ! એ કારણેજ મે કહ્યું કે આ ગૌતમાદિ ચૌદ હજાર શ્રમણોમાં એક ધન્યકુમાર અણુગારજ મહાતપસ્વી મહાદુષ્કર કરણી કરવાવાળો તથા કર્મોની મહાનિર્જરા કરવાવાળો છે.

इत्थं श्रीमहावीरस्य भगवतो वचनं निशम्य पुनःपुनः स्मृत्वा श्रेणिको राजा हृष्टतुष्टः सन् श्रीभगवन्तं महावीरस्वामिनं त्रिवारमादक्षिणप्रदक्षिणां कृत्वा वन्दित्वा नमस्कृत्य च मुनिवृन्दमध्ये विराजमानस्य धन्यनाम्नोऽनगारस्य समीपमाजगाम।

यत्र मुनिवृन्दे धन्यनामानगार आसीत्तत्र भगवतो बहवोऽनगारा एवमासन्--

एके आचारधरा यावद् विपाकश्रुतधराः स्थले स्थले समूहरूपेण तत्त्वचिन्तनपराः समुपविष्टाः। एके प्रतिपृच्छकाः=प्रश्नोत्तरकारकाः। एके परिवर्तकाः=सूत्रपाठस्य मुहुर्मुहुः परिगुणनकारिणः। एके अनुप्रेक्षकाः=सूत्रार्थानुचिन्तकाः। एके धर्मकथकाः। एके ऊर्ध्वजान्वधःशिरसो ध्यानकोष्ठोपगताः=एकाग्रीकृतेन्द्रि-

इस प्रकार भगवान् के वचनों को सुनकर तथा उन को बार-बार स्मरणकर राजा श्रेणिक का हृदय प्रसन्नता से हृष्ट तुष्ट हो गया। भगवान को तीनवार प्रदक्षिणा - पूर्वक वन्दन नमस्कार कर वह धन्यकुमार अनगार के पास गया, जहाँ वे अनेक मुनियों के मध्य में विराजमान थे।

जहाँ धन्यकुमार अनगार विराजमान थे वहाँ भगवान के अन्य अनेक मुनि भी इस प्रकार विराजे हुए थे—

कहीं आचाराङ्ग से लेकर विपाकसूत्र-पर्यन्त ग्यारह अङ्गों के ज्ञाता मुनिराज समूह रूप में बैठे हुए तत्व चिन्तवन कर रहे थे, तो कितनेक शास्त्र-सम्बन्धी प्रश्नोत्तर करनेवाले, कितनेक सूत्र-पाठ की बार २ आवृत्ति (स्वाध्याय) करनेवाले, कितनेक सूत्र के अर्थ का चिन्तवन करनेवाले, कितनेक धर्म-कथा कहने वाले, कितनेक अपने

આ પ્રકારે ભગવાનના વચનો સાભળી તથા તેને વારે વારે સ્મરણ કરી રાજા શ્રેણિકનુ હૃદય પ્રસન્નતાથી હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઇ ગયુ, અને ભગવાનને ત્રણવાર પ્રદક્ષિણા-પૂર્વક વન્દન નમસ્કાર કરીને ધન્યકુમાર અણગારની પાસે ગયા, જ્યાં તેઓ અનેક મુનિયોની વચ્ચે વિરાજમાન હતા જ્યાં ધન્યકુમાર અણગાર વિરાજતા હતા ત્યાં ભગવાનના બીજા પણ અનેક મુનિઓ આ પ્રમાણે વિરાજતા હતા-

કયાક આચારાંગથી લઇ વિપાકસૂત્ર પર્યન્ત અગ્યાર અંગના જાણનાર મુનિરાજ સમૂહરૂપમા બેસી તત્વ-ચિન્તવન કરી રહ્યા હતા, તો કેટલાક શાસ્ત્ર-સમ્બન્ધી પ્રશ્નોત્તર કરવાવાળા, કેટલાક સૂત્ર-પાઠનો વાર વાર સ્વાધ્યાય કરવાવાળા, કેટલાક સૂત્રના અર્થનુ ચિન્તવન કરવાવાળા, કેટલાક ધર્મકથા કહેવાવાળા, કેટલાક પોતાના

यान्तःकरणवृत्तयः। एके संसारभयोद्विग्नाः=जन्ममरणभीताः। केचिद्गम्भीराः। केचिन्मासार्द्धमासपर्यायकाः। एके द्विमासपर्यायकाः। एके त्रिषडष्टादिमास पर्यायकाः। एवमेक-द्वि-त्रिवर्षपर्यायका यावद्विंशत्यादिबहुवर्षपर्यायकाः स्थविराः। केचिदाभिनिबोधिकधराः। एके श्रुतधराः। केचिदवधिमनःपर्ययधराः। एके केवलज्ञानकेवलदर्शनधराः। एके मनोबलिनः। एके वचोबलिनः। एके कायबलिनः। केचिदामर्शौषधि-विप्रुडौषधि-खेलौषधिप्रभृतिलब्धिधराः। एके संभिन्न श्रोताःक्षीरास्रवाऽक्षीणमहानसादिनानाविधलब्धिधारिणः। केचिदेकमासिकतपो-

घुटनों को खडे रखकर तथा मस्तक को नीचे झुकाकर इन्द्रियों की व मन की वृत्ति को रोककर ध्यानस्थ थे, कितनेक संसार के भयसे अत्यन्त व्याकुल अर्थात् जन्म–मरण से डरे हुए, कितनेक अत्यन्त गम्भीर प्रकृतिवाले, कितनेक पन्द्रह दिनकी दीक्षापर्याय वाले, कितनेक एक मासकी दीक्षापर्याय वाले, कितनेक दो मासकी दीक्षा-पर्याय वाले, कितनेक तीन, छह, आठ मास की दीक्षापर्याय वाले, एवं एक, दो, पाँच, सात, ग्यारह, पन्द्रह, वीस वर्ष की व इससे भी अधिक दीक्षापर्याय वाले स्थविर थे, कितनेक मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्ययज्ञान, केवलज्ञान तथा केवलदर्शन धारक थे, कितनेक मनोवली, कितनेक वचनवली, कितनेक कायवली, और कितनेक आमोसहि, विप्पोसहि, खेलोसहि, आदि लब्धियों के धारक थे, तथा कितनेक संभिन्नश्रोता, क्षीरास्त्रव, अक्षीणमहानस आदिनानाविध लब्धियों के धारक थे, कितनेक एक मासकी तपस्या

ઢીંચણુ ઉંચા રાખી મસ્તક નીચું નમાવી ઇન્દ્રિયો અને મનની વૃત્તિયોને દબાવી ધ્યાનસ્થ હતા, કેટલાક સંસારના ભયથી અત્યન્ત વ્યાકુલ અર્થાત્ જન્મ–મરણથી ભય પામેલ, કેટલાક અત્યન્ત ગંભીર–પ્રકૃતિ–વાળા, કેટલાક પંદર દિવસની દીક્ષા-પર્યાયવાળા, કેટલાક એક માસની દીક્ષાપર્યાયવાળા, કેટલાક બે માસની દીક્ષાપર્યાયવાળા, કેટલાક ત્રણ, છ, આઠ, માસની દીક્ષાપર્યાયવાળા, એમ એક, બે, પાંચ, સાત, અગ્યાર, પન્દર, વીસ વર્ષની તથા એથી પણ અધિક દીક્ષાપર્યાયવાળા સ્થવિરો હતા, કેટલાક મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન, મન.પર્યયજ્ઞાન, કેવળજ્ઞાન તથા કેવળદર્શનના ધારક હતા. કેટલાક મનોબળી, કેટલાક વચનબળી, કેટલાક કાયબળી અને કેટલાક આમો-સહિ, વિપ્પોસહિ, ખેલોસહિ, આદિ લબ્ધિયોના ધારક હતા કેટલાક સંભિન્ન શ્રોતા, ક્ષીરાસ્રવ, અક્ષીણુ મહાનસ આદિ અનેક જાતની લબ્ધિયોના ધારક હતા. કેટલાક

धराः । एके द्विमासिकतपोधराः । एवं त्रैमासिक-यावत्षाण्मासिकतपोधराः । सर्वेऽनगाराः प्रमाणोपेतवस्त्रपात्ररजोहरणप्रमार्जिकासमन्विताः षड्जीवनिकायरक्षिणो मुखेन्दुराजत्सदोरकाष्टपुटमुखवस्त्रिकाधारिणस्तत्र गुणशिलकोद्याने राजहंसा इव मानससरोवरे विरेजुः ।

तेषां मध्ये धन्यनामानगारः, उदारेण, विपुलेन, प्रदत्तेन, प्रगृहीतेन, कल्याणेन, शिवेन, मङ्गलेन, सश्रीकेण, उदग्रेण, उदात्तेन, उत्तमेन, महानुभागेन तपः

करनेवाले, कितनेक दो मासको तपस्या करनेवाले, कितनेक तीन मास से लेकर छः मास तककी तपस्या करनेवाले आदि थे ।

षड्जीवनिकाय के रक्षक सभी अनगार प्रमाणोपेत (जितने नियमानुसार चाहिये उतने) वस्त्र, पात्र, रजोहरण, पूंजनी (गोच्छा) आदि संयम-रक्षा के साधनों से युक्त थे। चन्द्र-समान मुखपर डोरे सहित आठ पुटवाली मुखवस्त्रिका धारण करनेवाले सभी अनगार जिस प्रकार मानसरोवर पर राजहंस शोभते हैं उसी प्रकार गुणशिलक उद्यान में सुशोभित थे ।

उन मुनियों के बीच में राजा श्रेणिकने धन्य नामा अनगार को इस प्रकार देखा जो उदार, विशाल, अनुज्ञात, उत्कृष्ट-भाव से गृहीत, कल्याणकारी, कर्मोपद्रव के नाश करनेवाले, मङ्गलमय, मोक्ष-लक्ष्मी को देनेवाले, उदग्र (उत्तरोत्तर विकासवाले), उदात्त (उन्नत भाववाले), श्रेष्ठ, महानुभाग-आत्माकी उच्च दशा को प्रकट करनेवाले

એક માસની તપસ્યા કરવાવાળા, કેટલાક બે માસની તપસ્યા કરવાવાળા, કેટલાક ત્રણ માસથી લઈ છ માસ સુધી તપસ્યા કરવાવાળા આદિ હતા

છ જીવનિકાયના રક્ષક સર્વે અણગાર પ્રમાણોપેત (જેટલા નિયમાનુસાર જોઈયે તેટલા) વસ્ત્ર, પાત્ર, રજોહરણ, ગોચ્છા આદિ સંયમરક્ષાના સાધનોથી યુક્ત હતા ચન્દ્ર સમાન મુખ ઉપર ડોરા-સહિત આઠ પુટવાળી મુખવસ્ત્રિકા ધારણ કરવાવાળા તે સર્વે અણગાર જેવી રીતે માનસરોવર ઉપર રાજહંસ શોભે છે તેવી રીતે ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં શોભતા હતા.

તે મુનિયોની વચ્ચે રાજા શ્રેણિકે ધન્યકુમાર અણગારને આ પ્રમાણે દેખ્યા. જે ઉદાર, વિશાળ, આજ્ઞાપ્રાપ્ત, ઉત્કૃષ્ટભાવથી ગૃહીત, કલ્યાણકારી, કર્મોપદ્રવનો નાશ કરવાવાળા, મંગળમય, મોક્ષલક્ષ્મીને દેવાવાળા, ઉદગ્ર-ઉત્તરોત્તર વિકાસવાળા, ઉદાત્ત-ઉન્નતભાવવાળા, શ્રેષ્ઠ, મહાનુભાગ- આત્માની ઉચ્ચ દશાને પ્રગટ કરવાવાળા, આવા

कर्मणा शुष्को रूक्षो निर्मांसोऽस्थिचर्मावनद्धः=अस्थिसमाश्लिष्टचर्मा, किटिकिटि-भूतः=गमनोपवेशनादौ शब्दायमानास्थिपञ्जरः कृशो धमनीसन्ततः= शिराजाल-व्याप्तोऽन्तस्तपस्तेजःश्रिया देदीप्यमानः श्रेणिकेन राज्ञा ददृशे। उपागत्य=समीप-मागत्य धन्यनाम्नोऽनगारस्य त्रिकृत्वः=त्रिवारम् आदक्षिणप्रदक्षिणां कृत्वा श्रेणिको राजा तं वन्दते=ववन्दे नमस्यति=ननमस्कार। वन्दित्वा नत्वा च श्रेणिको राजा एवमवादीत्-

हे देवानुप्रिय! त्वं धन्योऽसि, देवैरपि प्रशंसनीयोऽसि, सुपुण्योऽसि= सम्यक् पुण्यं कर्म कृतवानसि, येनोग्रतरतपःसंयमावचिरेणैव समाराधितौ। कृतार्थोऽसि=सम्यक्संपादितस्वात्मकल्याणोऽसि, सुकृतलक्षणोऽसि=सम्यगारा-

---

इस प्रकारके तपसे सूखे रूखे हो गये थे। उनका शरीर केवल अस्थि-चर्म-मात्र रह गया था,। तथा जिन के उठने-बैठने से अस्थियों का किट-किट आवाज होता था। वे इतने कृश-पतले-हो गये थे कि उनका शरीर शिराजाल-मात्र ही दिखाई देता था। इतना सब होनेपर भी वे तप से प्रादुर्भूत आत्मिक-कान्ति से देदीप्यमान तथा तेजपुञ्ज जैसे दिखाई देते थे,।

उन के समीप आकर राजा श्रेणिक तीनवार प्रदक्षिणापूर्वक उन को वन्दन तथा नमस्कार कर इस प्रकार बोला—

हे देवानुप्रिय! आप धन्य हैं। देवताओं के द्वारा भी प्रशंसनीय हैं। आप महापुण्यशाली हैं, क्योंकि आपने शीघ्र ही संयम तथा तप की आराधना करली है। आप कृतार्थ हैं, क्यों कि आपने अपनी आत्मा का कल्याण कर लिया है। आप सुकृतलक्षण हैं,

---

तपथी शुष्क रुक्ष थई गया हता. तेमनुं शरीर केवळ हाडचाम-मात्र रही गयुं हतुं. तथा जेना बेसवा-उठवाथी हाडकाओनो कडकड अवाज थतो हतो. ते एटला कृश पातळा थई गया हता के तेमनुं शरीर नसाजाल मात्र देखातुं हतुं. ए बधुं होवा छतां पण ते तपथी प्रगटेल अद्‌भुत आत्म-कान्तिथी देदीप्यमान तथा तेजपुंज जेवा देखाता हता.

तेमनी समीपे आवीने राजा श्रेणिक त्रणवार प्रदक्षिणापूर्वक तेओने वन्दन तथा नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्या—

हे देवानुप्रिय! आप धन्य छो. देवताओद्वारा पण प्रशंसनीय छो आप महापुण्यशाळी छो; केमके आपे तरतज संयम तथा तपनी आराधना करी लीधी छे. आप कृतार्थ छो, केमके आपे आपनी आत्मानुं कल्याण करी लीधुं छे आप

थितचरित्रोऽसि, हे देवानुप्रिय ! मानुष्यकं जन्मजीवितफलं त्वया सुलब्धम्, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा वन्दते=स्तुतिं करोति, नमस्यति=नमस्करोति यथा–

। प्राकृते धन्यनामानगाराष्टकम् ।

(मालिनीवृत्तम्)

तवसि कयरई जो छट्ठगे सव्वकालं,
पडिणियतवया जं, पारणाऽऽयंबिलाओ ।
इय दढयरभावा, भावियप्पा पसंतो,
जयइ मुणिवरो सो, धन्ननामाणगारो ॥१॥
अजणि विउलसीसं, सुक्कतुंबीसमाणं,
विउलरुइरबाहू, सुक्कसप्पोवमाणा ।
जउयरमइनिण्णं, सुक्कचम्मोवमेयं,
जयइ मुणिवरो सो, धन्ननामाणगारो ॥२॥
रसणमवि य लुक्खं, सोतमेयरस सुक्कं,
वडदलमिव जायं, मंसरत्तेहि हीणं ।
नयणमवि य वीणा,–छिद्दवं तारगावं,
जयइ मुणिवरो सो, धन्ननामाणगारो ॥३॥
तवसि णिहियचित्तो, सुक्कलुक्खोवि जाओ,
सिढिलियसयलंगो, कंपमाणुत्तमंगो ।
तयवि वरतवस्सा,–तेयसा दिप्पमाणो,
जयइ मुणिवरो सो, धन्ननामाणगारो ॥४॥
चिरयरतिमिरं जं, कंदरंतोवगाढं,
सवइ लयसुवेज्जा, जोइणोवागएणं ।
भवभवदुरियं जं दंसणेणेव तं वा,
जयइ मुणिवरो सो धन्ननामाणगारो ॥५॥

क्योंकि आपने सम्यक् रूपसे चारित्र की आराधना करली है । हे देवानुप्रिय ! आपने जन्म और जीवित का फल प्राप्त कर लिया है । इतना कह कर राजा श्रेणिक स्तुति करता है :–

सुकृतलक्षणु छो, केमके आपे सम्यक्–रूपथी चारित्रनी आराधना करी लीधी छे. हे देवानुप्रिय ! खरेखर आपे जन्म अने जीवितनुं फळ प्राप्त करी लीधु छे. एटलुं कहीने राजा श्रेणिक स्तुति करे छे.–

नहि भवइ सुहं जं, कप्पवच्छस्स मूले,
न खलु सुरगवीए, णावि चिंतामणीणं ।
तदणूवमसुहं जं,–दंसणा एव लब्भं,
जयइ मुणिवरो सो, धन्ननामाणगारो ॥६॥
उजु–मिउ–हियओ जो, कम्मुणो णिज्जरो जो,
चरणकरणसत्तो, गुत्तिगुत्तोऽपमत्तो ।
समिइसमिअ उज्जं,–सत्तसत्तिप्पहावो,
जयइ मुणिवरो सो, धन्ननामाणगारो ॥७॥
पविदलियकुबोहो, पत्तसम्मंसुबोहो,
समगुणविमलासो, सिद्धिमग्गेगलासो ।
अणुवहयविहारो, सत्तसत्तेगसारो,
जयइ मुणिवरो सो, धन्ननामाणगारो ॥८॥
(अनुष्टुब्वृत्तम्)
सदोरमुहपोयस्स, सव्वजीवहिएसिणो ।
णमो धन्नाणगारस्स, तवसजमधारिणो ॥९॥
। संस्कृतच्छायायां धन्यनामानगाराष्टकम् ।
(मालिनीवृत्तम्)
तपसि कृतरतिर्यः, षष्ठके सर्वकालं,
प्रतिनियततया यत्, पारणाऽऽचाम्लतोऽपि ।
इति दृढतरभावाद्, भावितात्मा प्रशान्तो,
जयति मुनिवरोऽयं, धन्यनामाऽनगारः ॥१॥

:: धन्य अणगारका अष्टक ::
षष्ठक तपस्या में परायण शान्त–मानस सर्वदा
व्रत के अनन्तर अमिल से पारण–विधायक जो मुदा ॥
दृढ भाव से हैं उद्यमी शुभ भावना में अटल हो
अनगार मुनिवर धन्य नामा की सदा जय अचल हो ॥१॥

અથ ધન્યનામા અણગારનું અષ્ટક.
આદરી છઠ છઠ તપસ્યા, સર્વ કાલે વિહરતા,
કરી પારણે આંબેલ રસહીન, શાંત મૂર્તિ વિચરતા,
દૃઢ ભાવથી તપ ઉદ્યમી, શુભ ભાવનામાં મગ્ન હો,
જય હજો અણગાર એવા, ધન્ય મુનિવર તણો. ॥ ૧ ॥

अजनि त्रिपुलशीर्षं, शुष्कतुम्बीसमानं,
मृदुलरुचिरवाहू, शुष्कसर्पोपमानौ ।
यदुदरमतिनिम्नं, शुष्कदृत्योपमेयं,
जयति मुनिवरोऽयं, धन्यनामाऽनगारः ॥२॥
रसनमपि च रूक्षं, श्रोत्रमेतस्य शुष्कं,
वटदलमिव जात, मांसरक्तैर्विहीनम् ।
नयनमपि च वीणा,-रन्ध्रवत्तारकावत ,
जयति मुनिवरोऽयं, धन्यनामाऽनगारः ॥३॥
तपसि निहितचित्तः, शुष्करूक्षोऽपि जातः,
शिथिलितसकलाङ्गः, कम्पमानोत्तमाङ्गः ।
तदपि वरतपस्या,-तेजसा दीप्यमानो,
जयति मुनिवरोऽयं, धन्यनामानगारः ॥४॥

कपाल जिन का शुष्क तुम्बी के सरीखा हो गया
कोमल रुचिर भुज शुष्क सर्प समान है तपसे नया ॥
जिन का उदर अति निम्न सूखा चर्म सा, अति शिथिल हो
अनगार मुनिवर धन्य नामा की सदा जय अचल हो ॥२॥
सूखी हुई रसना तथा सूखा श्रवण अति छीन है
वट-वृक्ष के पत्ते सरीखा मांस - शोणित हीन है ॥
आंख वीणा छेद्-तारा तुल्य भासित विमल हो
अनगार मुनिवर धन्य-नामा की सदा जय अचल हो ॥३॥
तप में रखे हैं चित्त सूखा रूक्ष विग्रह भासता
सब अङ्ग ढीले हो गये शिरभी तथा है काँपता ॥
तो भी कठिन तप-तेज से हैं शोभते अति विमल हो
अनगार मुनिवर धन्य नामा की सदा जय अचल हो ॥४॥

શીર્ષ જેનુ શુષ્ક તુંબી-સમ થયુ તપને લીધે,
કોમળ સુશોભિત બાહુ સૂકા, સર્પ જેવા છે દીસે,
ખાડા પડ્યા છે ઉદર માંહે જ્યમ ભીસ્તી કેરી મશક હો,
જય હજો અણગાર એવા ધન્ય મુનિવર તણો ॥ ૨ ॥
રસના થઈ સૂકી અમીહીન, કાન પણ બહેરા થયા,
શુષ્ક વડના પાન જેવા માંસ શોણિત હીન થયા,
ઊંડાં ગયાં છે નયન જેના તારક વીણાના રંધ્ર હો,
જય હજો અણગાર એવા ધન્ય મુનિવર તણો. ॥ ૩ ॥

चिरतरतिमिरं यद्, गह्वरान्तः प्रगाढं,
सपदि लयमुपैति, ज्योतिषोपागतेन ।
भवभवदुरितं य,–द्दर्शनेनैव तद्वद्,
जयति मुनिवरोऽयं धन्यनामाऽनगारः ॥५॥

नहि भवति सुखं यत्, कल्पवृक्षस्य मूले,
न च खलु सुरधेनो,–र्नापि चिन्तामणीनाम् ।
तदलुपमसुखं य,–द्दर्शनादेव लभ्यं,
जयति मुनिवरोऽयं, धन्यनामानगारः ॥६॥

तप से समागत तेज से जिनका प्रकाशन जागता
कन्दरा में चिर–निवासी गाढ तम है भागता ॥
जिन के सुदर्शन से भवोभव पाप नशता अचल हो
अनगार मुनिवर धन्य–नामा की सदा जय अचल हो ॥ ५ ॥

कल्पतरु के मूल में जो सौख्य अति दुर्लभ कहा
सुरधेनु–चिन्तामणिन से मिलना कठिन सुख जो महा ॥
देखते ही है जिन्हें सुख असम मिलता अटल हो
अनगार मुनिवर धन्य–नामा की सदा जय अचल हो ॥ ६ ॥

તપમગ્ન જેવું ચિત્ત છે વપુ શુષ્ક ને અતિ રૂક્ષ છે,
શ્રી અંગ નિર્બળ થઈ જતા કંપી રહેલું શીર્ષ છે,
કઠિન તપ ને તેજથી છે શોભતા નિર્ગ્રંથ હો,
જય હજો અણગાર એવા ધન્ય મુનિવર તણો ॥ ૪ ॥

ચિર કાળથી વ્યાપી રહેલું તિમિર ગાઢ ગુફા તણું,
પ્રકાશના આગમનથી જીવ લઈને ભાગતું,
દર્શન જેના માત્રથી ભવભવ પાપ કેરો નાશ હો,
જય હજો અણગાર એવા ધન્ય મુનિવર તણો. ॥ ૫ ॥

કલ્પતરૂના મૂળમાં જે સૌખ્ય અતિ દુર્લભ કહ્યાં,
સુરધેનુ ચિંતા મણિ થકી મળવાં કઠીન સુખ અતિ રહ્યાં,
જેને નીરખતાં માત્રમાં મળે અસિમ સુખનો પુંજ હો,
જય હજો અણગાર એવા ધન્ય મુનિવર તણો ॥ ૬ ॥

ऋजुमृदुहृदयो यः, कर्मणां निर्जराकृत्,
चरणकरणसक्तो गुप्तिगुप्तोऽप्रमत्तः ।
समितिसमित उग्र,-स्त्वात्मशक्तिप्रभावो,-
जयति मुनिवरोऽयं, धन्यनामानगारः ॥७॥

प्रविदलितकुबोधः, प्राप्तसम्यक्सुबोधः,
शमगुणविमलास्यः, सिद्धिमार्गैकलास्यः ।
अनुपहतविहारः, स्वात्मवीर्यैकसारो,
जयति मुनिवरोऽयं, धन्यनामाऽनगारः ॥८॥

(अनुष्टुब्वृत्तम्)

सदोरमुखपोताय, सर्वजीवहितैषिणे ।
नमो धन्यानगाराय, तपःसंयमधारिणे ॥९॥

। इति धन्यनामानगाराष्टकं सम्पूर्णम् ॥

निश्छल मृदुल हिय जो अशेषन कर्म को हैं जारते,
जो चरण-करणा-सक्त और सुगुप्ति को हैं धारते ॥
समितिधारी हैं तथा उग्रप्रतापी सबल हो,
अनगार मुनिवर धन्य नामा की सदा जय अचल हो ॥ ७ ॥

प्रविनष्ट है जिन का कुबोध सुबोध दिनमणि भासता
शम से प्रसन्न मुखारविन्द विमुक्ति मार्ग प्रकाशता ॥
अरु उग्र विहरण राजते जिन धर्मसर के कमल हो
अनगार मुनिवर धन्य नामा की सदा जय अचल हो ॥ ८ ॥

નિષ્કપટ કોમળ હૃદય થકી, સકળ કર્મ વિદારતા,
જે ચરણ કરણ સકત ને વળી સુગુપ્તિને પણ ધારતા,
જે સમિતિ ધારી છે સદા, ઉજ્જવળ પ્રતાપી સબળ હો,
જય હજો અણગાર એવા ધન્ય મુનિવર તણો ॥ ૭ ॥

દુર્બોધ જેણે નષ્ટકરી સુબોધ સમ્યક્ ધારતા,
સમભાવી શાંત પ્રસન્નમુખ, વળી સિદ્ધમાર્ગ પ્રકાશતા,
વિહાર કરતા ઉગ્ર જેઓ સ્વાત્મ વિર્ય એક સારનો,
જય હજો અણગાર એવા ધન્ય મુનિવર તણો ॥ ૮ ॥

एवं स्तुत्वा नमस्कृत्य श्रेणिको राजा भगवत्समीपमुपागतः। प्रसन्नचेतसा भगवन्तं प्रणम्य निजगाद–देवानुप्रियेण भवता यथा कथितं तथैव धन्यनामानगारो मया दृष्टः। इत्येवं धन्यनामानगारं स्तुवन् भगवन्तं श्रीमहावीरं त्रिकृत्वोऽभिवन्द्य नत्वा च तामेव दिशं प्रतिगतो यस्या दिशः समागतः ॥सू०३९॥

तपःसमाराधनानन्तरं धन्यनामानगारेण किं कृतम्? इत्याह–'तए णं तस्स' इत्यादि।

मूलम्–तए णं तस्स धण्णस्स अणगारस्स अण्णया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अ-

---

दोरे–सहित मुखवस्त्रिका जो जीव रक्षा के लिए
धरते तथा संयम–तपस्या–धीरता धारण किये ॥
अनगार–धन्य–पदाम्बुजों में वन्दना सन्तत लसे
उनकी ललाम–पवित्र लीला हृदय में मेरे बसे ॥ ९ ॥

॥ इति धन्य–नामा अनगार का अष्टक सम्पूर्ण ॥

इस प्रकार स्तुति तथा वन्दन–नमस्कार कर राजा श्रेणिक भगवान् के समीप आया। प्रसन्न मन हो वह भगवन् को नमस्कार कर बोला, हे भगवन्! जैसा आपने कहा था उसी रूपमें मैंने धन्य-नामक अनगार को देखा है। इस प्रकार धन्यकुमार अनगार की भूरि भूरि प्रशंसा करता हुआ भगवन् को तीनबार प्रदक्षिणा पूर्वक वन्दन–नमस्कार कर जहाँ से आया वहाँ गया ॥ सू० ३९ ॥

ધરી જીવ રક્ષા કારણે મુખવસ્ત્રિકા દોરા છતી,
સંયમ તપસ્યા સાથ જેણે ધીરતા ધારી હતી,
એ ધન્ય મુનિના પદકમળમાં શીર્ષ મારૂં નતકરી,
માર્ગ યાચુ પ્રકાશનો, જિન ભાષિત હૈયે ધરી. ॥ ૯ ॥

॥ ઇતિ ધન્યનામા અણગારનો અષ્ટક સમ્પૂર્ણ ॥

એ પ્રમાણે સ્તુતિ તથા વન્દન નમસ્કાર કરી રાજા શ્રેણિક ભગવાનની પાસે આવ્યા પ્રસન્ન–મુખ થઇ તે ભગવાનને નમસ્કાર કરી બોલ્યા–હે ભગવન્! જે પ્રકારે આપે કહ્યું હતું, તે પ્રકારેજ મેં ધન્યનામના અણગારને જોયા છે એ રીતે ધન્યકુમાર અણગારની ઘણી ઘણી પ્રશંસા કરતા થકા ભગવાનને ત્રણવાર પ્રદક્ષિણા પૂર્વક વન્દન નમસ્કાર કરી જ્યાંથી આવ્યા હતા ત્યાં પાછા ગયા (સૂ૦ ૩૯)

ज्झत्थिए, चिंतिए, कप्पिए, पत्थिए, मणोगए संकप्पे समुप्पज्जेत्था । एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं जहा खंदओ तहेव चिंता आपुच्छणं थेरेहिं सद्धिं विउलं दूरुहइ, मासिया संलेहणा, नवमासपरियाओ, जाव कालमासे कालं किच्चा उड्ढं दूरं वीईवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवत्ताए उववण्णे, थेरा तहेव ओयरंति, जाव इमे से आयारभंडए ॥ सू० ४० ॥

छाया-ततस्तस्य धन्यस्यानगारस्यान्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकाले धर्मजागरिका जाग्रतः अयमेतद्रूपक आध्यात्मिकः, चिन्तितः, कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत-एवं खलु अहं अनेन उदारेण यथा स्कन्दकस्तथैव चिन्ता आप्रच्छनं, स्थविरैः सार्द्धं विपुलं दूरोहति। मासिकी संलेखना, नवमासपर्यायः, यावत्कालमासे कालं कृत्वा ऊर्ध्वचन्द्रमः-यावत्-नवग्रैवेयकविमानप्रस्तटे ऊर्ध्वं दूरं व्यतिव्रज्य सर्वार्थसिद्धे विमाने देवत्वेन उपपन्नः। स्थविरास्तथैवावतरन्ति यावत्-इमानि तस्याचारभाण्डकानि ॥ सू० ४० ॥

टीका-'तए णं तस्स' इत्यादि। तदनन्तरं तस्य धन्यनाम्नोऽनगारस्य अन्यदा=अन्यस्मिन् समये कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकाले=रात्रेरपरभागे धर्मजागरिकां जाग्रतः=धर्मजागरणं कुर्वतः अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणप्रकार आध्यात्मिकः=आत्मविषयो विचारो वृक्षस्याङ्कुर इव संजातः १, तदनु चिन्तितः=पुनःपुनः

तप की आराधना करनेके बाद धन्य अनगारने क्या किया वह बतलाते हैं- 'तए णं तस्स' इत्यादि-

उसके बाद एक समय रात्रि के अपर भाग (चौथे प्रहर) में धर्म जागरणा करते हुए उन धन्यकुमार अनगार के हृदय में इस प्रकार वृक्षाङ्कुर के समान 'अध्यात्मिक' अर्थात् आत्मविषयक विचार अङ्कुरित हुआ। फिर 'चिन्तित' अर्थात् बारम्बार स्मरणरूप वह

તપની આરાધના કર્યા પછી અણગારે શું કર્યું ?, તે બતાવે છે— 'तए णं तस्स' ઇત્યાદિ.

તે પછી એક સમયે રાત્રિના અપર-ભાગ (ચોથા પહોર) માં ધર્મ જાગરણ કરતા થકા તે ધન્યકુમાર અણગારના હૃદયમાં આ પ્રકારે વૃક્ષાંકુર સમાન 'આધ્યાત્મિક' અર્થાત્ આત્મવિષયક વિચાર અંકુરિત થયા ફરી 'ચિન્તિત' અર્થાત્ વારવાર સ્મરણ

स्मरणरूपो विचारः, द्विपत्रित इव २, ततः कल्पितः=स एव व्यवस्थायुक्तः, 'इदमेवं करिष्यामी'-ति कार्याकारेण परिणतो विचारः पल्लवित इव ३, प्रार्थितः= स एव इष्टरूपेण स्वीकृतः पुष्पित इव ४, मनोगतः संकल्पः=मनसि दृढरूपेण निश्चयः 'इत्थमेव मया कर्त्तव्यम्' इति विचारः फलित इव ५, यथा-स्कन्दकः स्कन्दकवत् समुदपद्यत ।

'यथास्कन्दकः' इत्यनेनेदमत्रगम्यते-अहं अनेन उदारेण उग्रेण, विपुलेन=महता तपःकर्मणा शुष्को रूक्षो निर्मांसः अस्थिचर्मावनद्धः किटिकिटिभूतः कृशो धमनीसन्ततः संजातः, आत्मशक्त्यैव गच्छामि, तिष्ठामि, न तु शरीरबलेन,

विचार द्विपत्रित के समान हो गया, । उसके बाद 'कल्पित' अर्थात् 'इसे इस प्रकार करूंगा' ऐसा व्यवस्था-युक्त कार्य के आकारसे परिणत वही विचार पल्लवित के समान हो गया । अनन्तर 'प्रार्थित' अर्थात् इष्ट रूपसे स्वीकार किया हुआ वह विचार 'पुष्पित' के समान हो गया । फिर 'मनोगत संकल्प' अर्थात् 'मुझे ऐसा ही करना चाहिये' यह दृढ निश्चय रूप विचार 'फलित वृक्ष' के समान हो गया ।

धन्यनामा अनगारने उस समुत्पन्न विचार का चिन्तन किया, निश्चय किया और उसे स्वीकृत किया तथा उसको निश्चय पूर्वक करने का संकल्प किया । स्कन्दक ऋषि के तुल्य धन्यकुमार अनगार विचार करते है :-मैं इस उग्र तपसे शुष्क रूक्ष एवं रक्त मांस रहित हो गया हूं, केवल हड्डियों नसों से तथा चर्मसे बंधा हुआ शरीर रह गया है । चलने पर किट-किट शब्द होता है । मै सर्वथा निर्बल एवं कृश हो गया हूं, आत्मशक्ति से ही गमनागमन करता

રૂપ તે વિચાર દ્વિપત્રિત સમાન થઇ ગયા તે પછી 'કલ્પિત' અર્થાત્ 'એને એજ પ્રકારે કરીશ' આવા વ્યવસ્થા-યુક્ત કાર્યના આકાર થી પરિણત તેજ વિચાર પલ્લવિત સમાન થઇ ગયા તે પછી 'પ્રાર્થિત' અર્થાત્ ઇષ્ટ રૂપથી સ્વીકાર કરેલ તે વિચાર પુષ્પિત સમાન થઇ ગયા, પછી 'મનોગત સંકલ્પ' અર્થાત્ 'મ્હને એમજ કરવું જોઇયે' આ દૃઢ-નિશ્ચય-રૂપ વિચાર ફલિત વૃક્ષ સમાન થઈ ગયા.

ધન્નાઅણગારે તે ઉપજેલ વિચારનુ ચિન્તવન કર્યું, નિશ્ચય કર્યો, સ્વીકાર કર્યો, તથા તેને નિશ્ચય-પૂર્વક કરવાનો સંકલ્પ કર્યો, સ્કન્દક-ઋષિની માફક ધન્યકુમાર અણગાર વિચાર કરે છે:- હુ આ ઉગ્રતપથી શુષ્કરૂક્ષ તેમજ રક્તમાંસ-રહિત થઇ ગયો છું, કેવળ હાડકાં, નસોથી તથા ચર્મથી બાંધેલ શરીર રહી ગયુ છે, ચાલતાં કડકડ અવાજ થાય છે હું સર્વથા નિર્બલ તેમજ કૃશ થઇ ગયો છુ, આત્મશકિત-

भाषणावसरे ग्लानो भवामि, काष्ठशकटिकेव, पत्रशकटिकेव, एरण्डकाष्ठशकटिकेव सशब्दं गच्छामि, तिष्ठामि, तस्माद् यावद् उत्थानादिपुरुषाकारपराक्रमो मम विद्यते, यावच्च मम धर्माचार्यो भगवान् महावीरो विहरति तावत् ममेदमेव श्रेयः स्यात्–यत् प्रभाते सूर्योदये सति भगवन्तं प्रणम्य तदनुज्ञयाऽऽत्मकल्याणार्थं नवीनमहाव्रतारोपणं कृत्वा, आलोचनानिन्दनापूर्वकं सर्वजीवेभ्यः क्षमापणां विधाय तथारूपैः स्थविरैः सह विपुलगिरिं समारुह्य तत्र पृथिवीशिलापट्टकं प्रतिलेख्य तस्मिन् दर्भसंस्तारकं संस्तीर्य तत्रोपगतस्य मम संलेखनाजोषणाजुषितस्य भक्तपानप्रत्याख्यातस्य पादपोपगतस्य कालमनवकाङ्क्षतो विहर्तुं कल्पते। व्याख्या सुगमा।

हूँ, किन्तु शरीर बल से नहीं, बोलने के समय अत्यन्त कष्ट पाता हूँ। काठ से भरी हुई गाडी के समान, सूखे हुए पत्तो से भरी हुई गाडी के समान, एरण्ड के सूखे काष्ठ से भरी हुई गाडी के समान चलने–फिरने पर सारा शरीर किट–किट आवाज करता है, अतः जब तक मेरे में स्वतः उठना बैठना आदि पुरुषाकार परक्रम है तथा जब तक मेरे धर्माचार्य श्रमण भगवान महावीर विचर रहें है तब तक मेरे लिए यही श्रेय है कि मै प्रातःकाल सूर्योदय होनेपर भगवान् को वन्दन नमस्कार कर उनकी आज्ञा से आत्म–कल्याण के लिये पुनः महाव्रतो को धारणकर, आलोचना निन्दना–पूर्वक समस्त जीवराशि से क्षमा याचना करके तथारूप–बहुश्रुत–स्थविरो के साथ विपुलाचल पर्वत पर जाऊँ। वहँ पृथ्वीशिलापट्ट की प्रतिलेखना कर के तथा दर्भसंस्तारक पर बैठकर संलेखना द्वारा समस्त प्रका-

थीज गमनागमन કરૂ છુ, પણ શરીર–બળથી નહી, બોલતી વખતે અત્યન્ત ખેદિત થાઉ છુ, લાકડાથી ભરેલી ગાડી સમાન, સુકેલ પાદડાની ભરેલી ગાડી સમાન, એરંડાના સુકા લાકડાથી ભરેલ ગાડી સમાન ચાલતા–ફરતાં આખું શરીર કડકડ અવાજ કરે છે, એટલે જ્યાંસુધી મ્હારામા સ્વયં ઉઠવું–બેસવુ આદિ પુરૂષાકાર–પરાક્રમ છે તથા જ્યાંસુધી મારા ધર્માચાર્ય શ્રમણ ભગવાન મહાવીર વિચરી રહ્યા છે ત્યા સુધી મારાં માટે એજ શ્રેય છે કે હુ પ્રાતઃકાળ સૂર્યોદય થતાં ભગવાનને વન્દન નમસ્કાર કરી તેમની આજ્ઞાથી આત્મ–કલ્યાણ માટે ફરીથી મહાવ્રતોને ધારણ કરી આલોચના–નિન્દના–પૂર્વક સમસ્ત જીવરાશિથી ક્ષમા યાચના કરી તથારૂપ–બહુશ્રુત–સ્થવિરોની સાથે વિપુલાચલ પર્વત ઉપર જાઉ ત્યા પૃથ્વીશિલાપટ્ટનુ પ્રતિલેખન કરી તથા દર્ભ-

एवं चिन्तयित्वा प्रभातसमये श्रीभगवतः समीपमागत्य तं वन्दित्वा नमस्कृत्य पृष्टवान् । श्रीभगवदाज्ञया धन्यनामानगारः स्थविरैः सार्द्धं विपुलगिरिं समारुह्य यथा चिन्तितं तथैव पादपोपगमसंस्तारकं दधार । एवमेकमासिकी संलेखना । नवमासान् संयमपर्यायं पालयामास । कालमासे=मृत्युसमये कालं कृत्वा चन्द्रलोकादूर्ध्वं यावद् नवग्रैवेयकविमानप्रस्तटादुपरि दूरं व्यतिव्रज्य=समुल्लङ्घ्य सर्वार्थसिद्धे विमाने देवत्वेन=देवरूपेण उपपन्नः=उपपाताख्यं जन्म लब्धवान् ।

ततः स्थविराः परिनिर्वाणप्रत्ययिकं=परलोकगमनसम्बन्धिनं कायोत्सर्गं कृत्वा धन्यनाम्नोऽनगारस्य वस्त्रपात्रादीन्युपकरणानि,समादाय विपुलगिरितोऽधोऽ-

रके आहारों का त्यागकर जीवन–मरण की अभिलाषा नहीं करता हुआ पादपोपगमन संथारा करके रहूं ।

इस प्रकार विचार कर प्रातःकाल वे श्रमण भगवान् महावीर की सेवा में उपस्थित हुए। उन को वन्दन–नमस्कार कर उन के समक्ष अपनी हार्दिक अभिलाषा व्यक्त की। भगवान की आज्ञा प्राप्तकर वे धन्ना अनगार स्थविरों के साथ विपुलाचल पर्वत पर गये तथा पूर्व किये हुए विचार के अनुसार उन्होंने पादपोपगमन संथारा धारण किया, वह संथारा एक मास का हुआ ।

इस प्रकार नव मास पर्यन्त संयम पालन कर समाधि–मरण से मरकर चन्द्रलोक के ऊपर बारह देवलोक तथा नव ग्रैवेयक विमानो को उल्लंघन कर सर्वार्थसिद्ध विमान में देवता रूप से उत्पन्न हुए।

संथारक उपर बेसी संलेखना वडे सर्वे आहारोनो त्याग करी जीवनमरणुनी अभिलाषा न करतां पादपोपगमन संथारो करीने रहुं

એ રીતે વિચારી સવારે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની સેવામાં ઉપસ્થિત થયા, તેઓને વન્દન–નમસ્કાર કરી તેમની સામે પોતાની હાર્દિક–અભિલાષા પ્રગટ કરી, ભગવાનની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરી તે સ્થવિરોની સાથે વિપુલાચલ પર્વત ઉપર ગયા, તથા પહેલાં ચિન્તવેલ વિચાર અનુસારે તેમણે પાદપોપગમન સંથારો ધારણ કર્યો, તે સંથારો એક માસનો થયો.

એ રીતે નવમાસપર્યન્ત સંયમ પાલન કરી સમાધિ–મરણે મરી ચંદ્રલોક ઉપર બાર દેવલોક તથા નવગ્રૈવેયક વિમાનોને ઓળંગી સર્વાર્થસિદ્ધ નામના વિમાનમાં દેવતારૂપે ઉત્પન્ન થયા.

वतीर्य भगवत्समीपमागण्य भगवन्तं प्रोचुः-हे भगवन् ! तस्य धन्यनाम्नोऽनगारस्य इमानि आचारभाण्डकानि=वस्त्रपात्रादीन्युपकरणानि सन्तीति ॥ सू० ४० ॥

अथ गौतमस्वामी पृच्छति-'भंतेत्ति' इत्यादि ।

मूलम्-भंतेत्ति भगवं गोयमे तहेव पुच्छति जहा खंदयस्स । भगवं वागरेइ जाव सव्वट्ठसिद्धविमाणे उववण्णे। धण्णस्स णं भंते! देवस्स केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। सेणं भंते! ताओ देवलोगाओ कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति? गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति १, बुज्झिहिति २, मुच्चिहिति ३, परिणिव्वाहिति ४, सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ५।

एवं खलु जम्बू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सू० ४१ ॥

॥ तइयवग्गस्स पढमं अज्झयणं समत्तं ॥३॥ १॥

छाया-भदन्त ! इति भगवान् गौतमस्तथैव पृच्छति यथा स्कन्दकस्य भगवान् व्याकरोति-यावत् सर्वार्थसिद्धविमाने उपपन्नः धन्यस्य खलु भदन्त ! देवस्य कियत्कं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता । स भदन्त ! तस्माद्देवलोकात् कुत्र गमिष्यति ? कुत्रोत्पत्स्यते ?। हे गौतम ! महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति २, मोक्ष्यति ३, परिनिर्वास्यति ४, सर्व-

---

धन्यकुमार अनगार को दिवंगत हुआ जानकर सहवर्ती स्थविरों ने परलोकगमन हेतुक कायोत्सर्ग किया । पश्चात् उनके वस्त्र-पात्र आदि उपकरण लेकर विपुलाचल पर्वत से नीचे उतरे और भगवान् के निकट आकर इस प्रकार बोले-हे भगवन् ! धन्यनामा अनगार के ये वस्त्र-पात्र-आदि उपकरण हैं ॥ सू० ४० ॥

ધન્યકુમાર અણગારને દિવંગત થયા જાણી સાથે રહેનાર સ્થવિરોએ પરલોક-ગમન-હેતુક કાયોત્સર્ગ કર્યો પછી તેમના વસ્ત્ર-પાત્ર આદિ ઉપકરણ લઈ વિપુલાચલ પર્વત પરથી નીચે ઉતર્યા, અને ભગવાન પાસે આવી એ પ્રમાણે બોલ્યા, હે ભગવન્ ! ધન્યનામા અણગારના આ વસ્ત્ર પાત્ર આદિ ઉપકરણ છે (સૂ० ૪૦)

दुःखानामन्तं करिष्यति ५। एवं खलु जम्बूः! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन प्रथमस्याध्ययनस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः ॥सू० ४१॥

तृतीयवर्गस्य प्रथममध्ययनं समाप्तम् ॥१॥

टीका–'भंतेत्ति' इत्यादि। तदा भगवान् गौतमः श्रीमहावीरं भगवन्तं पृष्टवान्–हे भगवन्! प्रकृतिभद्रो धन्यनामानगारः समाधिना कालं कृत्वा क्व गतः?। श्री भगवान् प्राह–हे गौतम! प्रकृतिभद्रो धन्यनामानगारः समाधियुक्तः सन् कालं कृत्वा सर्वार्थसिद्धे विमाने देवत्वेन संजातः, देवोऽभूदित्यर्थः। गौतमः पुनरपि पृष्टवान्–हे भगवन्! धन्यदेवस्य स्थितिस्तत्र कियन्तं कालं भविष्यति?। भगवान् प्रोवाच–त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा स्थितिरस्ति तस्य। गौतमः पुनराह–तस्माद्देवलोकाच्च्युतोऽसौ क्व गमिष्यति?, क्व चोत्पत्स्यते?। श्रीभगवानवादीत्–स धन्यदेवो महाविदेहक्षेत्रे जन्म गृहीत्वा सिद्धो बुद्धो मुक्तः सन् निर्वाणपदं प्राप्य सर्वदुःखरहितो भविष्यति।

हे जम्बूः! भगवता श्रीमहावीरेण एवम्=उक्तरीत्या तृतीयवर्गे प्रथमस्याध्ययनस्य अयं=पूर्वोक्तः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः=कथितः ॥४१॥

इति अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गे अर्थबोधिन्यां टीकायां तृतीयवर्गस्य प्रथममध्ययनं समाप्तम् ॥३॥ १॥

अब गौतम स्वामी भगवान् से पूछते हैं 'भंतेत्ति' इत्यादि।

हे भगवन्। भद्रप्रकृतिवाले धन्यनामा अनगार समाधि–पूर्वक काल करके कहाँ उत्पन्न हुए?

भगवान्ने फरमाया–हे गौतम! सरल–स्वभावी तथा सरल हृदय धन्यनामा अनगार समाधिपूर्वक काल करके सर्वार्थसिद्ध विमान में उत्पन्न हुआ है।

फिर गौतम स्वामीने पूछा–हे भगवन् सर्वार्थसिद्ध में धन्यनामा देवकी कितनी स्थिति होगी?।

હવે ગૌતમ સ્વામી ભગવાનને પૂછે છે–'भंतेत्ति' ઇત્યાદિ

હે ભગવન્! ભદ્ર પ્રકૃતિવાળા ધન્યનામા અણગાર સમાધિ–પૂર્વક કાળ કરીને ક્યાં ઉત્પન્ન થયા?

ભગવાને ફરમાવ્યું–હે ગૌતમ! સરલ–સ્વભાવી તથા સરળ–હૃદયી ધન્યનામા અણગાર સમાધિપૂર્વક કાળ કરીને સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાં ઉત્પન્ન થયા છે

ફરી ગૌતમસ્વામીએ પૂછ્યું–હે ભગવન્! સર્વાર્થસિદ્ધમાં ધન્યનામના દેવની કેટલી સ્થિતિ થશે?

जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामिनं पृच्छति-'जइ णं भंते !' इत्यादि ।

मूलम्-जइ णं भंते ! उक्खेवओ । एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं काकंदीए णयरीए भद्दा णामं सत्थवाही परिवसइ अड्ढा । तीसे णं भद्दाए सत्थवाहीए पुत्ते सुनक्खत्ते नामं दारए होत्था, अहीण० जाव सुरूवे पंचधाई-

भगवान्‌ने फरमाया-हे गौतम ! धन्यकुमार देव की वहाँ तैतीस (३३) सागरोपम की स्थिति है ।

गौतम स्वामी बोले-हे भगवन् ! धन्य-नामा देव वहाँ से चव कर कहाँ जायगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?

भगवान्‌ने फरमाया-हे गौतम ! वह धन्य-नामा देव महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर अपने समस्त कर्मों का क्षय कर के सिद्ध बुद्ध मुक्त होगा तथा परमपद निर्वाणको प्राप्त कर सर्व दुःखो का अन्त करेगा।

अध्ययन का उपसंहार करते हुए श्री सुधर्मा स्वामी जम्बू स्वामी से कहते हैं— हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीरने तृतीय वर्ग के प्रथम अध्ययनका यह अर्थ कहा है ॥ सू० ४१ ॥

श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गसूत्रकी अर्थबोधिनीनामक टीका के हिन्दी अनुवाद का तृतीय वर्ग का प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

ભગવાને ફરમાવ્યું –હે ગૌતમ ! ધન્યકુમાર દેવની ત્યા તેત્રીસ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

ગૌતમ સ્વામી બોલ્યા–હે ભગવન્ ! ધન્યનામા દેવ ત્યાથી ચવી ક્યાં જશે ? ક્યાં ઉત્પન્ન થશે ?

ભગવાને ફરમાવ્યુ–હે ગૌતમ ! તે ધન્યનામા દેવ મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ લઇ પોતાના સમસ્ત કર્મોનો ક્ષય કરી સિદ્ધ બુદ્ધ અને મુક્ત થશે, તથા પરમપદ નિર્વાણને પ્રાપ્ત કરી સર્વ દુ:ખોનો અન્ત કરશે

અધ્યયનનો ઉપસંહાર કરતા થકા શ્રી સુધર્માસ્વામી જંબૂ સ્વામીને કહે છે–હે જંબૂ ! શ્રમણભગવાન મહાવીરે ત્રીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ અર્થ કહ્યા છે (સૂ૦ ૪૧)

અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ-સૂત્રની 'અર્થબોધિની' નામક ટીકાના ગુજરાતી અનુવાદના ત્રીજા વર્ગનું પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત.

परिक्खित्ते जहा धण्णे तहेव बत्तीसओ दाओ जाव उप्पिं पासाय वडिंसए विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं समोसरणं जहा धण्णे तहा सुनक्खत्ते वि निगए, जहा थावच्चापुत्तस्स तहा निक्खमणं जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव बंभयारी।

तए णं से सुनक्खत्ते अणगारे जं चेव दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वइए तं चेव दिवसं अभिग्गहं तहेव जाव बिलमिव आहारेइ, संजमेणं जाव विहरइ, बहिया जणवयविहारं विहरइ, एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तए णं से सुणक्खत्ते अणगारे तेणं ओरालेणं जहा खंदओ। तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, सामी समोसड्ढे, परिसा निग्गया, राया निग्गओ, धम्मो कहिओ, राया पडिगओ, परिसा पडिगया। तए णं तस्स सुणक्खत्तस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स जहा खंदयस्स०। बहु-वासा परियाओ, गोतमपुच्छा, तहेव कहेइ जाव सव्वट्ठसिद्धे विमाणे देवे उववण्णे, तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। सेणं भंते!० महाविदेहे सिज्झिहिति ५।

एवं सुणक्खत्तगमेणं सेसावि अट्ठ भाणियव्वा, नवरं आणु-पुव्वीए दोण्णि रायगिहे, दोण्णि साएते, दोण्णि वाणियग्गामे, णवमो हत्थिणाउरे, दसमो रायगिहे। नवण्हं भद्दाओ जण-णीओ। नवण्हं वि बत्तीसओ दाओ। नवण्हं निक्खमणं

थावच्चापुत्तस्स सरिसं, वेहल्लस्स पिया करेइ । छम्मासा वेहल्लए । नव धण्णे । सेसाणं बहुवासा । मासियाए संलेहणाए सव्वट्ठ-सिद्धे विमाणे । सव्वे महाविदेहे सिज्झिस्संति ५ ।

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं, तित्थगरेणं, सयंसंबुद्धेणं, पुरिसुत्तमेणं, पुरिससीहेणं, पुरिसवर-पुंडरीएणं, पुरिसवरगंधहत्थिएणं, लोगुत्तमेणं, लोगनाहेणं, लोग-हिएणं, लोगपईवेणं, लोगपज्जोअगरेणं, अभयदयेणं, चक्खुदयेणं, मग्गदयेणं, सरणदयेणं, जीवदयेणं, बोहिदयेणं, धम्मदयेणं, धम्म-देसएणं, धम्मनायगेणं, धम्मसारहिएणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टि-एणं, दीवो-ताणं-सरणगइ-पइट्ठेणं, अप्पडिहयवरनाणदंसण-धरेणं, वियट्टछउमेणं, जिणेणं, जावएणं, तिण्णेणं, तारएणं, बुद्धेणं, बोहएणं, मुत्तेणं, मोयगेणं, सव्वन्नुणा, सव्वदरिसिणा, सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाह-मपुणरावित्तिसिद्धिगइनाम-धेयं ठाणं संपत्तेणं अणुत्तरोववाइयदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सू० ४२ ॥

॥ तइओ वग्गो समत्तो ॥

छाया-यदि खलु भदन्त उत्क्षेपकः । एवं खलु जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये काकन्द्यां नगर्यां भद्रा नाम सार्थवाही परिवसति, आढ्या० । तस्या भद्रायाः सार्थवाह्याः पुत्रः सुनक्षत्रो नाम दारकोऽभवत् । अहीन० यावत्सुरूपः पञ्चधात्रीपरिक्षिप्तो यथा धन्यस्तथा सुनक्षत्रोऽपि निर्गतः, यथा स्थाप-त्यापुत्रस्य तथा निष्क्रमणं, यावत् अनगारो जात ईर्यासमितो यावद् ब्रह्मचारी ।

ततः सुनक्षत्रोऽनगारो यस्मिन्नेव दिवसे श्रमणस्य भगवतो महावीर-स्यान्तिके मुण्डो यावत्प्रव्रजितस्तस्मिन्नेव दिवसे अभिग्रहं तथैव यावद् बिल-मिवाहारयति, संयमेन यावद् विहरति, बहिर्जनपदविहारं विहरति । एकादशाङ्गा-न्यधीते, संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति ।

ततः स सुनक्षत्रस्तेनोदारेण यथा स्कन्दकः। तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरं, गुणशिलकं चैत्यं, श्रेणिको राजा, स्वामी समवसृतः, परिषन्निर्गता, राजा निर्गतः, धर्मः कथितः, राजा प्रतिगतः, परिषत् प्रतिगता।

ततस्तस्य सुनक्षत्रस्यान्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकालसमये धर्मजागरिकां जाग्रतः, यथा स्कन्दकस्य बहुवर्षाणि पर्यायः, गौतमपृच्छा, तथैव-कथयति, यावत्सर्वार्थसिद्धे विमाने देव उपपन्नः। त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता। स भदन्त !० महाविदेहे सेत्स्यति।

एवं सुनक्षत्रगमेन शेषा अप्यष्टौ भणितव्याः, नवरं-विशेषः—आनुपूर्व्या द्वौ राजगृहे, द्वौ साकेते, द्वौ वाणिज्यग्रामे, नवमो हस्तिनागपुरे, दशमो राजगृहे। नवानां भद्रा जनन्यः। नवानामपि द्वात्रिंशत्कादायः। नवानां निष्क्रमणं स्थापत्यापुत्रस्य सदृशं, वेहल्यस्य पिता करोति। षण्मासा वेहल्यस्य नव धन्यस्य, शेषाणां बहूनि वर्षाणि (पर्यायः)। मासिक्या संलेखनया सर्वार्थसिद्धे विमाने। सर्वे महाविदेहे सेत्स्यन्ति।

एवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण, तीर्थंकरेण, स्वयं संबुद्धेन, पुरुषोत्तमेन, पुरुषसिंहेन, पुरुषवरपुण्डरीकेण, पुरुषवरगन्धहस्तिना, लोकोत्तमेन, लोकनाथेन, लोकहितेन, लोकप्रदीपेन, लोकप्रद्योतकरेण, अभयदयेन, चक्षुर्दयेन, मार्गदयेन, शरणदयेन, जीवदयेन, बोधिदयेन, धर्मदयेन, धर्मदेशकेन, धर्मनायकेन, धर्मसारथिना, धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्तिना, द्वीपत्राणशरणगतिप्रतिष्ठेन, अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधरेण, व्यावृत्तछद्मस्थेन, जिनेन जापकेन, तीर्णेन तारकेण, बुद्धेन बोधकेन, मुक्तेन मोचकेन, सर्वज्ञेन, सर्वदर्शिना, शिवमचलमरुजमनन्तमक्षयमव्याबाधमपुनरावृत्तिकं सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं संप्राप्तेन अनुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयस्य वर्गस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः ॥सू० ४२॥

॥ तृतीयो वर्गः समाप्तः ॥

टीका—'जइ णं भंते ! उक्खेवओ' इति। हे भगवन् ! अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य तृतीयवर्गे प्रथमाध्ययनस्य भगवताऽयमर्थः कथितः, तत्र द्वितीया-

---

श्री जम्बूस्वामी सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं—'जइ णं भंते' इत्यादि। हे भगवन् ! श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गसूत्र के तृतीय वर्ग के

શ્રીજંબૂસ્વામી સુધર્માસ્વામીને પૂછે છે :- 'जइ णं भंते !' ઇત્યાદિ
હે ભગવન્ ! શ્રી અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રના ત્રીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનના ભગવાને આ અર્થ કહ્યા છે તો હે ભગવન્ ! દ્વિતીય આદિ શેષ અધ્યયનોના શું અર્થ પ્રરૂપિત કર્યા છે ?

दीनामध्ययनानां कोऽर्थः प्रज्ञप्तः? । सुधर्मस्वामी जम्बूस्वामिनं प्रत्याह–हे जम्बूः! काकन्द्यां नगर्यां भद्रासार्थवाह्याः पुत्रः सुनक्षत्रो नाम आसीत् । तस्य सर्वं वर्णनं धन्यकुमारवद्विज्ञेयम् ।

एवं सुनक्षत्रवदन् शेषा अपि अष्ट कुमारा वक्तव्याः, नवरं=विशेषस्तु आनुपूर्व्या=अनुक्रमशः द्वौ ऋषिदास–पेल्लकौ राजगृहे नगरे जातौ । द्वौ रामपुत्र-चन्द्रिकौ साकेते=अयोध्यायां, द्वौ=पृष्टिमातृक–पेढालपुत्रौ वाणिज्यग्रामे, नवमः पोट्टिलो हस्तिनापुरे, दशमश्च वेहल्लो राजगृहे नगरे संजातः ।

नवानां धन्यकुमारादीनां जनन्यो भद्रानाम्न्य आसन, एकैकस्य जननी भद्रानाम्नी पृथक् पृथगासीदिति भावः । धन्यकुमारादीनां नवानां निष्क्रमणं

प्रथम अध्ययनका भगवान्ने यह अर्थ कहा है तो हे भगवन् ! द्वितीय आदि शेष अध्ययनों का क्या अर्थ प्ररूपित किया है ? ।

श्री सुधर्मास्वामी श्री जम्बूस्वामी को संबोधित कर इस प्रकार बोले–हे जम्बू ! काकन्दीनगरी में भद्रा सार्थवाही के सुनक्षत्र–नामक एक पुत्र था ! इसका सारा वर्णन धन्यकुमार के समान है । केवल धन्यकुमार की दीक्षा-पर्याय नव मास की थी तो सुनक्षत्र अनगार की बहुत वर्षों के दीक्षा पर्याय थी ।

इस प्रकार सुनक्षत्र के समान शेष आठों ही कुमारों का जीवनवृत समझना चाहिये । विशेषता यही है कि इन में क्रमशः दो–ऋषिदास और पेल्लक–राजगृह नगर में, दो–रामपुत्र और चन्द्रिक–अयोध्या में, दो–पृष्ठमातृक और पेढालपुत्र–वाणिज्य-ग्राम में, नववाँ पोट्टिल – हस्तिनापुर में तथा दशवाँ – वेहल्लकुमार राजगृह नगर से उत्पन्न हुआ । धन्यकुमार आदि नवों कुमारों की भद्रा–नामक मातायें

શ્રીસુધર્માસ્વામી શ્રીજમ્બૂસ્વામીને સંબોધી આ પ્રમાણે બોલ્યા– હે જમ્બૂ ! કાકન્દી નગરીમાં ભદ્રા સાર્થવાહીને સુનક્ષત્ર નામે એક પુત્ર હતો તેનું સઘળુ વર્ણન ધન્યકુમારની માફકજ છે, કેવળ ધન્યકુમારની દીક્ષાપર્યાય નવ માસની હતી તો સુનક્ષત્ર અણગારની દીક્ષાપર્યાય ઘણા વર્ષોની હતી.

એ રીતે સુનક્ષત્ર સમાન શેષ આઠેય કુમારોનુ જીવનવૃત્તાન્ત સમજવુ જોઇએ. વિશેષતા એજ છે કે એઓમા ક્રમશ. બે–ઋષિદાસ અને પેલ્લક રાજગૃહ નગરમા, બે–રામપુત્ર અને ચન્દ્રિક અયોધ્યામા બે–પૃષ્ટમાતૃક અને પેઢાલપુત્ર વાણિજ્યગ્રામમા ઉત્પન્ન થયા નવમા પોટ્ટિલ હસ્તિનાપુરમા, તથા દશમાં વેહલ્લ કુમાર રાજગૃહનગરમાં ઉત્પન્ન થયા ધન્યકુમાર આદિ નવેય કુમારોની ભદ્રાનામની માતાઓ હતી પ્રત્યેકની

स्थापत्यापुत्रसदृशं स्वस्वजननी कृतवती । दशमस्य वेहल्लस्य निष्क्रमणं पिता कृतवान् । वेहल्लस्य संयमपर्यायः षाण्मासिकः । धन्यनारनोऽनगारस्य नवमासिकः पर्यायः प्रागुक्तः । शेषाणां सुनक्षत्रादीनामष्टानामनगाराणां बहूनि वर्षाणि श्रमणपर्यायः । संलेखना सर्वेषां मासिकी । सर्वार्थसिद्धे विमाने सर्वे देवत्वेन समुत्पन्नाः । महाविदेहे क्षेत्रे सिद्धिगतिं प्राप्स्यन्ति ॥सू० ४२॥

मूलम्–अणुत्तरोववाइयदसाणं एगो सुयक्खंधो, तिन्नि वग्गा, तिसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति । तत्थ पढमे वग्गे दस उद्देसगा, बिइए वग्गे तेरस उद्देसगा, तइए वग्गे दस उद्देसगा; सेसं जहा णायाधम्मकहाणं तहा णेयव्वं ।

॥ इय अणुत्तरोववाइयदसाओ समत्ताओ ॥

॥ नवमं अंगं समत्तं ॥

छाया–अनुत्तरोपपातिकदशानामेकः श्रुतस्कन्धः, त्रयो वर्गाः, त्रिषु चैव दिवसेषु उद्दिश्यन्ते । तत्र प्रथमे वर्गे दश उद्देशकाः, द्वितीये वर्गे त्रयोदश उद्देशकाः,

---

थी । प्रत्येक की भद्रा नामक भिन्न २ माताएं थीं न कि एक ही । धन्यकुमार आदि नवों कुमारों का दीक्षामहोत्सव थावच्चापुत्र के समान अपनी २ माताओं ने किया था । दशवां वेहल्ल का दीक्षा महोत्सव उस के पिताने किया था । वेहल्ल की छः मास, धन्यकुमार की नव मास तथा शेष सुनक्षत्र आदि आठों ही अनगारों की बहुत वर्षों की दीक्षा पर्याय थी । सबोंने एक एक मास की संलेखना की । सब सर्वार्थसिद्ध विमान में देवतारूप से उत्पन्न हुए । तथा वे महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर समस्त कर्मों का क्षय कर मोक्ष प्राप्त करेंगे ॥सू०४२॥

ભદ્રાનામે ભિન્ન ભિન્ન માતાઓ હતી નહિ કે એકજ ધન્યકુમાર આદિ નવેય કુમારોનો દીક્ષામહોત્સવ થાવચ્ચાપુત્રની માફક પોતપોતાની માતાઓએ કર્યો હતો, દશમાં વેહલ્લનો દીક્ષામહોત્સવ તેના પિતાએ કર્યો હતો વેહલ્લની છ માસ ધન્યકુમારની નવ માસ તથા શેષ સુનક્ષત્ર આદિ આઠેય અણગારોની ઘણા વર્ષોની દીક્ષાપર્યાય હતી. સર્વે મુનિઓએ એકેક માસની સંલેખના કરી સર્વે સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાં દેવતારૂપે ઉત્પન્ન થયા તથા તેઓ અન્તમાં મહાવિદેહ ક્ષેત્રે જન્મ લઈ સમસ્ત કર્મોનો ક્ષય કરી મોક્ષ પ્રાપ્ત કરશે (સૂ૦ ૪૨)

तृतीये वर्गे दश उद्देशकाः । शेषं यथा ज्ञाताधर्मकथानां तथा ज्ञातव्यम् ॥

॥ अनुत्तरोपपातिकदशानां संस्कृतच्छाया समाप्ता ॥

॥ नवममङ्गं समाप्तम् ॥

तृतीयवर्गस्य वर्णनमुपसंहरन् श्रीसुधर्मा स्वामी कथयति-'एवं खलु' इत्यादि।

हे जम्बूः ! एवम्=उक्तरीत्या भगवता श्रीमहावीरेण यावत्सिद्धिगति-नामधेयं स्थानं संप्राप्तेन अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गस्य तृतीयवर्गस्यायम्=उक्तरूपः अर्थः=भावः प्रज्ञप्तः=कथितः ॥

॥ इति अनुत्तरोपपातिकदशानाम्नि, नवमाङ्गस्य अर्थबोधिन्यां टीकायां तृतीयो वर्गः समाप्तः ॥

॥ इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषाकलितललित-कलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मायक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्र-पतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैन शास्त्राचार्य '-पदभूषित-कोल्हापुरराज-गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायाम् अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग-सूत्रस्य अर्थबोधिन्याख्या व्याख्या समाप्ताः ॥ १ ॥

अब तृतीय वर्ग का उपसंहार करते हुए श्री सुधर्मास्वामी श्री जम्बूस्वामीको संबोधन कर कहते हैं:—'एवं खलु' इत्यादि०

हे जम्बू ! इस प्रकार पूर्वोक्त गुणों से युक्त श्रमण भगवान् महावीरने अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गसूत्र के तृतीय वर्गका यह अर्थ कहा हैं।

॥ श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग-नामक नवमाङ्ग की अर्थबोधिनीनामक टीका का तृतीय वर्ग समाप्त ॥

॥ इति श्री अनुत्तरोपपातिकदशाङ्ग सूत्रकी अर्थबोधिनी टीका का हिन्दी अनुवाद समाप्त ॥

હવે ત્રીજા વર્ગનો ઉપસંહાર કરતા શ્રી સુધર્માસ્વામી શ્રીજંબૂસ્વામીને સંબોધન કરી કહે છે- ' एवं खलु ' ઇત્યાદિ

હે જમ્બૂ! આ રીતે પૂર્વોક્ત ગુણોથી યુક્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રના ત્રીજા વર્ગનો આ અર્થ કહ્યા છે

શ્રી અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ નામક નવમાઅંગની "અર્થબોધિની" નામની ટીકાનો ત્રીજો વર્ગ સમાપ્ત.

ઇતિ અનુત્તરોપપાતિકદશાંગ સૂત્રની અર્થબોધિની ટીકાનો ગુજરાતી અનુવાદ સમાપ્ત.

॥ शास्त्रप्रशस्तिः ॥

(अनुष्टुब्वृत्तम्)

काठियावाडदेशे च, वर्द्धमानपुरी पुरा ।
वढवाणसिटीनाम्नी, या प्रसिद्धाऽस्ति संप्रति ॥१॥

तत्राहं मुनिभिः सार्द्धं, ग्रामाद्ग्रामान्तरं व्रजन् ।
टीकामकार्षमागत्य, सरलामर्थबोधिनीम् ॥२॥
ते चेमे

(वसन्ततिलकावृत्तम्)

मिथ्यात्वदर्शन-चरित्रविमोहनीय,-
विध्वंसनेन समवाप्य रुचिं स्वधर्मे ।
व्याख्यानतो मुदमुपैति च यस्य पर्षत्,
सोऽयं विभाति मुनिवीर-समीरमल्लः ॥३॥

शास्त्रार्थसंग्रहविधौ त्वरया युतेन,
साहाय्यमत्र मम तेन परं व्यधायि ।
तं वीरपुत्रपदशोभि-समीरमल्लं,
नित्यं स्मरामि ननु किं करवाणि तस्मै ॥४॥

(शिखरिणीवृत्तम्)

उदारो निर्मानो जिननिगमतत्त्वार्थनिपुणः,
क्रियादक्षोऽक्रान्तो गुरुजनमनोल्हादजनकः ।
सभायां चातुर्याद् बहुजनमनोरञ्जनपरः,
कनैयालालोऽयं सदयहृदयः संयमपरः ॥५॥

(मालिनीवृत्तम्)

धरणिरिव सहिष्णुः सिन्धुगाम्भीर्यजिष्णुः,
सुहुत इव कृशानुस्तेजसा दीप्यमानः ।
विमलमपि यदन्तः शारदाम्भःसमानं,
स मुनि-मदनलालः शोभते सत्तपस्वी ॥६॥

(भुजङ्गप्रयातवृत्तम्)

गुरोर्भक्तिभावेन युक्तः क्रियावान,
प्रसन्नः प्रवीणो विगर्वो गुणी च।
तपोभावयुक्तः सदा राजते यः,
तपस्वी मुनिर्मांगिलाल प्रशान्तः ॥७॥

(मन्दाक्रान्तावृत्तम्)

शान्तो दान्तः स्थविरपदवीशोभितः शुद्धभावो,
मोहोद्रेकप्रमथनपरो मोक्षसौख्याभिलापी ।
सम्यक्श्रद्धाविमलहृदयः पड्विधप्राणिपालो,
देवीलालः सुमुनिरिह यो राजते सच्चरित्रः ॥८॥

द्व्यधिकद्विसहस्राब्दे (२००२), विक्रमस्य गुरोर्दिने ।
ज्येष्ठकृष्णदले टीका, द्वादश्यां पूर्णतामगात् ॥९॥

टीकासमाप्तिसमये, साधवः सत्य उत्तमाः ।
सन्त्यत्र तेषां नामानि, कथ्यन्ते गुणवृद्धये ॥१०॥

तथाहि–

(अनुष्टुब्वृत्तम्)

लिम्बडीसम्प्रदायस्थो,–धनजीस्वामिनामकः ।
गुरुभ्रात्रा समायुक्तो, राजते चन्द्रवद् गणे ॥११॥

(शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्)

छोटालालमुनिर्वचोमधुरिमाऽऽनन्दप्रदः प्राणिनां,
चञ्चचन्द्रकलेव यस्य करुणा पट्कायतापापहृत् ।
पूर्णश्चन्द्र इव प्रतप्तजनताज्ञानामृताऽऽवर्पणः,
लोकानन्दगुणेन यः किल सदानन्दी प्रसिद्धोऽभवत् ॥१२॥

वैयावृत्तिगुणप्रमोदितमुनिर्जेता कपायस्य यः,
प्राणित्राणपरायणः करुणया यस्य द्रवत्यन्तरम् ।
लक्ष्मीचन्द्रमुनिः स शान्तहृदयो धीरस्तथैतावुभौ,
राजेते मृदुमानसौ मुनिवरौ यौ लिम्बडीगच्छके ॥१३॥

(अनुष्टुव्वृत्तम्)

जीवनजी स्वामिनामा, भगवानजी–मुनीश्वरः ।
दर्यापुरीसुगच्छेऽच्छे, भ्राजते रविचन्द्रवत् ॥१४॥

(तोटकवृत्तम्)

हरिदासमुनिर्जिनशासनतो, वचनामृततोषितभव्यजनः ।
वरबालमुगच्छगतो नियतो, जननीसहितो मुनिधर्मरतः ॥१५॥

। सतीनामानि ।

(शार्दुलविक्रीडीतवृत्तम्)

मोंघीबाइ–सती गुणद्वयवती शान्ता सहिष्णुः परा,
अचीबाइ–सती समाश्रितवती सम्यक् तपःसंयमम् ।
साध्वी श्रीअवकेतिनामविदिता विख्यातगम्भीरता,
साध्व्यः सूरजबाइ–आदिदशका दर्यापुरीगच्छकाः ॥१६॥

। वढवाणशहरश्रीसङ्घः ।

(शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्)

अत्रत्यस्त्रितयः कृपासमुदयः श्रीजैनसङ्घो मिथः,
प्रेमाबद्धविधेयपद्धतिमिलद्दीनार्त्तरक्षापरः ।
शुद्धस्थानकवासिधर्मनिरतो रत्नत्रयाभः शुभः,
श्रद्धावान् निगमे जिनप्रवचने श्रेयस्करे शोभते ॥१७॥

॥ इति शास्त्रप्रशस्तिः ॥

मङ्गलं भगवान् वीरो, मङ्गलं गौतमः प्रभुः ।
सुधर्मा मङ्गलं जम्बू,–र्जैनधर्मश्च मङ्गलम् ॥१॥

